अप्रैल 2008 ▪ Rs.15 /-

चन्दामामा

1947 60 2007

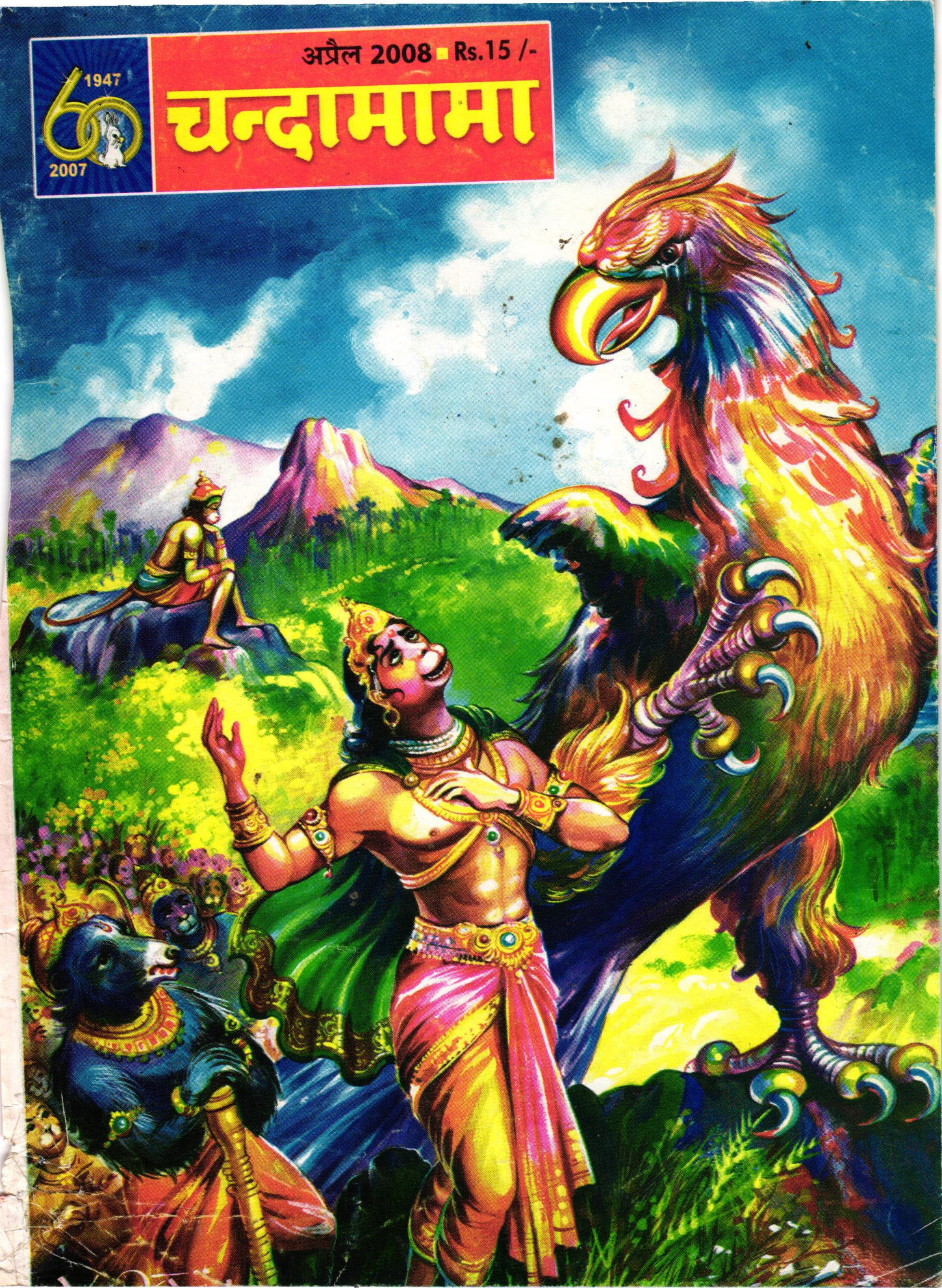

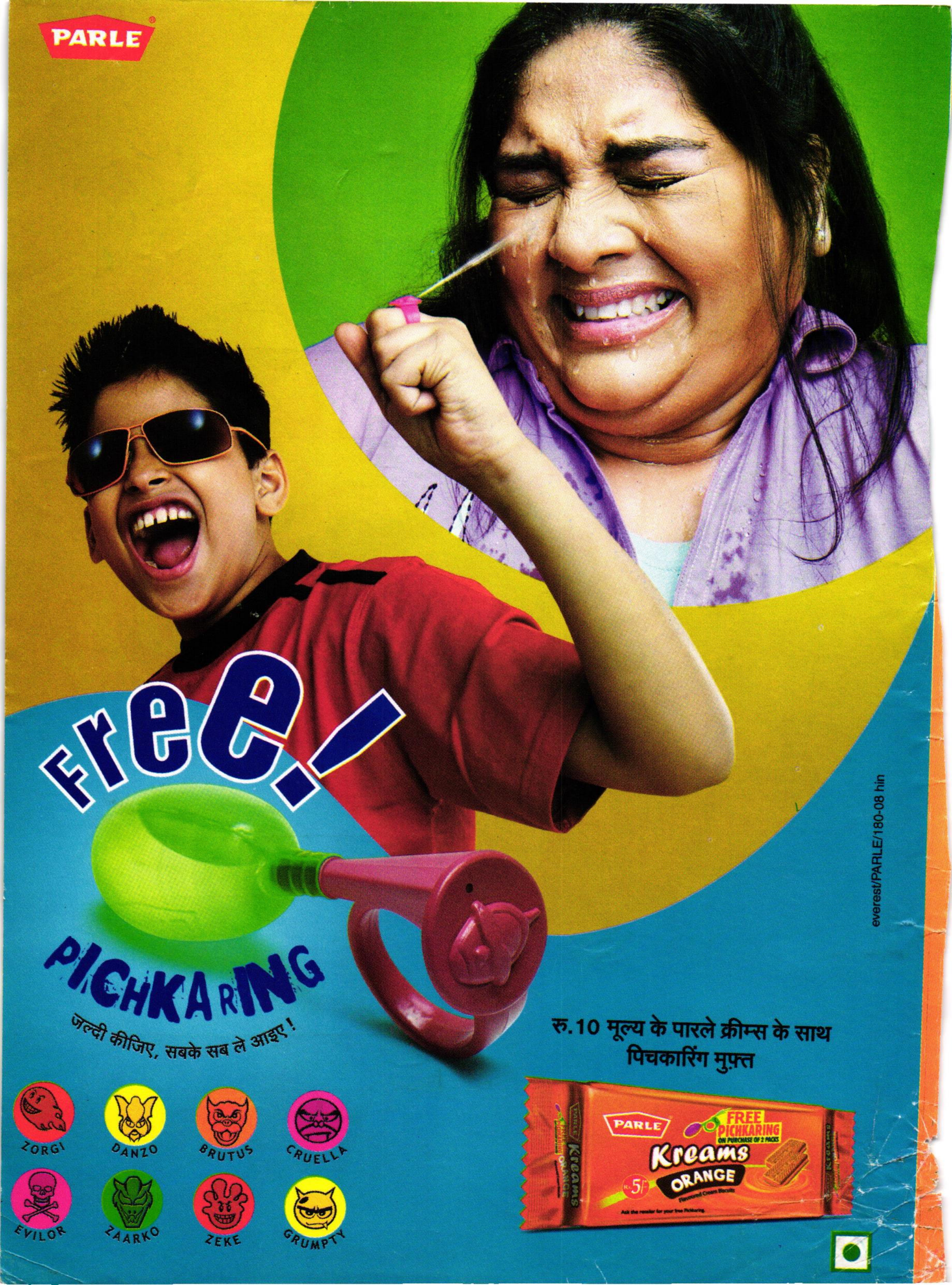

PARLE
Free!
PICHKARING
जल्दी कीजिए, सबके सब ले आइए !
ZORGI
DANZO
BRUTUS
CRUELLA
EVILOR
ZAARKO
ZEKE
GRUMPTY
रु.10 मूल्य के पारले क्रीम्स के साथ
पिचकारिंग मुफ़्त
PARLE
FREE PICHKARING
ON PURCHASE OF 2 PACKS
Kreams
ORANGE
everest/PARLE/180-08 hin

CHANDAMAMA CLASSICS and COMICS
Arya
Spend this summer with your favourite Companions
Follow the adventures of the unknown **Prince Arya** with his forest friends.
Read the **legend of Garuda**, the invincible warrior.
Solve mysteries in the jungle with super sleuths, **Eli and Puli**, of the Detective Duo intelligence agency.
Garuda
Eli & Puli
Eli-Puli
OPERATION BOBBY
ARYA
Garuda
THE INVINCIBLE
Get your copies NOW!
Available with vendors and leading bookstores.

चन्दामामा सम्पुट-५९ अप्रैल २००८ सञ्चिका-४

विशेष आकर्षण

[illegible]र्थ में निःस्वार्थ
([illegible]ल कथाएँ) ...१९

गुजरात की
एक लोक कथा ...३२

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक
घटनाएँ-७ ...३६

रामायण
(किष्किन्धा काण्ड-६) ...५७

अंतरंग

- ✻ पाठकों का पन्ना ...०६
- ✻ कहानियों को उच्च स्थान ...०७
- ✻ बेंत की स्वामीजी ...१२
- ✻ भयंकर घाटी-३२ ...१३
- ✻ कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी-१० ...२६
- ✻ महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-२८ ...३०
- ✻ बीरबल की कहानियाँ-७ ...४१
- ✻ चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-३ ...४५
- ✻ शान्ता का विशु ...४६
- ✻ ओलम्पिक आँकड़े ...५०
- ✻ जातक कथा ...५२
- ✻ धोखे की सज़ा ...६३
- ✻ अपराजेय गरुड़ - २७ ...६७
- ✻ समाचार झलक ...७२
- ✻ भारत के धरोहर-स्थल ...७३
- ✻ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...७४

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी
और चक्रपाणि

अमर वाणी

जो व्यक्ति कार्य साधना चाहता है, वह चाहे बिस्तर पर लेटे, तरकारी या बढ़िया चावल खाये, चीथड़े पहने या रेशमी वस्त्र, इन सुख-दुखों की परवाह नहीं करता।

शिक्षा के ढाँचे में परिवर्तन की आवश्यकता

प्रत्येक वर्ष मार्च, अप्रैल तथा मई महीनों में विद्यार्थी भारी दबाव में रहते हैं। यह वह समय होता है, जब वर्ष की अन्तिम परीक्षाओं में उनके प्रदर्शन के आधार पर उनके अध्ययन का मूल्यांकन किया जाता है। स्वाभाविक ही है कि विद्यार्थी यह कामना करते हैं कि उन्हें सफलता अवश्य मिले और सम्भव हो तो वे दूसरों से आगे निकल जायें।

केवल विद्यार्थी ही नहीं, उनके माता-पिता भी इस दौड़ में शामिल हो जाते हैं, और इस प्रक्रिया में उन्हें जिस दबाव और तनाव में रहना पड़ता है, उसकी परवाह वे नहीं करते। विद्यार्थी पर एक प्रकार का 'समकक्षीय दबाव' रहता है।

फलस्वरूप अपने आशानुकूल परिणाम नहीं मिलने पर कभी-कभी वे अन्त में बड़े उग्र कदम उठा लेते हैं। परीक्षाओं में अर्जित अंकों तथा अन्त में प्राप्त श्रेणी को ही सफलता का मापदण्ड माना जाता है। ऐसा नहीं है हरेक विद्यार्थी हर विषय में अधिकतम अंक अर्जित करने की इच्छा करे। उन्हें पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की बातों पर विचार करना चाहिये। उनका कहना है "अंक किसी खास विषय में अर्जित ज्ञान के संकेत मात्र होते हैं, वे चरित्र के मापदण्ड नहीं होते। एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में तुम्हारे विकास के लिए उत्तम नैतिक मूल्यों तथा आचरण को अच्छे अंकों का परिपूरक बनाया जाना नितान्त आवश्यक है।" ध्यान दीजिये, वे चरित्र पर कितना बल देते हैं।

यद्यपि परीक्षा में प्रदर्शन, छात्र के वार्षिक मूल्यांकन का एक अंश मात्र होता है, सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के अन्य पहलू हैं जिन पर श्रेणी प्रदान करते समय विचार होना चाहिये। इसलिए अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने छात्रों को उन सर्वश्रेष्ठ मूल्यों को आत्मसात करने में मदद करें जो उन्हें जिम्मेदार नागरिक के रूप में वर्द्धित करें। यदि इस पक्ष में हम पिछड़ गये तो सम्भवतः इसका अपयश हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को ही मिलेगा। स्वाधीनता के ६० वर्षों के बाद भी समय के साथ यह बदला नहीं है। वर्धनशील पीढ़ी के कल्याण के लिए असंख्य बलिदानों के मूल्य पर अर्जित अपनी आजादी का सदुपयोग हमें अभी भी करना बाकी है।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.com

चन्दामामा

Editor, Publisher : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Chief Executive Officer : L. Subramanyan
Editorial Advisors : Ruskin Bond, Manoj Das
Consultant Editor : K. Ramakrishnan
Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar)
Gandhi Ayya, P. Mahesh
Layout Design: R. Sudha
Assistants: D. Revathy, B.A. Hemalata Malini
Research : R. Vaasugi

CIRCULATION TEAM :
Chennai : **T N Ravi Shankar, *National Sales Manager***
Mobile +91 99620 70014
email: ravishankar.tn@chandamama.com
Mumbai : **Rajendra K Jadhav, *Asst. Manager - Circulation***
Mobile +91 9271720669
CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industry
Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road
No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email: rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : **Sushil Sharma, *Circulation Manager-North***
Mobile +91 98719 30767
CHANDAMAMA INDIA LTD., Goyal Business Centre,
C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : **P. Murali, *Asst. Circulation Manager -Karnataka***
Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street
Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage
Bangalore-560094, Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : **Ananth Prakash, *Circulation Manager-East.***
Mobile +91 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Advertisement : email : sales@chandamama.com
Online and Interactive : **Surajit Agarwal**
Mobile +91 99620 70015
email: surajit.agarwal@chandamama.com
Head Office : **CHANDAMAMA INDIA LTD.,**
JVL Plaza, Block-A, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet
CHENNAI-600018, Phone +91 44 2432 2101/02,
Fax +91 44 2432 2103
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

शुल्क:

भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १८० रुपये। अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा **'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'** के नाम भेजें।

पाठकों का पन्ना

पुरस्कृत पत्र :

मेरी आयु ३० साल है। मेरा बचपन *चन्दामामा* के साथ बीता है। जब मैं छोटा था, तब से लेकर मेरे पिताजी घर में *चन्दामामा* लाते थे। पिताजी बताते हैं कि वह भी बचपन से *चन्दामामा* पढ़ते रहे हैं। लेकिन पिछले १७ साल से मैं *चन्दामामा* से दूर रहा। एक दिन पुरानी किताबें देख रहा था तो *चन्दमामा* हाथ लगा। मुझे लगा जैसे मेरे परिवार का कोई सदस्य बिछुड़ गया हो। मैंने नैट् पर सर्च किया और *चन्दामामा* से मैं फिर से जुड़ गया। फर्क सिर्फ इतना है कि पहले *चन्दामामा* पंजाबी भाषा में पढ़ता था और अब हिन्दी में पढ़ता हूँ। संभव हो सके तो अब पंजाबी अंक प्रारंभ करें।

अब पिताजी, मैं और मेरी सात वर्षीय बेटी तीनों *चन्दामामा* पढ़ते हैं। ऐसा लगता है कि जैसे हमारा परिवार *चन्दामामा* के आने से सम्पूर्ण हो गया हो। यह *चन्दामामा* ही है, जिसका कोई भी विकल्प इन साठ वर्षों में पैदा नहीं हुआ। मेरी सोच है कि *चन्दामामा* सम्पूर्ण भारत की और समस्त भारतीयों की एक मात्र पत्रिका है, जो सभी बच्चों और बड़ों की एक मात्र पसंद है। ***- कंवलजीत सिंह कुटी, पंजाब***

बचपन से कहानियाँ और विचार-विमर्श करना मुझे पसन्द हैं। मैं *चन्दामामा* का एक पाठक हूँ। जैसे एक प्यासा व्यक्ति पानी देखकर प्रसन्न हो जाता है, मैं भी *चन्दामामा* को देखकर वैसे ही हर्षित हो जाता हूँ। जैसे एक पूर्ण सुस्वादिष्ठ भोजन में सभी छः प्रकार के आस्वाद होते हैं, वैसे ही *चन्दामामा* में भी कहानियों तथा अनेक रोचक स्तम्भों के कारण सभी रसों का आनन्द मिल जाता है। मैं निष्पक्ष भाव से कह सकता हूँ कि *चन्दामामा* पत्रिका मनोरंजन, ज्ञान और सुरुचि की त्रिवेणी है। ***- रामकुमार आर्य, अजमेर***

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

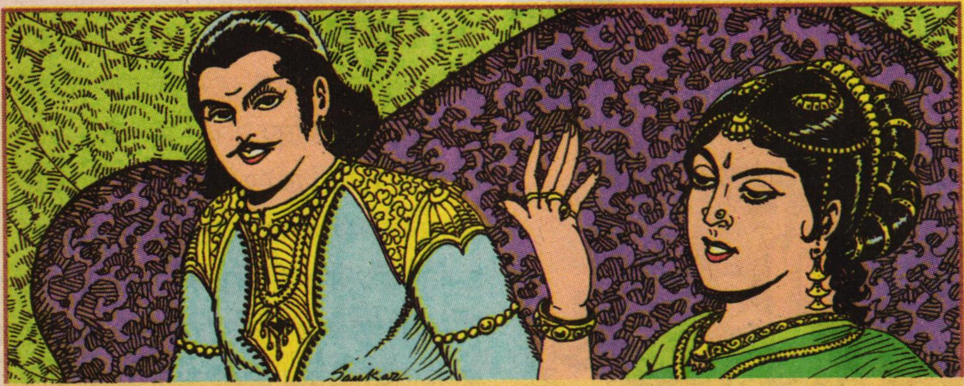

कहानियों को उच्च स्थान

काक़ड देश के शासक कृष्णभूपति की रानी थी ज्योत्सना देवी। दोनों राजदंपति राजोचित विद्याओं में लगभग समान थे। ज्योत्सना देवी भानुदेशाधीश की इकलौती पुत्री थी। वह सुंदरता, गुणों व अक्लमंदी में असमान थी। यह सुनकर कृष्णभूपति ने उससे विवाह किया। जब से वह रानी बनकर आयी, शासन संबंधी विषयों में भी पति को सही सलाहें देने लगी। पत्नी के प्रोत्साहन से राजा अक़्सर बहुरुपिया बनकर प्रजा के दुःख-सुख, आदि की जानकारी प्राप्त करते थे। कभी-कभी रानी भी अनेक रूप धारण करके उनके साथ जाया करती थी।

एक बार कृष्णभूपति, अधेड़ उम्र के मनुष्य की तरह वेष धारण करके नगर में घूमने गये। जब वे नगर की एक सराय के पास आ रहे थे तब उन्होंने चबूतरे पर बैठे पति-पत्नी को देखा, जो आपस में बातें कर रहे थे। कृष्णभूपति घोड़े से उतरे और उनसे थोड़ी दूरी पर उसी चबूतरे पर बैठ गये।

''नगर में आये चार दिन हो गये। साथ जो रक़म ले आये वह खत्म होने जा रही है। पर राजा के दर्शन नहीं हो पाये। मैं आपसे बार-बार कहती आ रही हूँ कि कहानियाँ बताना कोई पांडित्य नहीं है। आपने मेरी बात सुनी ही नहीं'', पत्नी ने शिकायत की।

उसकी बातों पर नाराज़ हुए बिना पति ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मैं भी तुमसे कहता आ रहा हूँ कि कहानियों का मूल्य भले ही कोई न जाने पर कृष्णभूपति अवश्य जानते हैं। जो बात बतानी है, उसे सही पद्धति में कहानी के रूप में मोड़ने पर उसका फल अद्भुत होता है। इसका जीता-जागता उदाहरण है, पंचतंत्र की कहानियाँ। मुझे

लक्ष्मी गायत्री

मुख में नयापन झलकता था। वह व्यक्ति सुंदर लगने लगता था। चूँकि वह सबको सुंदर दिखाने में प्रवीण था, इसलिए उसका नाम पड़ा सुंदर। सब उसी नाम से उसे पुकारते थे।

सबके सब उसकी तारीफ़ करते रहते थे, इसलिए सुंदर में छोटी सी इच्छा उत्पन्न हुई और धीरे-धीरे वह इच्छा प्रबल होती गयी। राजधानी जाकर राजा के बाल काटूँ, उनसे प्रशंसा पाऊँ, यह उसकी तीव्र इच्छा थी। सपनों में भी यही वह देखता था। अपने काम में उसे पूरा-पूरा आत्मविश्वास था इसलिए उसने अपने सपने को साकार बनाने का निर्णय किया। वह परिवार सहित राजधानी पहुँचा।

पूरा विश्वास है कि मैं उस पद्धति में बता सकूँगा। हमें निराश नहीं होना चाहिये। राजदर्शन के लिए हमारे प्रयत्न में ढिलाई नहीं लानी चाहिये। ये दोनों हों तो हम अपने लक्ष्य को अवश्य ही साधेंगे। उदाहरण के लिए एक ऐसे ही नाई की कहानी सुनाऊँगा, जो राजदर्शन के लिए आया। उसे ध्यान से सुनो।'' उसकी बातें राजा कृष्णभूपति तल्लीन होकर सुन रहे थे।

बहुत पहले की बात है। गौड़ देश के एक गाँव में सुंदर नामक एक नाई युवक रहा करता था। वह अन्य नाइयों की तरह अपना काम पूरा नहीं करता था। सामने बैठे व्यक्ति के मुख के अनुकूल बाल काटता था। वह बाल काटते समय इतना मग्न रहता था, मानों कोई शिल्पी शिल्प को नक्काश रहा हो। वह जिनके बाल काटता था, उनके

राजधानी आ तो गया, पर उसे लगा कि उसकी इच्छा इतनी आसानी से पूरी होनेवाली नहीं है। ''मैं राजा के बाल बड़े ही सुंदर ढंग से काटूँगा। इससे वे और सुंदर दिखेंगे। एक बार उनसे मिलने का मौक़ा दीजिये'' वह यह कहकर पहरेदारों से विनती किया करता था, पर किसी ने उसे राजा से मिलने नहीं दिया।

उसकी बातें सुनकर पहरेदारों को लगा कि यह कोई पागल है। कुछ पहरेदार धीरे से समझाकर उसे भेज देते थे, तो कुछ गला पकड़कर भगा देते थे। बहुत बार उसने प्रयत्न किये पर हर बार उसे इसी प्रकार के अनुभव से गुज़रना पड़ा। जब वह हताश हो गया तो ऐसे समय पर एक पहरेदार ने उससे कहा, ''सुनो, राजा के बाल काटने के लिए माधो नामक एक नाई है। तब उन्हें तुम्हारी

क्या ज़रूरत है? जाओ, अपना काम कहीं और करना।''

''माधो? उसका घर कहाँ है?'' सुंदर ने पूछा।

''अमरूद के बाग़ के पास है। वह बाल काटने में माहिर है।'' उस पहरेदार ने कहा।

सुंदर ने माधो के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त की। उसे मालूम हुआ कि माधो साठ साल की उम्र का है। उसकी कोई संतान नहीं है। बहुत ही अच्छा आदमी है। सुंदर ने यह विषय पत्नी को बताया और उसे यह भी बताया कि इस विषय में उसे कैसे व्यवहार करना जाहिए। सपरिवार वह माधो के घर गया।

माधो घर के बाहर अमरूद के पेड़ के नीचे एक टीले पर बैठा हुआ था। उसकी पत्नी पास ही के चबूतरे पर बैठकर रात के भोजन के लिए तरकारियाँ छील रही थी। सुंदर ''चाचा, कैसे हो'' कहते हुए उसके बग़ल में बैठ गया।

उसकी पत्नी माधो की पत्नी के पास जाकर कहने लगी, ''बाप रे, तरकारियाँ भी तुम्हें ही छीलनी पड़ती है। सासु, तरकारियाँ मुझे देना। मैं छीलूँगी।'' फिर वह जल्दी-जल्दी तरकारियाँ छीलने लगी।

माधो दंपति आश्चर्य में पड़ गये कि यह बेटा और बहू अचानक कहाँ से आ पहुँचे। सुंदर का चार साल का बेटा पेड़ में लटकते हुए अमरूदों के लिए हठ करने लगा। साथ ही वह रोने भी लगा।

''चुप रहो। आते ही बकबक शुरू कर दी। जानते नहीं, यह पेड़ हमारा नहीं है'', सुंदर ने बेटे पर नाराज़ होते हुए कहा।

पर बच्चे ने रोते हुए पूछा, ''तो फिर यह

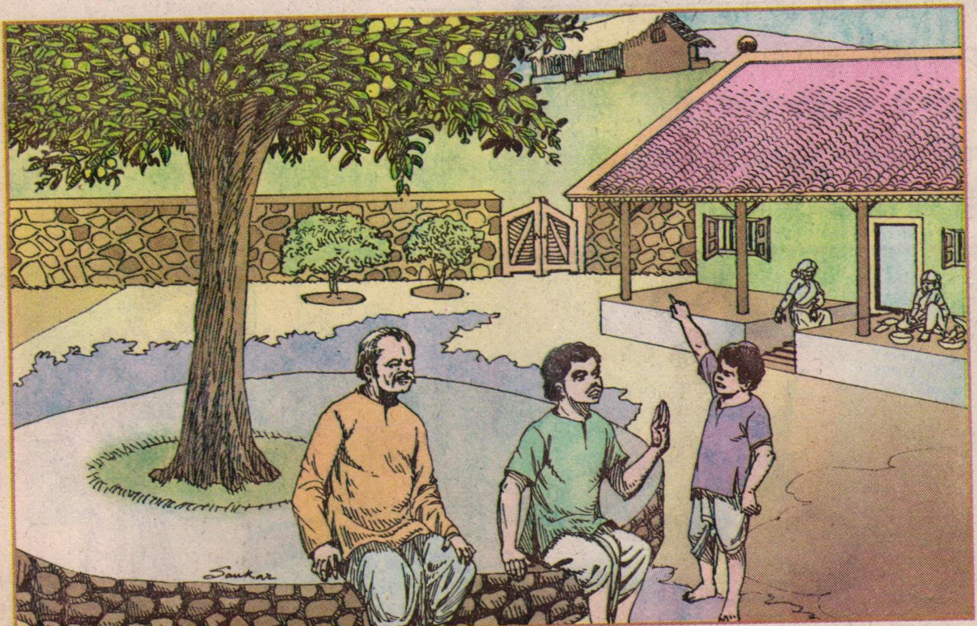

किसका है? क्या यह इस दादा का है?'' फिर वह अनुमति की प्रतीक्षा में हँसते हुए माधो की ओर देखने लगा।

माधो की कोई संतान नहीं थी। सुंदर और उसकी पत्नी से भी अधिक बच्चे का दादा कहकर उसे संबोधित करना बहुत ही अच्छा लगा। यह संबोधन उसके हृदय को छू गया। उसे बड़ा आनंद हुआ।

फिर बाद सुंदर और उसकी पत्नी की बातें करने की पद्धति माधो दंपति को बहुत ही अच्छी लगी। यह जानकर कि सुन्दर उसी की जाति का है उसे और खुशी हुई। उसने सुन्दर और उसके परिवार को अपना परिवार बनाकर अपने पास ही रख लिया।

इसके बाद का काम सुंदर के लिए आसान हो गया। माधो का वारिस बनकर उसने किले में प्रवेश किया। हफ्ते भर में उसने अपने नैपुण्य से राजा को आकर्षित किया। सुंदर और उसकी पत्नी ने आख़िर तक माधो दंपति की सेवा शुश्रूषा की और सबकी प्रशंसा भी पायी।

कहानी कह चुकने के बाद उस व्यक्ति ने पत्नी से कहा, ''देखा, पढ़ा-लिखा न होते हुए भी आत्मविश्वास और दृढ़ता के बल पर सुंदर ने क्या कमाल कर दिलाया। छोटी ही उम्र में उसकी वृद्धि हुई। मैं पहले ही तुमसे बता चुका हूँ कि वे दोनों गुण मुझमें भी हैं। सुंदर की तरह दैव कृपा अगर मेरा साथ दे तो मैं भी राजा के दर्शन कर सकूँगा।'' फिर वह अचानक कृष्णभूपति की तरफ मुड़कर उन्हें पत्नी को दिखाते हुए कहा, ''इन्होंने भी तुम्हारे साथ-साथ यह कहानी सुनी होगी। भगवान की दया हो तो हो सकता है, ये ही मेरे बारे में महाराज को बतायें।''

राजा कृष्णभूपति तब तक तल्लीन होकर सुंदर की सुनायी कहानी सुन रहे थे। सुंदर की बातें सुनते ही उन्हें लगा कि शायद इसने मुझे पहचान लिया।

तुरंत पगड़ी उतारते हुए उन्होंने मुस्कुराकर कहा, ''हाँ, हाँ, भगवान की कृपा हो तो मैं ही कृष्णभूपति होकर तुम्हारी कहानियों को उच्च स्थान दूँगा।''

Watch the worlds of wizardry and fantasy come together
The next issue of Chandamama brings you a special treat in the form of a CD containing performances by two leading artists in children's entertainment.
Watch the spellbinding Magician Mohare perform mind-boggling tricks, and get enthralled as Master Storyteller Jeeva Raghunath brings Chandamama stories to life with her magical voice.
Reserve a copy with your vendor now or write to us at:
Chandamama India Limited
JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600018.
Tel: (044) 24334455 | Email: chandamama@chandamama.com
1947
2007
CHANDAMAMA

बेंत की स्वामीजी

लोग अक़्सर कहा करते हैं कि हिमाद्रि बेंत के स्वामीजी की बेंत से जो मार खाता है, वह भाग्यशाली बन जाता है। इसका रहस्य जानने की प्रबल इच्छा लेकर नागराज ने स्वामीजी के आश्रम में प्रवेश पाया और वे जो-जो काम सौंपते थे, बड़ी ही सहनशक्ति और श्रद्धापूर्वक के करने लगा।

कुछ दिनों के बाद नागराज झुके हुए आम के पेड़ से फल तोड़ने लगा तब अचानक धम से उसकी पीठ पर बेंत की मार पड़ी। उसने पीछे मुड़कर देखा। जिस स्वामीजी ने उसे मारा था, वे कुछ कहे बिना चले जा रहे थे। तीन दिनों के बाद जब नागराज तरकारियों के पौधों में काम पर लगा था तो स्वीमीजी बेंत से मारकर चले गये। पाँचवें दिन जब वह फूल तोड़ रहा था तब ज्यों ही स्वामीजी ने उसे मारने के लिए बेंत उठायी, नागराज ने मुड़कर देख लिया। तब स्वामीजी बेंत से मारे बिना चुपचाप चले गये। इसके बाद जब-जब स्वामीजी उसे मारने के लिए बेंत उठाते थे, तब-तब वह उन्हें देखकर प्रणाम करता था, जिससे वह बेंत की मारों से बच जाता था।

इसपर बहुत ही प्रसन्न स्वामीजी ने उससे एक दिन कहा, ''पुत्र, तुम जो भी छुओगे, वह सोना बन जायेगा। अब तुम इस आश्रम से जा सकते हो।''

''यह कैसे संभव है?'' उसकी शंका को स्पष्ट करते हुए स्वामीजी ने कहा, ''जो मनुष्य जागा रहता है, उसे किसी भी कमी कशा अनुभव नहीं होता। अब तुममें संपूर्ण रूप से यह चेतना भर गयी है। जो मनुष्य अपने को समझ जाता है, परिस्थिति के अनुसार वह अपने को परिवर्तित करता है। अतः समय ही उसे विजय फलों को प्रदान करता है।'' मुस्कुराते हुए उन्होंने नागराज को आशीर्वाद दिया और वहाँ से चले गये।

- *वी.कस्तूरी*

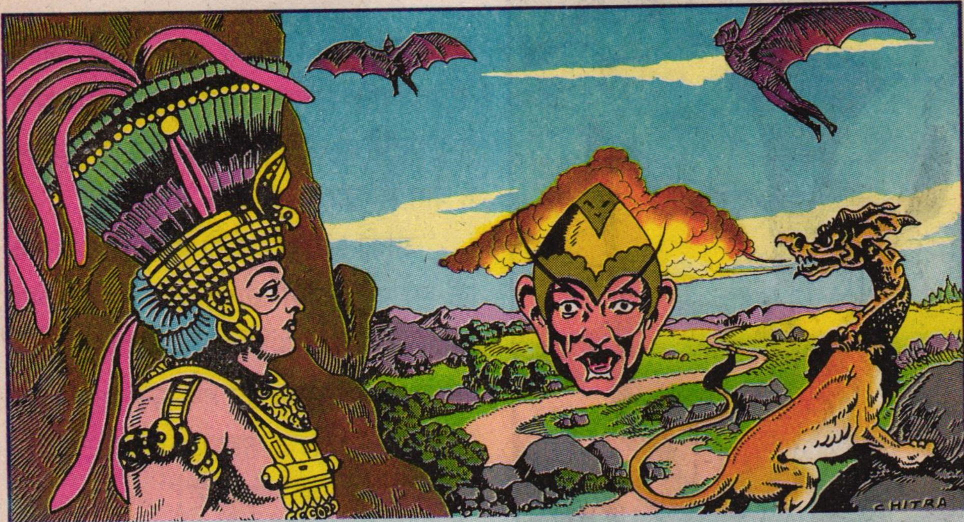

भयंकर घाटी

32

(मगरों की झील के पास श्वानकर्णी और बिड़ाली के गिरोहवालों ने केशव और उसके साथियों की रक्षा की। और केशव अपने मित्रों के साथ गुहावासियों की मदद से पहाड़ की चोटी पर से एक घाटी में उतरा। वहाँ उनको एक भयंकर पक्षी को हाथ में पकड़कर चिल्लाता हुआ भूत भगानेवाले की तरह एक व्यक्ति दिखाई दिया। बाद में -)

घाटी में उतरते ही वह अद्‌भुत दृश्य देख केशव और उसके साथी चकित रह गये। जयमल्ल, ताकि भूत भगानेवाला, सामने ढपली बजानेवाला या उसके साथी उसे न देख लें, एक पेड़ पर चढ़ गया। तुरंत केशव और जंगली गोमान्ना भी पेड़ पर चढ़ गये। ''ये कोई नर माँस भक्षक मालूम होते हैं। वह आदमी जो गण्डभैरण्ड को पकड़कर उछल कूद रहा है, हो न हो, उनका सरदार है। हम फिर किसी आफ़त में तो नहीं फँस गये हैं?'' जयमल्ल ने कहा।

केशव जयमल्ल से कुछ कहनेवाला था कि भूत भगानेवाले ने, जो अब तक चिल्ला रहा था, अपने साथियों की ओर मुड़कर जोर से कहा, ''हमारे कष्टों का कारण शत्रुओं का हमारे गंडभैरण्डों का चुरा ले जाना है। उस पक्षी के मामा को हमें बचाना है। वह मामा हमारी रक्षा

अपने शरीर में उन्हें लगा कर अपने को गरुड़ जाति के उड़नेवाले मनुष्य बताते हैं। शायद ऐसा करके वे जंगलियों पर राज्य करना चाहते हैं।'' जयमल्ल ने धीमे से कहा।

''उनकी इस करतूत की वजह से सम्भव है कि हम पर आपत्ति आये। यदि हम इस भूत भगानेवाले के साथियों की नज़र में पड़े तो वे हमें पंखवाले मनुष्य समझकर हमें मारने का प्रयत्न करेंगे।'' केशव ने कहा। ''इसलिए उनसे सावधान रहना बहुत जरूरी है।''

''कदम कदम पर हमारे लिए विघ्न हैं। यह भी सन्तोष न रहा कि हम भयंकर घाटी के पास पहुँच रहे हैं। इन बाधाओं के कारण भयंकर घाटी अब भी उतनी ही दूर और असम्भव लगती है, जितनी पहले। इनसे बचकर पहाड़ में कैसे सुरंगवाला रास्ता जाना जाये?'' जंगली गोमान्ग ने कुछ सोचते हुए कहा।

जब वे पेड़ पर चढ़े यह सोच रहे थे, तब भूत भगानेवाला अपने साथियों के साथ चला गया। वे कुछ देर तक पेड़ों पर ही रहे। जब वे जान गये कि आसपास कोई नहीं है तब वे पेड़ों पर से धीमे धीमे उतर आये।

''फिलहाल, इस भूत भगानेवाले के गिरोह से हमें कोई डर नहीं है। अगर हमने श्वानकर्णी और बिड़ाली के बताये हुए सुरंग को मालूम कर लिया तो हम भयंकर घाटी में जा सकेंगे।'' जंगली गोमान्ग ने कहा।

यह सुन जयमल्ल ने हँसकर कहा, ''ऐसी

करेगा। क्या गंडभैरण्ड की रक्षा करने का साहस तुममें है?''

इस प्रश्न का उत्तर उसके साथियों ने भाले उठाकर दिया, ''हम जानते हैं कौन गण्डभैरण्ड पक्षियों को पकड़कर उनके पंख काटकर ले जा रहे हैं। आज से वे दुष्ट इस प्रान्त में पैर न रख सकेंगे। यह हमारी प्रतिज्ञा है।''

''तो चलो, रात और दिन की बिना परवाह किये, उस पक्षी के मामा के निवास स्थल, पर्वत प्रान्त को शत्रुओं से बचाओ।'' कहकर भूत भगानेवाले ने अपने हाथ से गंडभैरण्ड पक्षी को तुरंत छोड़ दिया।

''तो यह बात है! गरुड़ के मुँहवाले सरदार के गिरोहवाले इस जगह के गंडभैरण्ड पक्षियों को पकड़कर, उनके पंख काटकर ले जाते हैं और

जगह, जहाँ इतने सारे पर्वत हैं, जंगल हैं, वहाँ सुरंग का रास्ता ढूँढ़ निकालना आसान नहीं है। गोमान्ग, जल्दबाज़ी से कोई फ़ायदा नहीं है। पहले हमें यह देखना है कि यहाँ रहनेवाले हमें देख न पायें। हमें सावधान रहना होगा। यह बहुत ज़रूरी है। तुम यह अच्छी तरह जान लो।''

केशव ने चुपचाप थोड़ी दूर पेड़ों के पीछे चलकर, दूरी के पहाड़ों की ओर हाथ उठाकर इशारा करते हुए कहा, ''अगर हम बिना खतरे के उस जगह पहुँच सके तो वहाँ मालूम किया जा सकता है कि सुरंग कहाँ है। यदि कोई और आफत नहीं आया तो समझो, भयंकर घाटी के हम आस-पास ही हैं। चुपचाप चले चलो।''

फिर वे दोनों कुछ दूर चलकर पर्वतों के पास पहुँचे। वह पहाड़ ऊँचा नीचा था, बड़े-बड़े पत्थर थे। निर्जन था। यह जानकर कि वहाँ कोई भूत भगानेवाले के आदमी नहीं हैं, केशव आदि पेड़ों के पीछे से आये और पर्वत के पास जाने लगे।

तुरंत उनको सामने की एक ऊँची जगह से किसी का चिल्लाना सुनाई दिया। तीनों ने सिर उठाकर उस तरफ़ देखा। चार-पाँच जंगली लोग भाले घुमाते चिल्लाये, ''कौन हो तुम? पीछे चले जाओ। यदि एक कदम आगे रखा तो प्राण नहीं बचेंगे। हमें मालूम हैं, तुम सब गंडभैरण्ड के चोर हो। गंडभैरण्ड के पंख, अब तुम न काट सकोगे।''

तब जयमल्लु ने उनका जवाब देते हुए कहा, ''हम लोग यहाँ गंडभैरण्ड के पंख काटने नहीं आये हैं। हम गरुड़ के मुखवाले जंगली मनुष्य नहीं हैं जो

गंड भैरण्ड के पंख काटकर अपने-अपने कन्धों पर लगाते हैं। हम किसी और काम से आनेवाले दूसरे लोग हैं। इसीलिए मैं विनति करता हूँ कि हमें, अपने रास्ते पर जाने दो।''

जयमल्लु अभी कह ही रहा था कि पहाड़ पर से बड़े बड़े पत्थर जोर से जहाँ वे खड़े थे, वहाँ लुढ़क-कर आने लगे। जंगली गोमान्ग कुछ बोलनेवाला था कि जयमल्लु ने उसका हाथ पकड़कर पीछे खींचते हुए कहा, ''चाहे तुम कुछ भी कहो, पर वे पत्थर बरसाकर ही उसका जवाब देंगे। अभी वे हमारी बात सुनकर अपने ऊपर खतरा मोल नहीं लेना चाहते। उनकी चोट से बचने के लिए फिलहाल पीछे भाग जाना ही अच्छा है।''

जयमल्लु उसके पीछे केशव और उसके पीछे जंगली गोमान्ग भागे भागे एक पत्थर के पीछे गये

जाहिर है कि बीचवाली घाटी ही, भयंकर घाटी है। समझे?''

''तो उनकी बताई हुई 'एक न एक सुरंग' की बात क्या है?'' जंगली गोमान्न ने पूछा।

''एक न एक'' कहने का मतलब यही है कि श्वानकर्णी और बिड़ाली इस प्रान्त के बारे में अधिक न जानते थे। इसलिए निश्चित रूप से वे कुछ बोल नहीं सकते थे। यह उनका अनुमान है, क्योंकि वे कह रहे थे कि कोई भी इस घाटी में आकर वापस नहीं गया है। तो सुरंग की बात भी, सम्भव है, गढ़ी गढ़ाई हो।'' जयमल्ल ने स्पष्ट किया।

''अगर यही बात है, तो जैसे भी हो, भूत भगानेवालों की नज़र बचाकर, उनके बताये हुए पहाड़ के पास जाना तुम्हारा उद्देश्य है, यही न?'' केशव ने पूछा।

जयमल्ल ने सिर हिलाकर कहा, ''अन्धेरा होने के बाद हमारा जाना अच्छा है। इस बीच यहीं ठहरा जाये। मेरा विश्वास है कि यहाँ शत्रुओं का कोई भय नहीं है। और अब जो खाना साथ लाये थे, उसे बाहर निकालो।''

जंगली गोमान्न ने बड़े-बड़े सागून के पत्तों में बंधे हुए खाने को निकाल कर जयमल्ल और केशव के सामने रखा। सब खा पीकर सूर्यास्त होने तक बहीं रहे और रात होने का इन्तजार करने लगे।

सूर्यास्त के बाद चन्द्रोदय प्रारम्भ हुआ। चाँदनी साफ थी और कहीं बादल नहीं थे। सब कुछ स्पष्ट दिखाई दे रहा था। केशव और उसके मित्र पहाड़

और हाँफते-हाँफते बैठ गये। थोड़ी देर कोई न बोला। उनको डर लगा कि कहीं ऐसा न हो कि भूत भगानेवाले के साथी उनका पीछा कर रहे हों। जब उन्होंने किसी को नहीं देखा, तो उन्होंने निश्चिन्तता की लम्बी साँस छोड़ी। ''भयंकर घाटी में जाने के लिए सुरंग का मार्ग कहाँ है, मुझे मालूम हो गया है।'' गोमान्न ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा। ''अब हमें भयंकर घाटी में पहुँचने में देर नहीं लगनी चाहिये।''

जयमल्ल ने मुस्कुराते हुए कहा, ''आश्चर्य न करो। श्वानकर्णी और बिड़ाली ने यही तो बताया था कि भयंकर घाटी, इन पहाड़ों के पीछे कहीं है। यानी ये दिखाई देनेवाले पहाड़ उस सुरंग के एक तरफ़ है। इस पर चढ़कर घाटी दिखाई दी और उसके आगे कोई और पहाड़ी दिखाई दी तो

पर चढ़ने का प्रयत्न करने लगे। जयमल्ल ने अपने साथियों की ओर मुड़कर कहा, ''यह चाँदनी हमारे लिए और भूत भगानेवालों के लिए भी अनुकूल है। हम चूँकि नये हैं, हमें इससे, रास्ता ढूँढ़ने में मदद मिलेगी। शत्रु भी हमारे बारे में आसानी से जान सकेंगे। इसलिए जहाँ तक सम्भव हो पेड़ों के पीछे-पीछे अन्धेरे में चलो।

जब तीनों अन्धेरे में पहाड़ की ओर कुछ दूर गये, उनको सामने एक पेड़ के नीचे किसी काली आकृति के हिलने की ध्वनि सुनाई दी। वे तीनों पेड़ों के पीछे छुप गये और उस आकृति की ओर ध्यान से देखने लगे।

''एक ही एक, पहाड़ पर जानेवाले रास्ते की रखवाली करने के लिए भूत भगानेवाले का सेवक होगा।'' जंगली गोमान्ग ने कहा।

''इसमें कोई सन्देह नहीं है, पर उसके होते सामने जाना बिल्कुल असम्भव है। इसको जैसे भी हो, हाथ पैर बाँधकर यहाँ छोड़ देना अच्छा है।'' केशव ने धीमे से कहा।

''यह कौन-सा कठिन काम है! मैं पासवाले पौधे के पास कुछ आहट करूँगा। वह क्या है, उसे देखने वह निकलेगा। तुम उसे पीछे से पकड़ लेना। उसका मुख बन्द कर देना, ताकि वह चिल्लाये न। फिर उसके हाथ पैर बाँध देना।'' कहता जंगली गोमान्ग, वहाँ से हिला। गीदड़ की तरह छिपकर पेड़ों के पीछे गया।

थोड़ी देर में गोमान्ग जिन पेड़ों के पीछे गया था, वहाँ धीमी-धीमी आहट होने लगी। तुरंत भूत

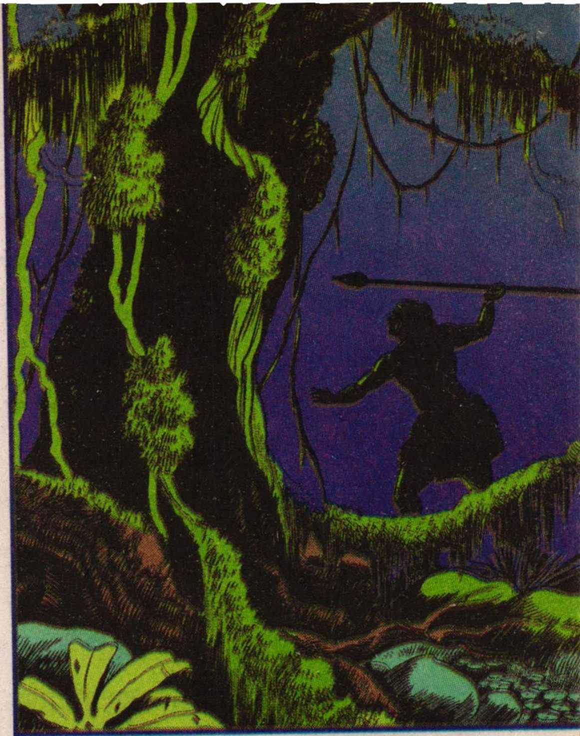

भगानेवाले का सेवक, भाला उठाकर पेड़ों की ओर जाते हुए चिल्लाया, ''कौन है वहाँ? बाहर निकलो।''

वह यों पेड़ के पास जा रहा था कि योजना के अनुसार केशव और जयमल्ल छाया की तरह उसके पीछे से उस पर कूदे। केशव ने पहरा देनेवाले के हाथ पीछे पकड़ लिये और उसके पैरों पर अपने पैर लपेट दिये।जयमल्ल ने उसके मुख में हाथ रखकर उसका गला पीछे की ओर मोड़ा। परन्तु इस बीच भूत भगानेवाले का सेवक जोर से चिल्लाया। तुरंत पहाड़ पर शोर सुनाई दिया।

''अब देरी न करो। हाथ पैर बाँध दो और मुख में पत्ते ठूँस दो। इसका चिल्लाना और पहाड़ पर इसके मित्रों का उसका सुनना, हमारे लिए उपयोगी नहीं है।'' जयमल्ल ने कहा।

तुरंत यह काम करके जब उन्होंने पहाड़ की ओर देखा, तो उस तरफ़ से भूत भगानेवाले के चार पाँच सेवक भागे भागे आ रहे थे।

"उस पहाड़ पर पहरा देनेवाले, अपने साथी की रक्षा के लिए इधर आ रहे हैं। अब हम बिना किसी रुकावट के पहाड़ पर पहुँच सकते हैं, दौड़ो।" कहकर केशव पहाड़ की ओर भागने लगा।

जैसा कि केशव का अनुमान था, पहाड़ की चोटी पर कोई शत्रु न था। जब उसने चोटी पर से, परली ओर देखा, तो वह चकित रह गया। वहाँ उसने एक चौड़ी घाटी देखी। विचित्र वृक्ष, उस पर भूतों की तरह पंख फैलाये हुए गंडभैरण्ड खड़े दिखाई दिये।

"यही भयंकर घाटी है!" केशव ने खुशी के जोश में चिल्लाकर कहा।

"इसमें सन्देह नहीं है। पर इस चोटी पर से घाटी में जाया कैसे जाये? इन खड़े पत्थरों में कहीं पैर रखने की भी जगह नहीं है।" जयमल्ल ने निराश होकर कहा।

"यहाँ देखो, बेलें हैं। हम इनकी मदद से घाटी में उतर सकते हैं।" जंगली गोमान्ग ने खुशी से चिल्ला कर कहा। "हाँ, ये बेलें काम दे सकती हैं।" जयमल्ल ने भी माना।

यह देखने के लिए कि वे बेलें उनका भार सह सकेंगी कि नहीं, जयमल्ल और केशव ने उनको झुककर पकड़ा ही था कि तुरंत उनको पीछे से होहल्ला सुनाई दिया।

"देखो, ये दुष्ट यहीं हैं। घेरकर इनको भालों से मार दो।" तुरंत भूत भगानेवाले के गिरोहवाले चिल्लाते-चिल्लाते चोटी की ओर आने लगे।

"इन बेलों को पकड़कर, घाटी में उतरने के सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। इसलिए जल्दी ही इन बेलों को पकड़ कर नीचे उतर जाओ। चलो, आओ।" कहकर जयमल्ल एक मज़बूत बेल को पकड़कर घाटी में उतरने लगा। केशव और गोमान्ग ने भी वही किया।

"ये बेलें, देखो, कहाँ हैं, उनको पत्थरों से चटनी बना दो। तीनों नीचे पत्थरों पर गिरकर मर जायेंगे।" भूत भगानेवाले के एक साथी ने कहा। तुरंत उसके साथियों ने बेलों को पत्थरों से तोड़ना शुरू कर दिया। ***(अभी है)***

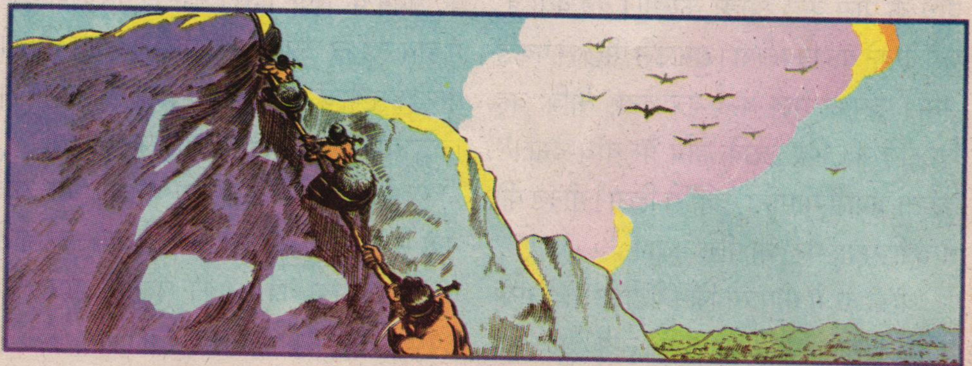

स्वार्थ में निःस्वार्थ

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा, उसे अपने कंधे पर डाल लिया और श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, ''राजन्, इस भयंकर श्मशान में निधड़क घूम-फिर रहे हो पर मैं यह नहीं जानता कि तुम अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ऐसा कर रहे हो या निस्वार्थ लक्ष्य को साधने के लिए इतना परिश्रम कर रहे हो। पर, लोक व्यवहार शैली को ध्यान से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि स्वार्थ को केंद्र बिंदु बनाकर प्रायः मानव व्यवहार करते हैं, उसी की पूर्ति के लिए अपना पूरा बल लगाते हैं। निस्वार्थता, परमार्थता, परोपकार आदि केवल बहाने मात्र हैं। वे मासूम मनुष्यों को जाल में फंसाने के लिए

वेताल कथा

ही हैं। धोखेबाज़ अपने स्वार्थ के लिए इन्हें उपयोग में लाते हैं। उदाहरण के लिए सजीव नामक वैद्य की कहानी सुनाऊँगा। ध्यान से सुनो और अपने लक्ष्य का निर्णय कर लो। फिर वेताल सजीव की कहानी यों सुनाने लगाः

रसपुर विरूपदेश का एक छोटा शहर था। वहाँ के व्यापारी रत्नाकर के तीन बेटे थे। बड़े दोनों बेटों की शादी हो गयी और वे व्यापार में पिता को सहायता पहुँचाने लगे। यद्यपि तीसरा बेटा बीस साल की उम्र का हो गया, पर व्यापार में उसे कोई रुचि नहीं थी। उल्टे जो भी उससे धन की सहायता मांगते थे, आगे-पीछे सोचे बिना दे देता था। बड़े और छोटे भी मीठी-मीठी बातें कहते हुए उसे बहकाते थे और उससे धन ऐंठते थे। घर के लोगों को यह पसंद नहीं था।

रत्नाकर बेटे की इस आदत से बहुत परेशान था। पत्नी ने उसे सुझाया कि उसका विवाह कर दिया जाए तो हो सकता है, उसमें सुधार आये। रत्नाकर के एक दोस्त ने उससे कहा, ''सजीव का हृदय बड़ा ही कोमल है। उसमें दया, परोपकार आदि सद्‍गुण भरे हुए हैं। परंतु दुख की बात तो यह है कि उसमें लोकज्ञान रत्ती भर भी नहीं। मेरी बेटी मनोरमा दयालु है, पर उसमें लोकज्ञान भी है। वह अक़्लमंद है। उससे शादी करवाओगे तो वह उसमें सुधार ले आयेगी।''

रत्नाकर ने उसकी सलाह मान ली और जल्दी ही मनोरमा, सजीव की पत्नी बनी। पिता की बातों को सच साबित करते हुए उसने थोड़े ही समय में सजीव को अपना बना लिया। वह जो भी कहती, उसे सजीव मान लेता था। उसने एक दिन पति से कहा, ''तुम दयालु हो। जो भी सहायता माँगता है, उसे धन देकर सहायता पहुँचाते हो। घर के सब लोगों का यही कहना है कि जिस किसी को भी दान देते हो, उससे उनमें से कोई भी सुखी नहीं है। तुम्हें साबित करना होगा कि उनकी बातों में सच्चाई नहीं है अथवा अपनी पद्धति में परिवर्तन करो और घर के लोगों को संतुष्ट करो।''

सजीव ने इसे चुनौती के रूप में स्वीकार किया और वह पहले संजय के घर गया, जिसे उसने धन देकर सहायता पहुँचायी। तब संजय अपने घर के चबूतरे पर निराश बैठा हुआ था। सजीव को देखते ही उसने कहा, ''तुमने जो रक़म दी,

उससे कल ही मेरे घर में पकवान बने। हम सबके सब सकुशल हैं, पर मेरे पिता व मेरे छोटे बेटे को अजीर्ण हुआ, बदहज़मी हुई। वैद्य ने दवा दी। उससे मेरे छोटे बेटे की तबीयत तो ठीक हो गयी पर मेरे पिता अब भी बीमार हैं। वैद्य ने तीन दिनों तक उन्हें उपवास रखने के लिए कहा। पिताजी नाराज़ होकर रक़म देनेवाले तुम्हें और पकवान बनानेवाले मुझे लगातार गालियाँ दे रहे हैं।''

घरवालों की बात सही निकली, फिर भी उसका उत्साह कम नहीं हुआ। उसे विश्वास था कि सबके विषय में ऐसा नहीं हुआ होगा। वहाँ से निकलकर वह सुग्रीव के घर की तरफ़ बढ़ा। उसके दरवाज़े पर ही उसे गालियाँ सुनायी पड़ीं। कल ही सुग्रीव बेटी की मंगनी के लिए उससे धन लेकर गया था। आज उसकी बेटी बुखार से पीड़ित है। उसे देखने जो आये थे, उसे रोगी ठहराकर वापस चले गये। उनकी शिकायत थी कि सजीव का दिया हुआ धन रास नहीं आया, इसलिए यह रिश्ता टूट गया। वे सजीव को गालियाँ देने लगे।

सजीव लौटा, पर निराश नहीं हुआ। बड़ी आशा लेकर वह चार-पाँच लोगों के घर गया, किन्तु हर जगह उसने यही स्थिति पायी। सजीव को मालूम हो गया कि जिस-जिस को उसने धन देकर सहायता पहुँचायी, वे संतुष्ट नहीं हैं। सब कुछ उसने सविस्तार पत्नी को बताया। फिर उसने पत्नी से कहा, ''दोस्तों को खुश रखने के लिए मैंने जो पद्धति अपनायी, भले ही वह ठीक न हो, पर मेरी वजह से उनकी ज़रूरतें तो पूरी हुई हैं न? इससे बढ़कर कोई अच्छी पद्धति हो तो बताना। अवश्य उसे अमल में लाऊँगा।''

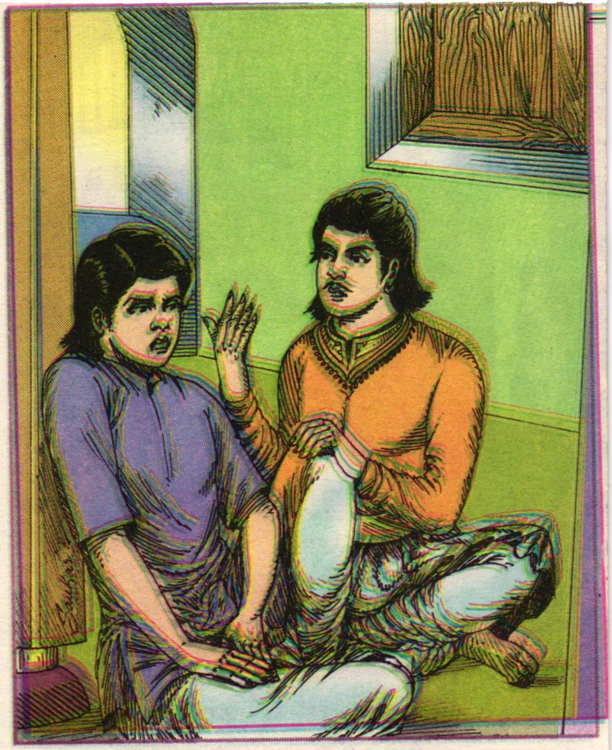

मनोरमा ने फ़ौरन कहा, ''मनुष्य को सच्ची तृप्ति देता है, आरोग्य। जिसका आरोग्य ठीक नहीं होता, चाहे वह कितना ही संपन्न हो, सुखी नहीं रह सकता। तुम अगर चाहते हो कि तुम्हारे दोस्त और परिचित लोग सुखी रहें तो तुम वैद्य विद्या सीखना। धनी लोगों से धन लेना और गरीबों की चिकित्सा मुफ़्त में करना।''

''वैद्य विद्या सीखने में बहुत साल लग जायेंगे न?'' सजीव ने संदेह प्रकट किया।

''बृहदारण्य में असव नामक तपस्वी हैं। वे योग्य शिष्य को एक ही साल में वैद्य शास्त्र सिखा सकने की क्षमता रखते हैं। तुम वहाँ जाओगे तो शीघ्र ही योग्य वैद्य बन सकते हो'', मनोरमा ने कहा।

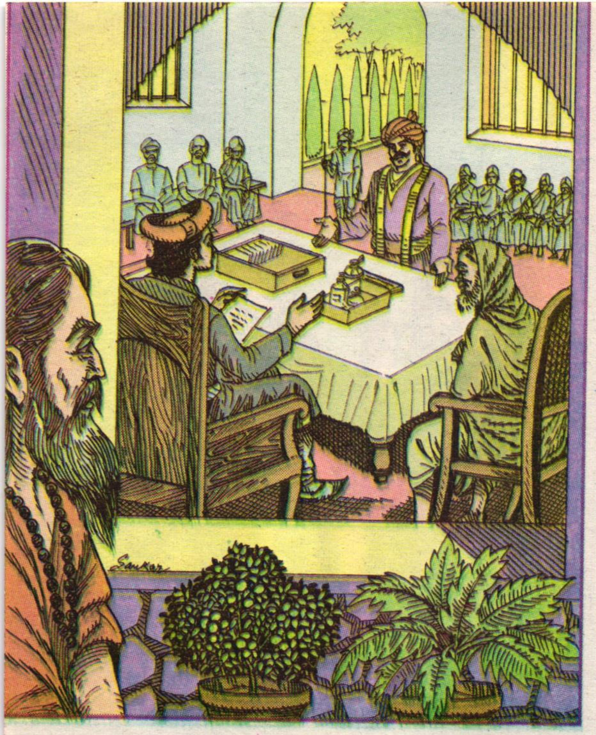

सजीव उसी दिन बृहदारण्य गया और असव से मिला। उन्होंने उसे अपना शिष्य बनाया और एक ही साल में वैद्य शास्त्र में उसे पारंगत बना दिया। विद्याभ्यास की पूर्ति के बाद असव ने सजीव से कहा, ''मैंने चिकित्सा की ऐसी-ऐसी पद्धतियाँ तुम्हें सिखायीं, जो दुनिया के किसी भी वैद्य को नहीं मालूम हैं। पर चंद ऐसे भी रोग हैं, जिनकी चिकित्सा दवाओं से नहीं हो सकती। मेरे पास एक ऐसा भी ग्रंथ है, जिसमें ऐसे रोगों की चिकित्सा के मंत्र हैं। सेवा भाव से निस्वार्थ होकर जो चिकित्सा करते हैं, वे ही इस ग्रंथ को पाने के योग्य हैं। जब यह साबित होगा, तब कोई न कोई मेरी पुकार तुम तक पहुँचायेगा। जब तुम आओगे तो यह ग्रंथ तुम्हारे सुपुर्द करूँगा।''

सजीव गुरु का आशीर्वाद पाकर रसपुर लौटा और पत्नी मनोरमा को पूरा विषय बताया। पत्नी के कहे अनुसार वह गरीबों से बिना शुल्क लिये और धनी लोगों से अधिक रक़म लेकर उनकी चिकित्सा करने लगा। सजीव की दवा अचूक थी, इसलिए लोग दूर-दूर से आने लगे।

एक दिन एक साधु जीवन के घर के सामने खड़े होकर ''भिक्षांदेहि'' कहने ही वाला था कि इतने में उसने देखा कि सजीव एक गरीब रोगी की चिकित्सा ध्यान मग्न होकर कर रहा है। इतने में बग्गी से एक अमीर आया, और बोला, ''वैद्योत्तम, आप जितनी रक़म चाहते हैं, दूँगा। पहले मेरे रोग की चिकित्सा कीजिये।'' उसके स्वर में गर्व था।

सजीव ने उसे नख से शिख तक ग़ौर से देखा और कहा, ''आप जो धन देंगे, उसे अवश्य लूँगा, लेकिन चिकित्सा के पहले रोग का निदान करना आवश्यक है। जब आपकी बारी आयेगी, खुद मैं आपको बुलाऊँगा। तब तक क़तार में बैठ जाइये।''

तब सजीव की दृष्टि उस साधु पर पड़ी। उसने साधु को प्रणाम किया और कहा, ''आज आप मेरे साथ भोजन करके हमें कृतार्थ कीजिये।''

साधु ने मुस्कुराते हुए कहा, ''काम पूरा कर लेने के बाद अंदर आना। दोनों मिलकर भोजन करेंगे।'' कहते हुए वह घर के अंदर गया।

सजीव ने सब रोगियों की परीक्षा की, उन्हें आवश्यक दवाएँ दीं और देरी से अंदर आया। उसने साधु से देरी से आने के लिए क्षमा माँगी

तो साधु ने कहा, ''रोगियों के प्रति तुम्हारी श्रद्धा, धन के लिए न झुकनेवाला तुम्हारा निस्वार्थ सेवा भाव व साधुजनों के प्रति तुम्हारा आदर भाव अद्‌भुत है। ऐसे वैद्य बिरले ही होते हैं। असव के वैद्य मंत्र ग्रंथों को पाने की योग्यता तुममें है। तुरंत बृहदारण्य जाने के लिए निकलो।''

सजीव ताड़ गया कि यह व्यक्ति असव का भेजा हुआ व्यक्ति ही है। उसने पत्नी मनोरमा से यह बात बतायी। उसने पति से कहा, ''बृहदारण्य आने-जाने में कम से कम एक हफ्ता लगेगा। जाइये अवश्य, लेकिन तब जाइये, जब रोगी न हों।''

सजीव ने यही बातें साधु से कहीं। उसने इसे ठीक माना और भोजन करके चला गया।

इसी बीच उस देश के राजा भीमसेन की माँ सख्त बीमार पड़ी। राजवैद्य की कोई भी दवा काम नहीं आयी। राजा ने सजीव को खबर भेजी। पत्नी की सलाह लेकर सजीव ने दूत से कहा, ''मैं यहाँ से जाऊँगा तो कितने ही रोगियों को कष्ट पहुँचेगा। प्रजा हित चाहनेवाले हमारे राजा भी इससे संतुष्ट नहीं होंगे। अच्छा यही होगा कि चिकित्सा के लिए राजमाता को ही यहाँ ले आयें।''

दूसरे दिन साधु सजीव से मिला और साहस, निस्वार्थता की भरपूर प्रशंसा की। उसने सलाह दी कि वह तुरंत बृहदारण्य जाए और मंत्र ग्रंथ को ले आये। पर सजीव ने पहले की ही तरह जवाब दिया।

इसके कुछ दिनों के बाद रसपुर के धनाढ्य

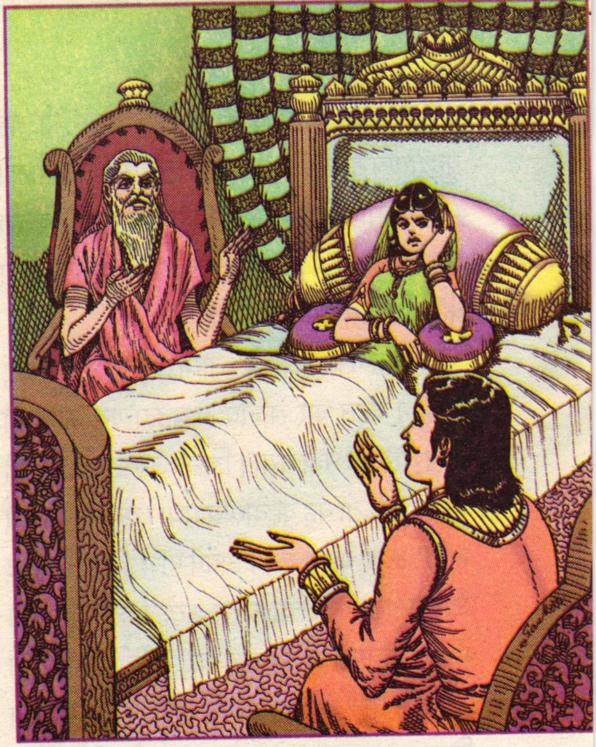

महेंद्र सख्त बीमार पड़ गया। सजीव को उसके रोग की गहराइयों का पता नहीं चला और पशोपेश में पड़ गया कि क्या किया जाए। तब साधु मनोरमा से मिला और कहा, ''महेंद्र के रोग की चिकित्सा मंत्रों से हो सकती है। अब ही सही, अपने पति को बृहदारण्य भेजो।''

मनोरमा ने भी इसे आवश्यक माना और पति से बृहदारण्य जाने को कहा। पर, सजीव ने नहीं माना। तब मनोरमा ने साधु की सलाह पर नाटक किया, मानों वह बहुत ही बीमार हो। सजीव ने दवा दी, पर मनोरमा पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कोई और चारा न पाकर जब वह साधु से मिला, तब उसने सलाह दी कि वह तुरंत बृहदारण्य जाए और वह वैद्य-ग्रंथ ले आये। नहीं तो उसकी पत्नी ख़तरे में पड़ जायेगी।

मनोरमा ने भी जाने पर ज़ोर दिया तो वह बृहदारण्य गया और असव से वह ग्रंथ लेकर लौटा। महेंद्र के साथ-साथ कितने ही रोगियों की चिकित्सा उसने इस ग्रंथ में बतायी चिकित्सा पद्धति के द्वारा की और उनका रोग दूर किया।

वेताल ने यह कहानी बतायी और पूछा, ''राजन्, साधु ने बहुत बार सजीव से बृहदारण्य जाने को कहा, पर वह नहीं गया। किन्तु जब उसकी पत्नी बीमार पड़ी तो वह बृहदारण्य गया। क्या यह स्वार्थ नहीं? अगर वैद्यमंत्र ग्रंथ अपने पास होता तो महेंद्र जैसे धनाढ्यों की चिकित्सा करके बहुत बड़ी मात्रा में धन कमाया जा सकता था, इसीलिए मनोरमा ने अपने पति को बृहदारण्य जाने के लिए बाध्य किया। क्या यह मनोरमा का स्वार्थ नहीं? यों दो प्रकार के स्वार्थों के वश में आकर आये सजीव को असव का मंत्र ग्रंथ देना क्या नियम भंग नहीं है, क्योंकि उसने कहा था कि यह ग्रंथ निस्वार्थियों को ही दिया जायेगा। मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

राजा विक्रमार्क ने कहा, ''अग्नि को साक्षी बनाकर सजीव ने मनोरमा से विवाह किया। पति होने के नाते उसे बचाना उसका कर्तव्य है। उसकी चिकित्सा के लिए उसका बृहदारण्य जाना स्वार्थ नहीं कहलाता। मनोरमा के कारण ही सजीव ने ग़रीबों की चिकित्सा की। उस पर धनार्जन का आरोप लगाना समुचित नहीं। जब उसे मालूम हुआ कि उसकी पत्नी रोग ग्रस्त है तब उसने दूसरे रोगियों की चिकित्सा करने में भी अपने को असमर्थ पाया। यदि मनोरमा सख्त बीमार पड़ जाती तो हो सकता है, वह वैद्य वृत्ति को ही सदा के लिए छोड़ देता। ऐसा होने पर कितने ही रोगियों को हानि पहुँचती ! जो वैद्य मंत्र ग्रंथ ले आया, उससे उसने कितने ही रोगियों की चिकित्सा की और उन्हें रोग मुक्त किया। इसलिए सजीव ने बृहदारण्य जाकर और असव ने वैद्य ग्रंथ देकर कोई नियम भंग नहीं किया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधारः सुचित्रा की रचना)

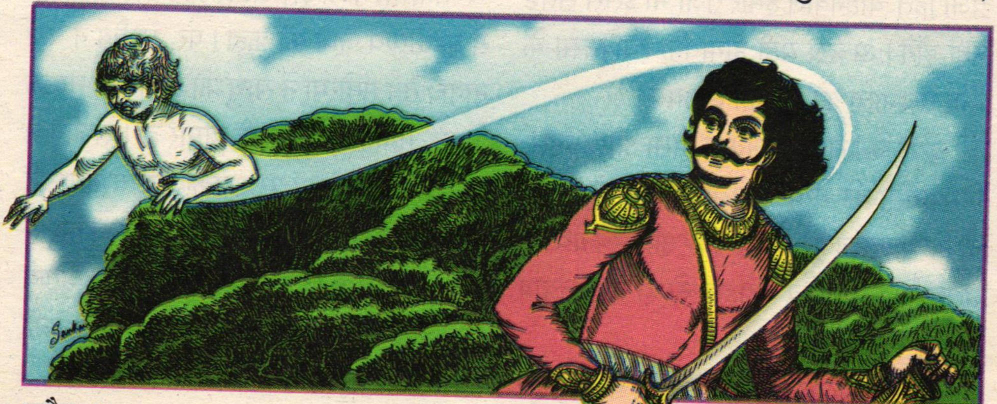

Get India's Most Loved Magazine for Children at your doorstep

Subscribe to *Chandamama*

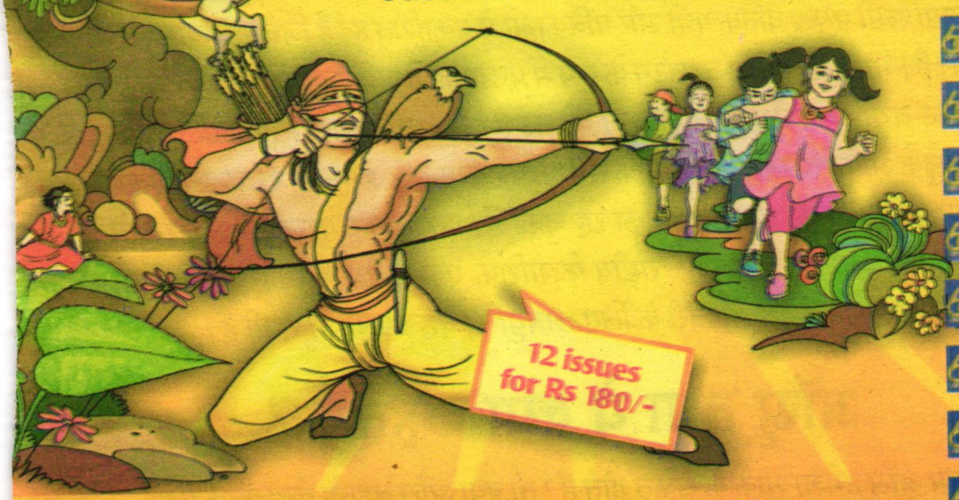

Chandamama stories explore our traditions, folk tales, mythology, history and science in an unforgettable narrative style which captures your child's imagination. Generations of children have grown up reading *Chandamama* in their native language. Subscribe today and let your child's quest for knowledge stay alive forever.

Junior

I want to subscribe to the following editions of Chandamama: (Tick all that apply)

☐ **English** ☐ **Language**.. ☐ **Junior Chandamama**

My Name .... Date of Birth ....

Send my issues to: Mr/Ms...

Address ....

....

....

City.. State .... Pin ....

Telephone.. Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..

Cheque/DD no...Favouring **Chandamama India Ltd**

on .... bank. (Please add Rs 90 for non-Chennai cheques)

Your subscription will start in 4 weeks.

Please mail the subscribtion form to :
Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600 018.
Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

*Language/edition for one year is Rs. 180. Only English: Rs. 180 for 1 year. English + any language: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior: Rs. 360 for 1 year. English Chandamama + Junior + any language: Rs. 540 for 1 year.

*Conditions apply

कहानी, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द थी - १०

स्वप्ना दत्ता बच्चों के लिए तीन दशकों से भी अधिक समय से लिख रही हैं और ४० से भी अधिक पुस्तकों के सृजन का श्रेय इन्हें प्राप्त है। इनकी कहानियाँ सभी प्रमुख दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं जिनमें चन्दामामा भी शामिल है। भारत की एनिड ब्लाइटन के रूप में प्रख्यात श्रीमती दत्ता की पुस्तकें चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट तथा अन्य के द्वारा प्रकाशित की गई हैं। ये टारगेट की सम्पादकीय सहायक, लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स की सहायक सम्पादिका तथा १९८७ से २००२ तक इन्साइक्लोपिडिया ब्रिटैनिका की उप सम्पादिका रह चुकी हैं। इन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें शामिल हैं– राष्ट्रीय फेलोशिप, एक राष्ट्रीय पुरस्कार, म्यूनिक तथा वियेना इण्टरनेशनल यूथ लाइब्रेरी के लिए छात्रवृति। वह बंगलोर में रहती हैं।

आँसू तथा ये क्या कहते हैं?

क्या आँसू हमेशा शोक के संकेत होते हैं? तो क्या आँसू बहाना बन्द करके कोई सुखी रह सकता है? आँसू के महत्व और तात्पर्य के विषय में मेरी दादी ने यह कहानी मुझे तब सुनाई थी जब मैं बच्ची थी। इस सरल कहानी को अपने पाठकों के साथ बाँटना चाहूँगी, क्योंकि वे निश्चय ही इसे पसन्द करेंगे।

वसन्त ऋतु की प्रातः वेला थी। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिल रहे थे। पक्षी गा रहे थे। झरने भी गुनगुना रहे थे। हरेक व्यक्ति खुश था। हरेक के होठों पर मुस्कान थी।

एक ऐसी प्रातः वेला में रानी मधुरिमा अपने भव्य राजमहल में सोकर उठी। उसने गवाक्ष से बाहर झाँका। उद्यान में रंगों की मानो प्रज्वलित भूलभुलैया हो। कोयल और अन्य पक्षी मधुर तान में गा रहे थे। उसक हृदय उल्लास से भर गया।

''वसन्तोत्सव का आनन्द लेने के लिए क्या हम जंगलों में चल सकते हैं, मेरे स्वामी?'' उसने राजा से कहा। उसने मुस्कुरा कर सिर हिलाया। और काम खत्म हो जाने पर सम्मिलित होने का वचन दिया।

रानी अपनी सहेलियों के साथ जंगल में गई। उन सब ने सरोवर के स्वच्छ जल में स्नान किया। फूलों को चुनकर मालाएँ बनाईं। ताजे फलों का स्वाद लिया। वे तितलियों के पीछे भागे। चिड़ियों के साथ गुनगुनाये-गाये। सब उल्लास में डूबे थे। सबके लिए यह सबसे आनन्ददायक दिन था।

क्रमशः दिन ढलने लगा। पक्षी अपने घोंसलों में लौटने लगे। कमल दलों ने अपने पट बन्द कर

लिये। कुमुदनी तन्द्रा में डूब गई। तारों ने अपने नयन खोले और टिमटिमाने लगे। पर राजा के आगमन का कोई संकेत नहीं था। क्या वे अपना वादा भूल गये। पर अब वन की सुन्दरता अन्धकार में खो गई थी। रानी मधुरिमा अपनी सहेलियों के साथ धीरे-धीरे भारी कदमों के साथ महल में लौट गई।

वह महल पहुँचकर जंगल में बीते हर्षोल्लास-पूर्ण दिन के बारे में राजा को बताने के लिए उत्सुकता के साथ उनकी प्रतीक्षा करती रही। पर राजा नहीं आये। पल पल करके पहर बन गये। आसमान में चाँद चमकने लगा। महल के चतुर्दिक वीथियाँ निस्तब्ध हो गईं। पर राजा अभी तक दरबार से नहीं लौटे। रानी की बेसब्री रोष में बदल गई। आखिर जब राजा का पदचाप सुनाई पड़ा तब लगभग अर्धनिशा हो गई थी।

''इतने विलम्ब का कारण स्वामी?'' रानी ने खिन्न स्वर में पूछा।

''प्रजा का दुख दर्द।'' राजा ने कहा।

''दुख दर्द !''

''हाँ, उनकी समस्याएँ, उनकी कठिनाइयाँ! मुझे ये सब सुलझानी थीं। और कौन उनकी मदद करेगा? उनका राजा ही तो करेगा।''

मधुरिमा ने अपना सिर झटकते हुए कहा, ''ऐसे खूबसूरत दिन को शिकायतें सुनने में बर्बाद करना कितनी शर्म की बात है!''

राजा मुस्कुराकर रह गया, कुछ बोला नहीं। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ। तीसरे दिन भी। रानी यद्यपि वन के मनोरम वातावरण में अपना समय बीताती रही, पर राजा उसकी खुशी में सम्मिलित नहीं हो सका।

अन्ततोगत्वा रानी निराश और दुखी होकर बोली, ''आपका राज्य जंगल से भिन्न क्यों है? यहाँ महल में आहें और आँसुओं के सिवा मुझे कुछ और दिखाई नहीं देता। दुख, दर्द-शोक और

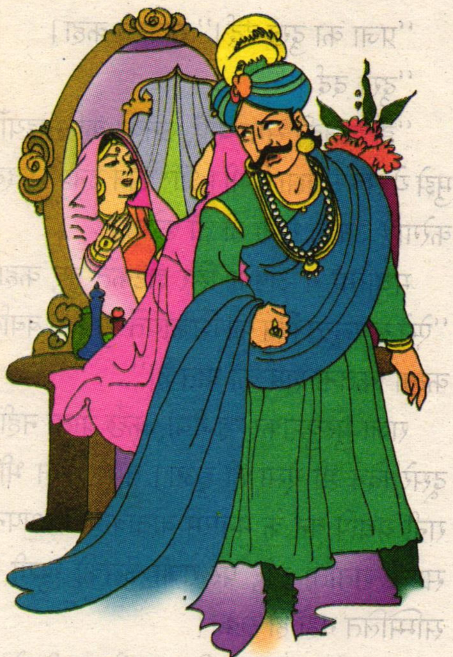

समस्याएँ ! मैं इन सब से तंग आ चुकी हूँ! मैं प्रसन्न रहना चाहती हूँ।''

''किन्तु यह सम्भव नहीं, मधुरिमा'', राजा ने स्नेह से कहा, ''जीवन प्रकाश-अन्धकार, सुख-दुख और हँसने-रोने का ताना-बाना है। हमें दोनों का सामना करना है। किसी एक को बाहर कर देना बिलकुल सम्भव नहीं है।''

रानी मधुरिमा ने हठपूर्वक सिर हिलाते हुए कहा, ''प्रयास करने पर हर चीज सम्भव है, स्वामी। आखिर आप यहाँ के राजा हैं। आप को घोषणा कर देनी चाहिये कि जो भी, एक बून्द भी आँसू बहायेगा, वह हमेशा के लिए राज्य से निष्कासित कर दिया जायेगा।''

राजा ने चकित और आहत होकर रानी पर नजर डाली। ''तुम रानी और प्रजा की माता हो। तुम किसी के लिए इतनी निर्दय और अनुचित कामना कैसे कर सकते हो?''

''मैं अवश्य ऐसी कामना करूँगी और आप वही करेंगे जो मैं कहती हूँ।'' रानी ने कहा।

''ऐसा ही होगा'', राजा बोला, ''किन्तु, तुम शीघ्र ही अपने इस निर्णय के लिए पछताओगी। तुम केवल आँसुओं को बन्द करके सुखी नहीं रह सकती।''

रानी मधुरिमा हँसती हुई दर्पण की ओर मुड़ी।

राज्य भर में घोषणा कर दी गई। लोगों ने इसे मूक विस्मय के साथ सुना। कौन पाषाण- हृदय नीच गरीबों के आँसू लूट रहा है, जो उनका एक मात्र सान्त्वनादाता है? वे विषाद, क्षति, दुख-दर्द के सामने कैसे मुस्कुरा और हँस सकते हैं? क्या खुशी थोपी जा सकती है? राज्य से निष्कासित लोगों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी।

मौसम, एक के बाद एक, बदलते गये। वर्ष-चक्र पूरा घूम गया। एक बार वन में पुनः वसन्त की बहार आ गई। जंगल फूलों के रंग से दमक उठा और उनकी खुशबू हवा में तैरने लगी। पक्षी गीत गाने लगे। पर इस बार रानी मधुरिमा के पास यह सब देखने के लिए समय नहीं था। उसका शिशु-बेटा, राजकुमार गम्भीर रूप से बीमार था। वह भारी हृदय के साथ अपने बेटे के पास बैठी थी। राज्य के सभी चिकित्सकों ने उपचार किया। पर व्यर्थ! दूसरे दिन के सूर्योदय के साथ उसके बेटे का सूर्यास्त हो गया।

रानी मधुरिमा का हृदय दुख से कराह उठा

और आँसुओं से उमड़ पड़ा। उसकी मुस्कुराहट, लगा कि हमेशा के लिए विषाद में डूब गई।

अगले दिन सुबह राजा ने उसे दरबार में बुलाया। ''तुमने अपने ही आदेश का उल्लंघन किया है, मधुरिमा।'' राजा ने स्पष्ट शब्दों में कहा, ''अब तुम्हें देश-निकाला की सज़ा भुगतनी होगी।''

रानी ने स्तम्भित होकर राजा की ओर देखा, ''पर निश्चय ही आप राज्य की रानी को राज्य से बाहर निकाल नहीं सकते!''

''मैंने तुम्हारी आज्ञा से ही यह कानून बनाया और एक बार कानून बन जाये तो यह किसी को नहीं छोड़ता, राजसत्ता को भी नहीं।'' राजा ने दृढ़ता के साथ कहा।

रानी मधुरिमा को महल से बाहर कर घने जंगल में भेज गिया गया। बीहड़ रास्तों में भटकती गिरती जंगली जानवरों के भय से काँपती रोती-रोती वह अन्धी हो गई। उसने उन लोगों की आवाजें सुनीं जो राज्य से निष्काषित किये गये थे। उन सब ने अपनी रानी का स्वागत किया और उसके दुःख और पुत्र शोक की भारी विपदा को बाँटा। उन सबने उसके लिए कुटिया बनाई और स्नेहपूर्वक उसकी देखभाल की क्योंकि अब वह उन्हीं लोगों में से एक थी।

दिन गुजरते रहे। लोग निष्कासित रानी का सम्मान करने लगे। वे उसके साथ अपना सुख-दुख बाँटने लगे। रानी मधुरिमा अपने अहंकार और उद्दण्ड व्यवहार को भूल गई। उसने उन सब की सेवा की, परिश्रम किया और सहायता की जिन्होंने उसे नया जीवन दिया था। अन्ततोगत्वा वह एक सच्ची रानी और माता बन गई।

एक दिन स्वच्छ प्रातःकाल, राजा अपने सुनहले रथ में प्रकट हुआ।

जब वह चारों ओर निहार रहा था तब उसने रानी मधुरिमा को एक बीमार बच्चे की सेवा करते हुए देखा। बच्चा उसकी भुजाओं में सिमटा हुआ था। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। राजा ने उस पर नज़र डाली। रानी नतमस्तक हो गई।

''क्या तुमने आँसू के महत्व को समझ लिया, मधुरिमा?'' उसने स्नेह से पूछा।

''हाँ, समझ गई, मेरे स्वामी'', वह विनयपूर्वक बोली।

''तब तुम अपनी सभी बहिष्कृत प्रजा के साथ अपने राज्य में वापस लौट चलो,'' राजा ने कहा।

महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ-२८

प्रभाव और प्रभाव

विख्यात भारतीय वैज्ञानिक सर सी.वी. रामन (१८८८-१९७०) विदेशों में विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों के लिए उत्सुकता के विषय थे। ऐसा इसलिए था, क्योंकि भारत अंग्रेजों के अधीन था और इसके बारे में लोगों में यह धारण बनाई गई थी कि किसी क्षेत्र में यह देश कुछ भी उल्लेखनीय उपलब्ध करने के योग्य नहीं है। परन्तु, कोलकाता विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर डॉ. चन्द्रशेखर वेंकटरामन ने प्रकाश की आणविक संरचना में एक नये प्रकाशीय प्रभाव की खोज के द्वारा पश्चिम जगत को चकित कर दिया।

उनकी खोज की सामग्री १९२८ में प्रकाशित की गई। उस समय के विख्यात वैज्ञानिकों को आश्चर्य हुआ और इनके सिद्धान्त की पूरी जाँच की गई। परन्तु निस्सन्देह उनकी खोज की प्रामाणिकता में कोई कमी नहीं पाई गई।

सन १९३० में सर सी.वी.रामन को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनका आविष्कार 'रामन प्रभाव' के नाम से विख्यात है।

जब १९५५ में उनके आविष्कार की रजत जयन्ती मनाई जा रही थी तब वे पेरिस में थे। फ्रांसिसी वैज्ञानिकों और विद्वानों ने उनके लिए स्वागत समारोह का आयोजन किया। पार्टी के दौरान एक ट्रे में मदिरा के चमकते गिलासों के साथ एक बैरा उनके पास आकर खड़ा हो गया। डॉ.रामन ने ध्यान दिया कि ट्रे में फलों के रस का या सॉफ्ट ड्रिंक का एक भी गिलास नहीं है। उन्होंने धीरे से बैरा को जाने का संकेत दिया। पर बैरा संकेत को न समझ सका और उनके वहाँ से हट कर चले जाने के बाद भी इनका पीछा करता रहा। वे दूसरे अतिथियों का ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट करना नहीं चाहते थे कि वे मदिरापान नहीं करते।

इसी कारण से वे किसी न किसी के साथ बात करते हुए व्यस्त रहने का प्रयास करते थे। परन्तु वह बैरा उन्हें नहीं छोड़ रहा था। उसने

अविचलित धैर्य के साथ उस महान हस्ती को हर आदमी के ध्यान का केन्द्र बना दिया।

एक महिला ने उस स्थिति को देखकर सुनिश्चित रूप से यह समझा कि वैज्ञानिक ने बैरा को देखा नहीं। वह उनके निकट आई और ट्रे की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया। डॉ.रामन के पास यह स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं रह गया था कि वे मद्यपान नहीं करते।

''परन्तु सर, मैं आपके लिए सबसे स्वादिष्ट ड्रिंक चुनती हूँ। मैं विश्वास दिलाती हूँ कि जब आप इसकी एक चुस्की लेंगे तब आप मेरे परोस के लिए मुझे अवश्य धन्यवाद देंगे।'' मधुर-प्रकृति उस महिला ने बड़े आत्मविश्वास के साथ घोषणा की और ट्रे में से एक गिलास उठाकर डॉ.रामन को देने के लिए खड़ी हो गई।

''आपके परोस की कृपा के लिए यथावत धन्यवाद। परन्तु, मुझे खेद है, मैं मद्यपान नहीं करता।'' वैज्ञानिक ने विनम्रता के साथ कहा।

''लेकिन इस छोटी-सी सेवा के माध्यम से मैं आप के साथ परिचय बढ़ाना चाहती थी। इसके बाद मैं आपसे यह अनुरोध करती कि आप मेरे लिए अपनी विख्यात खोज 'रामन प्रभाव' का

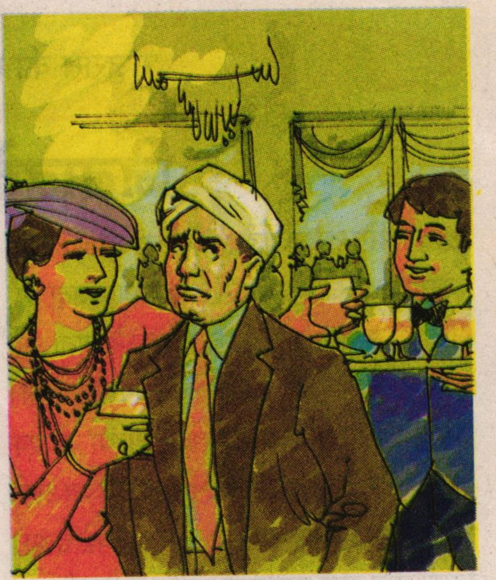

प्रदर्शन करें।'' महिला ने आग्रह किया। तब तक अनेक अतिथि उनके संवाद को सुनकर एकत्र हो गये और उस प्रख्यात व्यक्ति की प्रतिक्रिया सुनने के लिए प्रतीक्षा करने लगे।

''मैं बड़ी खुशी से शराब पर रामन प्रभाव का प्रदर्शन करूँगा यदि आप किसी दिन मेरी प्रयोगशाला में आने का कष्ट करें। परन्तु कृपया रामन पर शराब का प्रभाव प्रदर्शित करने की मेहरबानी से मुक्त करें!'' डॉ.रामन ने मुस्कुराते हुए कहा। अन्त में हँसी के ठहाकों से महिला शरमाती हुई शान्त हो गई। *(एम.डी.)*

प्रश्नोत्तरी-१ फरवरी २००८ उत्तर:

१. चण्डीगढ़ में रॉक गार्डेन, २. हावड़ा, बेलूर मठ; ३. फतेहपुर के फोर्ट सिटी में बुलन्द दरवाज़ा; ४. जिम कॉरबेट- उत्तराखण्ड के राम गंगा में कॉरबेट नेशनल पार्क; ५. कल्याण सागर सरोवर, कूर्मा पीठ, त्रिपुरा।

गुजरात की एक लोक कथा

निनानवे का फेरा

चन्दन और नन्दन पड़ोसी थे। चन्दन एक धनी व्यापारी था, जबकि नन्दन एक गरीब मजदूर था, जो हर रोज सुबह काम की तलाश करने जाता और शाम को थोड़ी बहुत कमाई करके घर लौटता था। यद्यपि चन्दन के पास वह सब कुछ था जो एक धनी आदमी के पास होना चाहिये, फिर भी वह अपने धन को अनावश्यक कामों पर खर्च नहीं करता था। किसी तरह दोनों पड़ोसियों में दोस्ती हो गई।

नन्दन और उसकी पत्नी चारुमती अपने मित्रों को खिलाना-पिलाना पसन्द करते थे। उनके घर में दिन या रात के भोजन पर प्रायः मेहमान आया करते। चारुमती कभी महंगा खाना नहीं पकाती थी, पर जो सादा खाना बनाती थी, वह स्वादिष्ट होता था और मेहमानों को पसन्द आता था।

जब नन्दन के घर में मेहमान खाना खाते समय हँसते-बोलते तो चन्दन और उसकी पत्नी परमेश्वरी का ध्यान उधर जाता और वे सोचते कि उनका पड़ोसी थोड़ी-बहुत कमाई से इतने मेहमानों को कैसे खिलाता रहता है।

परमेश्वरी और चारुमती भी अच्छी सहेलियाँ थीं। परमेश्वरी अपनी सहेली से यह जानने को उत्सुक थी कि वह और उसका पति इतने खुश कैसे रह पाते हैं। एक दिन परमेश्वरी ने साहस बटोरकर पूछ ही लिया। ''साफ-साफ बताऊँ बहन, मैं खुद भी नहीं जानती कि मेरा पति कैसे अक्सर मेहमानों को ले आता है। वह सिर्फ इतना ही बताता है कि इतने लोग खाने पर आ रहे हैं। और जो कुछ मेरे रसोईघर में होता है, मैं पका देती हूँ। तुम्हारा पति होशियार है और शायद तुम्हारे सवाल का जवाब दे सकेगा।'' चारुमती ने कहा।

परमेश्वरी चारुमती के साथ हुई अपनी बातचीत के बारे में पति से बताने के लिए मौके का इन्तजार करती रही। आखिर जब चन्दन ने अपनी पत्नी का सवाल सुना तो वह हँस पड़ा मानो उसे उसका उत्तर मालूम हो। ''परमेश्वरी, मेरी प्रिय पत्नी, यह बहुत सरल है। तुम्हारी सहेली और उसका पति का जीवन चिन्ता रहित इसलिए है कि वे अभी तक निनानवे के फेरे में नहीं पड़े। एक बार वे निनानवे के चक्कर में पड़ जायें तो उनके जीवन में ऐसा परिवर्तन आ जायेगा जिसकी उन्होंने कभी आशा नहीं की होगी।''

परमेश्वरी कुछ समझ नहीं पाई। ''क्या आपने निनानवे का फेरा कहा? यह क्या होता है? बताइये तो सही!''

चन्दन ने सीधा जवाब नहीं दिया। ''यह इतनी आसानी से नहीं समझाया जा सकता। पर तुम शीघ्र ही इसे होते हुए देखोगी, तब तुम समझ जाओगी।'' चन्दन ने अपनी पत्नी को कुछ और नहीं बताया। परमेश्वरी अभी भी चकित होकर देखती रही।

परमेश्वरी कुछ दिनों तक चारुमती के बारे में भूली रही। और एक दिन उसे यह जान कर ताज्जुब हुआ, ''मुझे कई दिनों से चारुमती के घर में मेहमानों की आवाज सुनाई नहीं पड़ी।'' अगले कई दिनों तक पड़ोसी के घर में किसी मेहमान को जाते भी नहीं देखा। उसके बदले यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ कि चारुमती और उसका पति

दोनों चटाई बुनने में व्यस्त हैं और उनके आंगन में घास का अम्बार लगा है जो शायद चटाई बुनने के लिए हैं। एक रात परमेश्वरी ने पड़ोसी के घर में रोशनी जलते देखी। झांक कर देखा तो वे रात को भी चटाई बुन रहे थे। यह रात-दिन चलता रहा। ओह! वे पैसा कमाने, और अधिक पैसा कमाने के लिए कर रहे होंगे, परमेश्वरी ने सोचा।

इस विचार से वह कई दिनों तक परेशान रही। वह सबसे ज्यादा परेशान इसलिए थी कि चारुमती ने दोपहर के बाद पहले की तरह गप्प करने के लिए उसके घर में आना बन्द कर दिया। वह अपनी उत्सुकता और चिन्ता भी रोक न सकी।

इसलिए, एक दिन दोपहर के बाद, जब चन्दन घर में नहीं था, वह चारुमती के घर गई। चारुमती ने उठकर उसका स्वागत किया, अपने पास बिठाया

और फिर परमेश्वरी के सामने चटाई बुनने में लग गई। कुछ देर तक हँसी-मजाक चलता रहा। फिर परमेश्वरी ने पूछा, ''मुझसे मिलना बन्द क्यों कर दिया चारुमती? तुम और तुम्हारे पति हमेशा चटाई बुनते रहते हैं; क्यों? क्या इन दिनों उन्हें कोई काम-धाम नहीं मिल रहा है?''

चारुमती ने अपनी सहेली की आँखों में देखा। ''कृपया यह देखकर चिन्तित न हों कि मुझमें और मेरे पति में कुछ परिवर्तन आ गया है। हमलोगों ने केवल अपनी जीवनशैली बदलने का निश्चय किया है।''

परमेश्वरी को चारुमती की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। क्या वह मुझसे कुछ छिपा रही है? उसे सन्देह हुआ। वह बोल पड़ी, ''मुझे गलत नहीं समझना। पर, तुम किसी मुसीबत में हो तो मुझे बताने में संकोच न करो। मैं तुम्हें मुसीबत से निबटने के लिए काफी धन दे सकती हूँ। मैं अपने पति को नहीं बताऊँगी और न तुम्हें अपने पति को बताने की जरूरत है।''

चारुमती को अपनी सहेली से इतनी कृपा की आशा नहीं थी। ''नहीं परमेश्वरी, वैसा कुछ नहीं हुआ है। मेरे पति को काम मिल जाता है, पर वह कमाई में कुछ और जोड़ना चाहता है।''

''लेकिन क्यों चारुमती?'' परमेश्वरी ने पूछा।

''ठीक है, मैं बताती हूँ, क्यों, पर ध्यान रहे, अपने पति को एक शब्द नहीं बताना।''

''चारुमती, मैं वादा करती हूँ'', परमेश्वरी बोली।

''यह कुछ ही दिन पहले हुआ'', चारुमती ने बताना शुरू किया। ''एक दिन जब मेरा पति काम से घर लौटा और दरवाजा खोला तो उसने एक थैला देखा जिसका मुँह कस कर बांधा हुआ था। उसे वह लेकर घर के अन्दर आया। जब उसने उसे खिड़की पर रखा तो उसे सिक्कों की खनखनाहट सुनाई पड़ी।''

''क्या वे सोने के सिक्के थे? तब तो तुम अचानक धनी बन गई होगी!'' परमेश्वरी ने अपनी खुशी प्रकट करते हुए कहा।

''मेरी सहेली, अधीर न बनो, मेरी बात सुनो।'' चारुमती ने फिर कहना शुरू किया, ''मेरे पति ने थैले का मुँह खोला और जमीन पर सिक्के फैला दिये। वे चाँदी के सिक्के थे। फिर उसने उन्हें गिना।

वे निनानवे थे। उसे शक हुआ कि गिनने में उससे गलती हुई है। इसलिए उसने सिक्कों को दुबारा गिना। वे निनानवे ही थे। फिर भी उसे विश्वास नहीं हुआ। इसलिए उसने उन सिक्कों को गिनने के लिए मुझसे कहा। मैंने भी सिक्कों को गिना। मेरे गिनने पर भी वे निनानवे थे।''

हमलोगों ने एक दूसरे को देखा। ''एक सिक्का गायब क्यों है?'' मेरे पति ने मुझसे पूछा। ''हाँ, सौवां सिक्का कहाँ गया?'' हमलोगों को कोई जवाब नहीं सूझा। अचानक उसने कहा, ''मैं जानता हूँ कि क्या करना चाहिये।'' फिर उसने अपनी मजदूरी से एक रुपया निकाल कर उसमें मिला दिया और सभी सौ सिक्कों को थैले में रख कर और उसका मुँह बन्द कर एक तरफ रख दिया।

''तब फिर क्या हुआ?'' परमेश्वरी ने उत्सुक होकर पूछा। उसे लगा कि सुनने के लिए अभी और कुछ शेष है।

''फिर मेरे पति ने उस थैले में हर रोज एक सिक्का डालने का निश्चय किया। और इस तरह बचत करनी शुरू की। कुछ दिन वह काम पर नही जाता और घर पर च[illegible]याँ बुनता है। चटाइयों की ब्रिकी से अ[illegible]ें की थैली में डाल देते हैं।''

[illegible]मती; पर तुम्हारे मेहमानों का क्या हुआ? आजकल वे तुम्हारे घर आते हुए दिखाई नहीं देते?'' परमेश्वरी ने टिप्पणी की।

''अच्छा! वे लोग! अब वे लोग नहीं आते। ऐसा नहीं है कि हम उन्हें बुलाते नहीं, पर कुछ लोग तो यहाँ से चले गये हैं और दूसरे लोगों ने

हमें व्यस्त देख कर आना बन्द कर दिया। फिर भी, हम उनकी कमी महसूस नहीं करते।''

परमेश्वरी ने अब अनुभव किया कि कैसे 'निनानवे' के कारण उसके पड़ोसी के जीवन में परिवर्तन आ गया। जो भी हो, उसने वचन का पालन किया और अपने पति को इसके बारे में नहीं बताया, जिसे, सौभाग्य से, अपने पड़ोसी के बारे में सुनने के लिए समय नहीं था। एक चतुर व्यक्ति होने के नाते उसने अपनी पत्नी से यह रहस्य गुप्त ही रखने का निश्चय किया कि अपने पड़ोसी की जीवन-शैली में परिवर्तन लाने में वही स्वयं जिम्मेदार है। चन्दन और नन्दन दोनों अच्छे मित्र बने रहे।

क्या अनुमान कर सकते हो कि चन्दन का रहस्य क्या था?

चिरस्मरणीय ऐतिहासिक घटनाएँ-७

वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

यह वह समय था, जब मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए भारतीय वीर अपनी जान की भी परवाह किये बिना पराये शासकों के दमन के विरुद्ध बग़ावत करने पर तुल गये और लड़ाई शुरू कर दी। भारत में व्यापार करने आये अंग्रेज़ों ने अपनी ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा देश को अपने वश में करने का काम शुरू कर दिया। वह १८५७ का वर्ष था। तब तक अंदर ही अंदर सुलगती हुई विद्रोह की ज्वाला एकदम ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ी। दुराक्रमणकारी स्थानीय संस्थानों को किसी न किसी बहाने की आड़ में अपने वश में करते जा रहे थे। उसी प्रकार उन्होंने झांसी पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। तब झाँसी के दुर्ग के बुर्ज से एक कंठस्वर बिजली की तरह कड़क उठी, "झाँसी को छोड दो। दम हो तो कोशिश करके देख लो।"

ऐसे दृढ़ निर्णय के साथ गरजनेवाला कोई राजा नहीं था। वह थी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, जो बीस साल की उम्र की भी नहीं थी।

१८३६ के दौरान मोरोपंत तांबे, भागीरथीबाई के एक पुत्री जन्मी, जिसका नाम रखा गया मणिकर्णिका। बचपन से ही उसने पढ़ाई व खेल कूद में विलक्षण प्रतिभा दिखायी। सात साल की उम्र में ही उसने घुड़सवारी सीखी। साथ ही तलवार चलाने में, धनुर्विद्या में निष्णात हुई। बालकों से भी अधिक सामर्थ्य दिखाया। बचपन में उसने पिता से कुछ पौराणिक वीरगाथाएँ सुनीं। वीरों के लक्षणों व उदात्त गुणों को उसने अपने हृदय में संजोया। उस असाधारण कन्या को

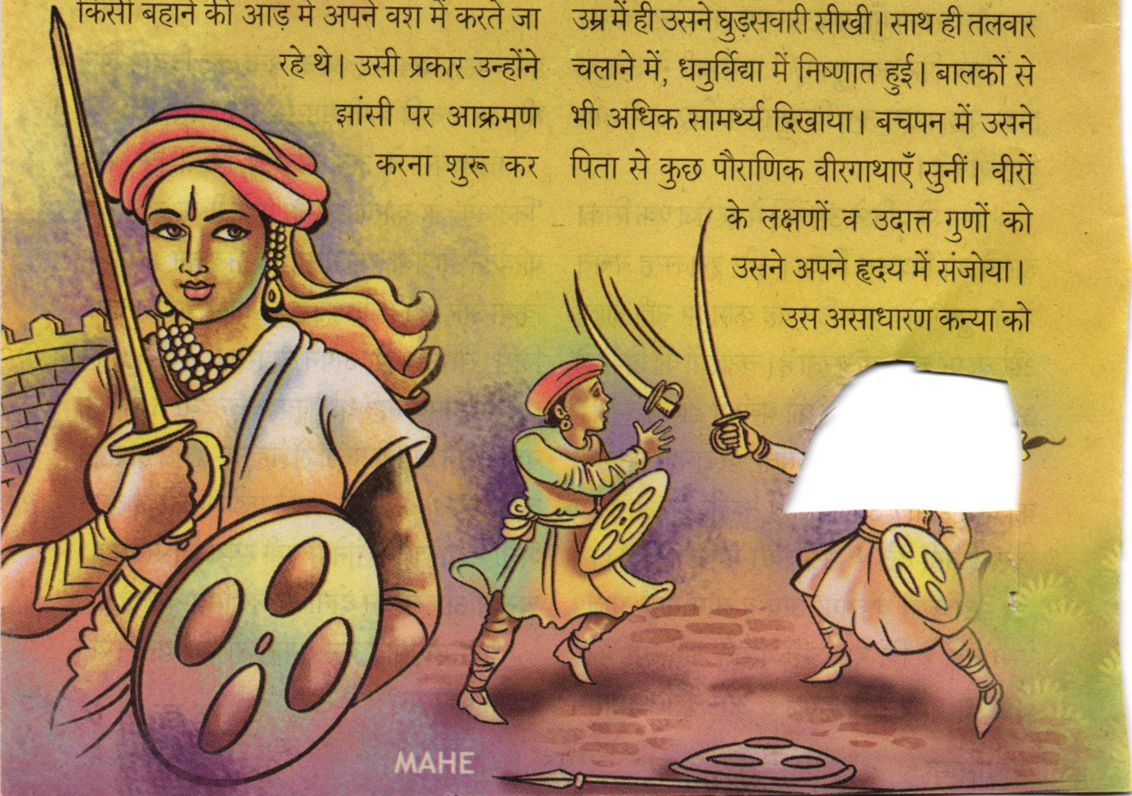

देखकर मुग्ध झाँसी के कुछ वंश रक्षक पुरोहितों ने उसका विवाह राजा गंगाधरराव से कराया। यों मणिकर्णिका झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हुई। उसका एक बेटा भी हुआ, पर दुर्भाग्यवश वह जल्दी ही मर गया। विषादग्रस्त दंपति ने एक लड़के को गोद लिया और उसका नाम रखा, दामोदरराव। इसके कुछ समय के बाद राजा की मृत्यु हो गई, जिससे अपने अठारहवें साल में ही लक्ष्मीबाई विधवा हो गयी। फिर भी, बिना भय के उसने शासन का भार सक्षमता के साथ संभाला। अपनी रानी को लोग देवी मानकर उसका आदर करते थे।

भारतीय रिवाजों के अनुसार दत्तक पुत्र भी सगे पुत्र के समान होता है। पर, गवर्नर जनरल लार्ड डलहौसी ने विचित्र शर्तें रखीं। उसने घोषणा की कि उन संस्थानों को कंपनी अपने वश में कर लेगी, जिनका कोई वारिस नहीं है। रानी ने इस शर्त को मानने से इनकार किया, जिससे झाँसी पर विजय पाने के लिए उसने सेना भेजी।

साहसी सैनिकों की सहायता लेकर रानी ने किले की रक्षा के लिए आवश्यक प्रबंध किया और चौबीसों घंटे वह पर्यवेक्षण करने लगी। माँ जैसी अपनी रानी के लिए, पवित्र स्वतंत्रता के लिए वीर सिपाही अपने प्राण भी न्योछावर करने को सन्नद्ध हो गये। हर बुर्ज के पास, द्वार के समीप बंदूकों से लैस सैनिकों को उसने खड़ा किया और किले की रक्षा के लिए आवश्यक प्रबंध किया। स्वयं पर्यवेक्षण का काम संभालते हुए उसने सैनिकों में स्फूर्ति व प्रेरणा भर दी। सफ़ेद वस्त्र पहनकर, सफेद घोड़े पर सवार होकर उसने स्वयं सेना का नेतृत्व संभाला। घोड़े की बागडोर को मुँह में रखकर दोनों हाथों से तलवार चलाकर उसने शत्रुसेना के सिरों को काट डाला। अंत में शत्रुसेना उसकी वीरता के सामने टिक न सकी और दुम दबाकर भाग गयी।

कुछ महीनों तक शांति छायी रही। ब्रिटिश शासक इस हार को पचा नहीं सके। उन्होंने शक्तिमान सेनानायक सर हाग रोज की सहायता माँगी। १८५८ में ब्रिटिश सैनिकों ने झाँसी के क़िले को घेर लिया। उनके पास बड़ी मात्रा में बंदूकें और तोपें थीं। साथ ही उनके पास टेलिस्कोप भी थे,

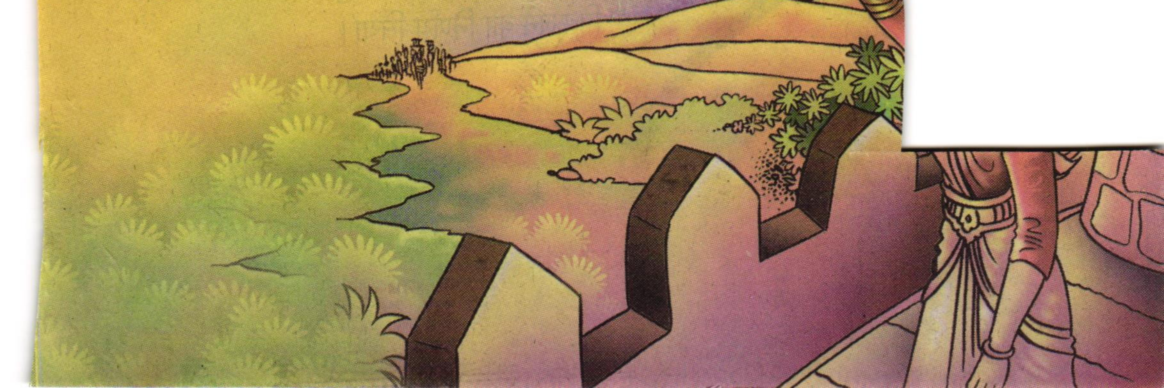

जिनके द्वारा वे दूर तक देख सकते थे। फिर भी ब्रिटिश सेना पर झाँसीबाई आकस्मिक हमला करती थीं और कुछ समय तक वह ब्रिटिश सेना को किले के अंदर घुसने से रोकने में सफल हुई।

इस घटना के बारे में रोज ने इसके बाद लिखा, "धैर्य, साहस, बुद्धि, धुन, आग्रह में रानी कितनी ही प्रशंसनीय है। उसने अपने अनुचरों के प्रति जो दया दर्शायी, वह अतुलनीय है।" उसकी सेना ने उसे बहुत ही ख़तरनाक विद्रोही नायक बताया। ब्रिटिशवालों ने उसे असमान साहसी माना।

फिर भी, भला उन शक्तिमान दुराक्रमणकारियों का सामना कब तक वह कर पाती, उसका सैनिक बल तथा हथियार बड़ी ही तेज़ी से कम होते गये। फिर भी किले के ऊपर खड़े होकर उसने दूर जो दृश्य देखा, उससे वह बेहद खुश हुई। झाँसी की ओर बहुत बड़ी सेना बढ़ती चली आ रही थी। मराठा वीर तांतिया टोपे उस सेना का नेतृत्व कर रहे थे। नगर को शत्रुओं के घेराव से बचाने के लिए रानी ने तोपों से उसकी अभ्यर्थना की, क्योंकि स्वतंत्रता का वह वीर सहायता करने सेना सहित आ रहा था। उसने पीछे से ब्रिटिश सेना पर हमला किया। आगे वीर रानी और पीछे दो हज़ार सैनिकों के साथ मराठा बाघ। शत्रु सेना घबरा गयी।

घबरायी ब्रिटिश सेना क़िले की ओर बढ़ती गयी। ऐसे जटिल समय पर किले के एक रक्षक ने घूस लेकर धोखा दिया। शत्रुओं के प्रवेश के लिए उसने क़िले का एक फाटक खोल दिया। अंग्रेजी सेना क़िले में घुस आयी। शत्रुसेना बच्चों, वृद्धों और स्त्रियों को भी बिना संकोच के मार डाला। सब कुछ लूट लिया। क्रूर शत्रुओं के अनुचित व्यवहारों के वश में न आने के लिए हज़ारों स्त्रियों ने वहाँ के गहरे कुओं में गिरकर प्राण त्याग दिये। आकाश हाहाकारों से प्रतिध्वनित हो उठा।

इन दृश्यों को देखकर रानी की आँखों में आँसू उमड़ आये। गला भर आया। एक, या तो शत्रुओं के सामने झुक जाना है या दूसरा, जब तक सांस है, लड़ते रहना है। नहीं तो, वहाँ से बचकर निकलकर फिर से सेना को इकट्ठा करके शत्रुओं से लड़ना है। उसके सामने ये तीन ही रास्ते थे। रानी ने तीसरे रास्ते को चुना और वहाँ से बच निकलने का निर्णय लिया।

वह चांदनी रात थी। रानी बचकर निकल न जाए, इसके लिए क़िले के चारों ओर शत्रु सैनिक तैनात कर दिये गये। भवन से सटकर बहुत ही नीचे घोड़ा खड़ा हुआ था। रानी ने शिशु को पीठ में बांध लिया और सबकी नज़र से बचते हुए रस्सी की सहायता से नीचे उतर कर घोड़े पर बैठ गयी। और ऐसे द्वार से बाहर आयी, जो किसी को मालूम नहीं था। बाहर विश्वासपात्र स्त्रियाँ और पुरुष उसका इंतज़ार कर रहे थे। वे निधडक, रानी की आज्ञा के अनुसार, इधर-उधर की बातें करते हुए, हँसते हुए आगे बढ़े।

कुछ ब्रिटिश सैनिकों ने उनसे पूछा, "तुम लोग कौन हो?" "ओर्छा से आये आपके मित्र हैं। आपकी मदद करने आये हैं।" उन्होंने कहा। रानी पुरुष के वेष में थी। उसके चेहरे पर किसी प्रकार का भय नहीं था।

शत्रुओं को थोड़ा भी संदेह नहीं हुआ। उसी समय रानी का दलनायक दूसरी जगह पर चार सौ सैनिकों को लेकर शत्रु सेना से लड़ रहा था। सवेरा होते-होते वे सब के सब मारे गये।

जब हाग रोज को पता चला कि रानी क़िले से बचकर निकल गयी तो वह आग बबूला हो उठा। उसने जनरल डौकर को हुक्म दिया कि वह रानी का पीछा करे और उसे पकड़ ले। रानी की सेना और ब्रिटिश की सेना के बीच घोर लड़ाई हुई। रानी लक्ष्मी बाई ने हठात तलवार चलाकर डौकर को नीचे गिराया और वहाँ से बच निकली। वह मार्ग कंकडों, पत्थरों से भरा हुआ था। फिर भी शिशु को पीठ पर बांधे घोड़े पर लगभग सौ मीलों तक की यात्रा की। वह कल्पी पहुँची। गम्य स्थान पर पहुँचते ही घोड़ा जमीन पर गिरकर मर गया। हाग रोज सेना लेकर कल्पी पहुँचा और लड़ाई लड़कर उस राज्य को अपने वश में कर लिया। पर, रानी का कहीं पता न चला।

रानी ग्वालियर पहुँची। अंग्रेज़ों का

अनुयायी एक शासक किले को छोड़कर वहाँ से भाग गया। उस राज्य की प्रजा के आनंद की सीमा न रही। उन्होंने रानी और उसके साथ देशभक्त तांतिया टोपे और राव साहेब पेशवा का पूरा-पूरा समर्थन किया। बहुत बड़ी संख्या में सैनिक भर्ती किये गये।

सर हाग रोज के नेतृत्व में उस राज्य पर हमला हुआ। रानी ने डटकर उनका सामना किया। परंतु क्रमशः उसकी सेना की संख्या कम होती गयी। फिर भी उन्हें प्रोत्साहित करते हुए वह खुद लड़ाई के मैदान में उतरी और लड़ने लगी। फिर भी हाग रोज की ऊँटों की सेना का वह मुक़ाबला नहीं कर पायी।

उसने जान लिया कि ब्रिटिश सेना उसे चारों ओर से घेरती आ रही है। केवल बीस सैनिकों और दो परिचारिकाओं को लेकर शत्रु सैनिकों के उस वलय से उसे बाहर निकलना था। इतने में उसे एक रोदन सुनायी पड़ा। मुड़कर देखा कि एक ब्रिटिश सैनिक ने उसकी परिचारिका को बंदूक चलाकर मार डाला। क्रोधित होकर रानी ने तलवार चलाकर एक ही वार में उस ब्रिटिश सैनिक का सिर काट डाला। मार्ग में उसे एक छोटी नदी को पार करना पड़ा। इतने में शत्रुसेना ने उसे घेर लिया। अकेले ही उसने अनेकों शत्रु सैनिकों का सामना किया। बहुतों का संहार किया। कितने ही सैनिकों को घायल किया। आखिर घायल होकर वह धराशायी हो गयी। पुरुष वेष में शत्रु सैनिकों ने उसे नहीं पहचाना। उसे दलनायक समझकर उसे वहीं छोड़कर चले गये। रानी के विश्वासपात्र अनुचर उसे पास की एक झोंपड़ी में ले गये। उस स्थिति में उसने अपने अनुचरों को बताया कि मेरे मर जाने के बाद मेरे शरीर को जला देना। यह भी बताया कि शत्रु उसके मृत शरीर को भी नहीं देखें। इसके कुछ क्षणों के बाद वह मर गयी। स्वतंत्रता के लिए असमान धैर्य और साहस के साथ लड़नेवाली उस वीर नारी शिरोमणि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की जब मृत्यु हुई, तब उसकी उम्र इक्कीस साल ही थी।

(ए.के.डि.)

न्यायपूर्ण फैसला

बादशाह अकबर ने सभा को संबोधित करते हुए पूछा, ''हमारी न्याय व्यवस्था ठीक तरह से काम कर रही है न?''

''बहुत ही अच्छी तरह से काम कर रही है शाहंशाह। हमारे न्यायाधीश न्याय शास्त्र में निपुण हैं। वे ईमानदार हैं, किसी की तरफ़दारी नहीं करते। मुकद्दमों का फ़ैसला वहीं का वहीं करते हैं'', एक दरबारी ने कहा।

''हमारे कानून न्यायपूर्ण हैं। कानून की दृष्टि में सब समान हैं'', एक और दरबारी ने कहा।

बाक़ी दरबारियों ने भी इसी अभिप्राय को व्यक्त किया। किन्तु केवल बीरबल चुप रहा। अकबर ने यह देखकर उससे पूछा, ''क्या तुम समझते हो कि हमारे शासन में न्याय व्यवस्था सन्तोष-जनक नहीं है?'' भौंहें चढ़ाते हुए अकबर ने पूछा।

''ऐसा समझनेवालों में से नहीं हूँ। परंतु अच्छे कानून और अच्छे न्यायाधीशों के होने मात्र से हम यह नहीं कह सकते कि न्याय व्यवस्था ठीक तरह से चल रही है'', बीरबल ने विनयपूर्वक कहा।

इतने में एक सैनिक दरबार में आया। झुककर बादशाह को सलाम करते हुए कहा, ''एक वृद्ध और एक युवक न्याय माँगने के लिए आपके दर्शन करना चाहते हैं।''

''ठीक है, उन्हें दरबार में पेश करो'', अकबर ने हुक्म दिया।

थोड़ी देर बाद वह सैनिक एक वृद्ध और एक युवक को अपने साथ दरबार में ले आया। उस वृद्ध के बाल पक गये थे और उसका चमड़ा झुर्रियों से भरा हुआ था। किन्तु उस वृद्ध की आँखें ज्ञान से प्रज्वलित हो रही थीं। युवक में आत्मविश्वास स्पष्ट दीख रहा था। दोनों ने झुककर बादशाह को सलाम किया।

''तुम दोनों कौन हो? किस काम पर यहाँ आये हो?'', बादशाह अकबर ने पूछा।

''शाहंशाह, मेरा नाम अब्दुल रहमान है। युवकों को कानून की शिक्षा देना मेरा पेशा है।

इसके लिए वे जो रक़म देते हैं, उससे अपना जीवन चला रहा हूँ।'' वृद्ध ने कहा।

''तो फिर तुम्हें किस बात की तकलीफ़ है?'' अकबर ने पूछा।

''प्रमोद बिहारी नामक इस युवक को मैंने कानून की शिक्षा दी। यह जब कानून सीखने मेरे पास आया तो मैंने उससे साफ़-साफ़ कह दिया कि इसके लिए उसे कितनी रक़म देनी होगी। हर महीने के हिसाब से तीन अशर्फ़ियाँ लेता हूँ। एक साल तक यह शिक्षा चालू रहेगी। इसने उस समय कहा था कि मैं ग़रीब हूँ और यह रक़म दे नहीं पाऊँगा। इसपर दया करके मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हें कानून की शिक्षा दूँगा, पर विद्या पूरी करने के बाद जब पहला मुकद्दमा जीतोगे तब मुझे छत्तीस अशर्फ़ियाँ दोगे। इसने मेरी शर्त मान ली। मैंने उसे कानून पढ़ाया। यह बहुत ही अक़्लमंद है, इसलिए इसने कानून की बारीकियों को आसानी से सीख लिया। मुझे पूरा विश्वास हो गया कि यह युवक भविष्य में उत्तम वकील बनेगा। इसे देखकर मुझे बहुत गर्व भी हुआ। मैंने उम्मीद की, पहला मुकद्दमा जीत जाने के बाद यह युवक मेरी रक़म चुकायेगा।'' कहते हुए वृद्ध रुक गया।

''अब रक़म देने से इनकार कर रहा है। यही न?'' बादशाह ने कहा।

''नहीं शाहंशाह, यह रक़म चुकाने से इनकार नहीं कर रहा है। कहता है कि पहला मुकद्दमा जीतने के बाद रक़म चुकाऊँगा। मुझे भय है कि यह कभी भी संभव नहीं होगा'', वृद्ध ने कहा।

''क्यों?'' बादशाह अकबर ने पूछा।

''अब यह वकील का पेशा अपनाना नहीं चाहता।'' यह पेशा अपनाने पर ही यह मुकद्दमा लड़ सकता है और जीत सकता है। जीतने पर ही मुझे यह रक़म मिलेगी'', चिंता भरे स्वर में वृद्ध ने कहा।

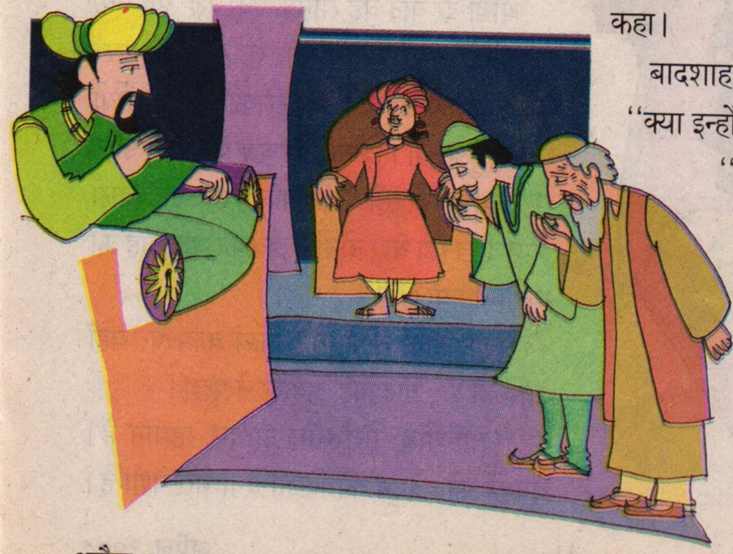

बादशाह ने युवक की ओर मुड़कर कहा, ''क्या इन्होंने तुम्हें कानून की शिक्षा दी?''

''हाँ, बादशाह'', युवक ने कहा।

''कानून की शिक्षा जब दी जा रही थी तब तुमने कोई रक़म इन्हें नहीं दी। है न?'' अकबर ने पूछा।

''हाँ, शाहंशाह'', युवक ने कहा।

''अब प्रथम मुकद्दमा

जीतकर इनकी रक़म चुका सकते हो न!'' अकबर ने कहा।

''हाँ, रक़म चुका सकता हूँ। पर वकील का पेशा अपनाने का मेरा कोई इरादा नहीं है शाहंशाह'', युवक ने कहा।

''क्यों?'' अकबर ने पूछा।

''हाल ही में मेरे संपन्न चाचा की मृत्यु हो गयी। वे धनाढ्य हैं। उनके अनेकों खेत व फलों के बग़ीचे हैं। उनकी कोई संतान नहीं। उन्होंने अपनी पूरी जायदाद मेरे नाम कर दी। अब मैं बहुत बड़ा धनवान हूँ। वकील का काम करने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं। मैं अपने चाचा की जायदाद संभालना चाहता हूँ'', युवक ने स्पष्ट रूप से कारण बताया।

''इसका यह मतलब हुआ कि प्रथम मुकद्दमा जीतने पर ही तुम अपने गुरु को रक़म चुकाओगे'', अकबर ने कहा।

''हमारे बीच में हुआ निर्णय यही है प्रभु,'' युवक ने कहा। ''क्या यह सच है?'' पूछते हुए बादशाह वृद्ध की ओर मुडे।

''हाँ, बादशाह'', वृद्ध ने धीरे-धीरे कहा।

''तब इस युवक पर हम कैसे कार्रवाई कर सकते हैं? कैसे आपकी मदद कर सकते हैं?'' अकबर के प्रश्नों में उनकी असहायता स्पष्ट दीख रही थी।

''शाहंशाह'' उस युवक ने कहा।

बादशाह ने कहा, ''कहो, तुम्हें क्या कुछ कहना है?''

''मैं जब वकील का पेशा अपनाकर प्रथम मुकद्दमा लड़ूँगा और जीतूँगा, तब अवश्य ही दूसरे ही क्षण मेरे गुरु को जो रक़म देनी है, दे दूँगा। ये बहुत ही अच्छे व्यक्ति हैं। कानून में निपुण हैं। इन्हीं की वजह से मैंने कानून संबंधी ज्ञान पाया। मुझे भली भांति मालूम है कि कानून कैसे काम करता है?'' युवक ने कहा।

बादशाह के मन में वृद्ध के प्रति पूरी सहानुभूति थी पर वे वृद्ध की सहायता करने की स्थिति में नहीं थे। किन्तु वृद्ध को उनकी सहानूभूति नहीं, पैसे चाहिये, सिखायी गयी विद्या का प्रतिफल। उन्होंने दरबारियों की ओर देखा।

''इस वृद्ध को प्रतीक्षा तब तक करनी होगी,

जब तक यह युवक मुकद्दमा जीतकर रक़म नहीं चुकायेगा।'' दरबारियों में से सबसे अधिक उम्र के एक वृद्ध ने कहा।

''यही न्याय सम्मत है''. शेष दरबारियों ने भी उसका समर्थन करते हु[illegible]।

''युवक ने जो कहा, सच है, [illegible] ही न्याय संगत है। जब तक वह पहला मुकद्दमा नहीं जीतता, तब तक रक़म चुकाने की ज़रूरत नहीं।'' बीरबल ने युवक की ओर हँसते हुए देखकर कहा।

युवक भी हँस पड़ा। वृद्ध पूरी उम्मीद लेकर आया था कि उसके साथ न्याय होगा। उसे बादशाह अवश्य ही उसकी रक़म दिलवायेंगे। पर उसकी आशा निराशा में बदल गयी।

''तुम्हें अवश्य रक़म मिलनी है। परंतु तुम्हारे और युवक के बीच में जो समझौता हुआ है, उसके अनुसार तब तक तुम्हें इंतज़ार करना होगा, जब तक यह पहला मुकद्दमा नहीं जीतता।'' बादशाह ने वृद्ध से कहा।

बादशाह का निर्णय सुनकर वृद्ध की आँखों में आँसू भर आये। वह कुछ करने या कहने की स्थिति में नहीं था, इसलिए चुप रह गया।

युवक ने वृद्ध को व्यंग्य भरी दृष्टि से देखा और फिर बादशाह की ओर मुड़कर कहा, ''मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ प्रभु। मुझे पहले ही मालूम था कि प्रभु अवश्य ही न्यायपूर्ण फैसला सुनायेंगे।''

इसके बाद दोनों ने झुककर बादशाह को सलाम किया और दरबार से बाहर जाने लगे।

''एक क्षण'', बीरबल के कंठस्वर को सुनकर युवक ने मुड़कर देखा। वृद्ध भी खड़ा रह गया।

''तुमने गुरु को वचन दिया था न कि प्रथम मुकद्दमा जीत जाने पर गुरु को जो रक़म चुकानी है, चुकाऊँगा।'' बीरबल ने पूछा।

''हाँ, अवश्य दूँगा। अपना वचन निभाऊँगा'', युवक ने जवाब दिया।

''बहुत अच्छा। अभी दरबार में तुम अपने पहले मुकद्दमे में जीत गये। इसीलिए...,'' कहता हुआ बीरबल अचानक रुक गया।

युवक चौंक उठा और ताड़ गया कि गुरु को रक़म चुकानी ही होगी। इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता ही नहीं। वृद्ध ने बीरबल और बादशाह को कृतज्ञता जतायी।

''तुमने अद्भुत फैसला सुनाया बीरबल'', कहते हुए बादशाह ने बीरबल को प्यार से गले लगाया।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-३

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by
Infosys® FOUNDATION, Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

हमारे देश के २८ राज्यों तथा ७ केन्द्र शासित राज्य क्षेत्रों के विषय में अपने ज्ञान की जाँच करो।

**यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु. ५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना चाहियेः १. एक कागज पर उत्तर लिख लो; २. अपना नाम, उम्र तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो; ३. लिफाफे पर **चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-३** लिखो; ४. डाक से भेज दो जो हमें ३० अप्रैल से पहले मिल जाये। उत्तर जून २००८ के अंक में प्रकाशित होंगे।

१. किस राज्य को भारत का 'गन्ने का कटोरा' कहा जाता है?
२. सन् १९४७ में एक राज्य ने वैश्व मताधिकार के आधार पर निर्वाचन करवाया। किस राज्य ने?
३. रायटर्स बिल्डिंग - यह कहाँ स्थित है? इसका क्या महत्व है?
४. किस राज्य को 'वनस्पति शास्त्री का स्वर्ग' (बोटैनिस्ट्स पैराडाइज) कहा जाता है?
५. उड़ीसा का प्राचीन नाम क्या है?
६. एक केन्द्र-शासित राज्य क्षेत्र तीन भिन्न-भिन्न राज्यों में स्थित है। वह केन्द्र-शासित राज्य क्षेत्र (यू.टी.) कौन-सा है?
७. एक राज्य अपने गुण सूचक नाम "देवभूमि" से लोकप्रिय है वह कौन-सा राज्य है?
८. लाल नदी देखने के लिए कहाँ जाओगे? इसका वास्तविक ना
९. किन दो राज्यों की राजधानी एक ही है?
१०. राज्य सभा में किस राज्य के अधिकतम स्थान हैं? कितने?
११. कुरुक्षेत्र- वह स्थान जहाँ महाभारत युद्ध हुआ था, कहाँ स्थित
१२. किस राज्य में उर्दू राजकीय भाषा है?

शान्ता का विशु

शान्ता बहुत उत्तेजित थी। उसकी माँ ने उसे इस शुभ समाचार के साथ जगाया कि वे गर्मी की छुट्टियों में केरल जा रहे हैं। तभी उसे याद आया कि मलयालियों का एक सबसे महत्वपूर्ण त्योहार विशु गर्मी की छुट्टियों के समय ही आता है। ''मम्मी, क्या विशु के लिए हमलोग केरल में होंगे?'' उसने पूछा। उसकी माँ मुस्कुराती हुई बोली, ''हाँ, इस बार विशु तुम्हारे दादा-दादी के साथ मनायेंगे।''

एक लम्बी रेलयात्रा के बाद वे केरल पहुँच गये। शान्ता खुशी के मारे पागल सी होती दौड़ कर दादी की भुजाओं में सिमट गई। ''दादी माँ, विशु कब है?'' वह फूट पड़ी। दादा ने उत्तर दिया, ''विशु कल है, लेकिन पहले अन्दर तो आओ!''

जब दादा ने फार्म के पुराने सेवक चिन्नन और कन्नन को बुला कर विशु कानी के लिए जरूरत की सभी चीजों को इकट्ठा करने के लिए कहा, तब शान्ता ने उनके साथ जाने की जिद की।

वह चिन्नन के साथ उनके घरेलू उद्यान के अन्दर गई, जबकि कन्नन कहीं और चला गया। ''वह अकेला किधर जा रहा है?'' उसने चिन्नन से पूछा।

''वह शीघ्र ही हमलोगों के साथ शामिल हो जायेगा,'' चिन्नन ने इतना ही कहा।

रास्ते में उसने आम का पेड़ देखा जिस पर दादा ने उसके लिए पिछली छुट्टियों में झूला बाँध दिया था। पके हुए आम शाखाओं से लटक रहे थे। चिन्नन ने दर्जन भर आम तोड़ कर अपनी बेंत की टोकरी में डाल दिया। शान्ता ने उन्हें सूंघा। मुम्बई के आमों से उनमें बेहतर खुशबू थी!

''इसके बाद क्या?'' शान्ता ने चिन्नन से पूछा।

''देखते रहो, चलो, आओ!'' उसने कहा।

शीघ्र ही वे काँटेदार बाड़े के निकट पहुँचे जिससे उनका उद्यान घिरा हुआ था। और देखो! एक आश्चर्य भरे दृश्य को देख वह विस्मित रह गई। वह अमलतास का एक ऊँचा शानदार पेड़ था जिसकी शाखाओं पर सुनहले पीले फूलों के गुच्छे लटक रहे थे। सूर्यास्त की रोशनी में खिले फूल सोने के चमकते सिक्कों के ढेर-से झलक रहे थे। इनसे कल भगवान की प्रतिमा सजायी जायेगी, चिन्नन ने समझाया। शान्ता ने उसे पेड़ पर चढ़ते और सावधानी से गुच्छों को तोड़ते हुए देखा। कन्नन ने फूलों को तोड़ कर शान्ता को बढ़ा दिया। शान्ता ने उन्हें टोकरी में रख लिया।

''बस! क्या हो गया?'' उसने पूछा।

''ओह, नहीं! अभी और है!'' कन्नन ने कहा और वह घर की ओर वापस मुड़ा। पास ही कटहल का एक पेड़ था। पेड़ की धड़ से कटहल के फल लटक रहे थे और जमीन को लगभग छू रहे थे। वे इतने सारे थे कि उनकी गिनती करते हुए भूल गई। शान्ता चकित हो वह पेड़ को निहारती रही।

चिन्नन ने सावधानी से पेड़ के निचले हिस्से की टहनियों को काटा और दूध सुखाने के लिए उन्हें जमीन पर छोड़ दिया। ''मैं बाद में आकर इन्हें घर ले जाऊँगा।'' कन्नन बोला।

फिर वह आमों और फूलों की टोकरी के पास जाकर बैठ गया। ''क्यों चिन्नन?'' शान्ता ने पूछा।

''तुम्हें कन्नन यहाँ से घर ले जायेगा,'' उसने कहा। कन्नन शीघ्र ही वहाँ आ गया। ''आओ, चलें।'' उसने शान्ता से कहा। चिन्नन को घर पर टोकरी ले जाने के लिए वहीं छोड़ कर शान्ता और कन्नन पिछवाड़े में गये। ''यहीं तुम्हारी दादी सब्जियाँ उगाती है। मैं और चिन्नन बीज बोकर, पानी पटा कर और सब्जियाँ तोड़ कर उन्हें मदद करते हैं।'' उसने समझाया।

''वहाँ हम क्या करेंगे?'' शान्ता ने पूछा। ''हमलोग वहाँ विशुकानी के लिए सब्जियाँ तोड़ेंगे,'' उसने कहा। सब्जियाँ पूजा के लिए? शान्ता को आश्चर्य हुआ, फिर भी वह चुपचाप उसके साथ-साथ गई। वह उसे कुछ लताओं के पास ले गया जो साँपों की तरह जमीन पर फैली हुई थीं। कुछ लताओं में बड़ी-बड़ी ककड़ियाँ लगी थीं। शान्ता कुछ देर तक उन लताओं की भूल भुलैया के बीच खेलती रही और उनके पत्तों में छिपी छोटी-बड़ी ककड़ियों को ढूँढ़ने में मजा लेती रही। कन्नन ने उनमें से कुछ फलों को तोड़ा। फिर वे घर लौट आये। रात का भोजन कर लेने के बाद शान्ता दादा को विशुकानी सजाते हुए देखती रही।

दूसरे दिन सुबह वह चौंकती हुई उठी, जब उसने अपनी आँखों पर दो गीली ठण्ढी हथेलियों को महसूस किया। माँ के स्वर ने स्वागत किया, ''विशु आ गया, मेरी प्यारी बच्ची, उठ जाओ। और जब तक न कहूँ, आँखें

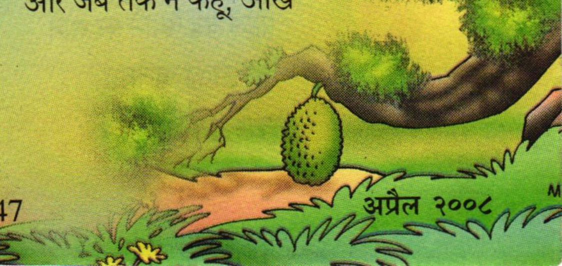

अपने भारत को जानो
प्रश्नोत्तरी

एक प्रसिद्ध इतिहासकार ए.एल.भाषम ने एक पुस्तक लिखी है, द वंडर दैट वाज इण्डिया। निम्नलिखित संकेतों के आधार पर क्या कुछ 'वण्डर्स' को पहचानने का प्रयास कर सकते हो?

१. कुतुब मीनार के परिसर में लोहे का स्तम्भ किसने बनाया?

२. प्रायः किसे दक्षिण का नालन्दा कहा जाता है?

३. सम्राट अशोक को बौद्ध धर्म में किसने दीक्षित किया?

४. किस विदेशी ने सर्वप्रथम कालिदास कृत 'शाकुन्तलम' का अनुवाद किया?

५. किस राजवंश ने सबसे पहले बड़े पैमाने पर सोने का सिक्का चलाया?

(उत्तर पृष्ठ ७४ पर)

बन्द रखना।'' माँ ने कहा। वह शान्ता को पूजा घर में ले गई। ''अब आँखें खोलो,'' उसकी माँ ने कहा।

शान्ता ने आँखें खोलीं। उसके सामने क्या था? भगवान कृष्ण की प्रतिमा सुन्दर सुनहले अमलतास के फूलों से सज्जित। प्रतिमा के दोनों ओर दो दीप प्रज्वलित थे। प्रतिमा के सामने एक बड़ा चिपटा काँसे का पात्र था जिसमें चावल, हरा चना, बटर सेम, अनेक प्रकार के फल तथा सब्जियाँ जिनमें उनके अपने उद्यान के आम और केले थे और ढेर सारी ककड़ियाँ रखी गई थीं। साथ ही बगल में था दो टुकड़ों में तोड़ा हुआ नारियल जिनके अन्दर चाँदी के सिक्के थे। पात्र के दूसरी ओर हाथ से बुने एक शॉल की तह में स्वर्णभूषण लपेटे हुए थे।

ताम्बे की पट्टी के साथ सामने एक दर्पण रखा हुआ था जिसमें शान्ता ने अपने आप को पात्र, पुष्प, फल सब्जी, स्वर्ण तथा नारियल के बीच देखा। इसका क्या अर्थ है? यह सब हम क्यों कर रहे हैं? उसके मन में कितने प्रश्न घुमड़ने लगे।

स्नान करने के बाद इन सारे प्रश्नों की बौछार लिए वह दादा के पास पहुँची। ''रुक जाओ'', मुस्कुराते हुए दादा बोले। उन्होंने उसके हाथ में सुपारी के साथ पान का एक पत्ता और एक रुपये का सिक्का रख दिया। ''यह क्या है, दादा?'' उसने पहला सवाल किया।

दादा ने समझाया। विशु से नया साल शुरू

होता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस दिन पैसे देने और ग्रहण करने से पूरे साल समृद्दि होती है। ''क्या तुम जानती हो कि इस दिन सबसे पहले विशुकानी क्यों देखते हैं?'' दादा ने पूछा।

''नहीं! क्यों?'' शान्ता ने पूछा।

क्या यही सवाल उसके मन में सबसे ऊपर नहीं था?

''हम अधिकांश पर्वों को नई फसल के अवसर पर मनाते हैं।'' दादा ने समझाया। ''विशु भी एक वैसा ही पर्व है। हमलोग अमलतास का उपयोग करते हैं जो इस मौसम में खिलता है। हमलोग सब्जियों, फलों तथा अन्य चीजों का उपयोग करते हैं जो इसी समय उपजते हैं। जब हम दर्पण में अपने को फलों, सब्जियों तथा मौसम की अन्य फसलों तथा इनके अतिरिक्त आभूषणों, सिक्कों व समृद्धि के अन्य प्रतीकों से घिरे हुए देखते हैं, तब हम केवल अपने आप को यही याद दिलाते हैं कि हम उस प्रकृति के एक अंश हैं जिसमें पौधे, पशु तथा पूरी सृष्टि निहित है। विशुकानी हमें यह समझने में मदद करने की कोशिश करता है कि हम सब एक सम्पूर्ण सत्ता के एक अंग हैं। उस दिन दोपहर में शान्ता ने बहुत ही स्वादिष्ठ भोजन किया। भोजन में प्रमुख थे चावल और दालों से बनी यूम्मी पौरिज तथा रसदार मिश्रित सब्जी। मीठा में ताजा कटहल था जो इसी अवसर के लिए तोड़ा गया था।

भोजनोपरान्त शान्ता झूले पर गाँव के अन्य बच्चों में शामिल हो गई। उसने अपने अन्दर एक विचित्र आनन्द का अनुभव किया। अब वह विशु का महत्व जानती थी। इन त्योहारों को मनाना कितना बुद्धिमतापूर्ण और महत्वपूर्ण है! ये हमें कितना ज्ञान देते हैं! उसने सुख और शान्ति का अनुभव किया: प्रकृति माता उसकी रक्षा करेगी!

-रोशनी कुट्टी तथा मालती मोहन

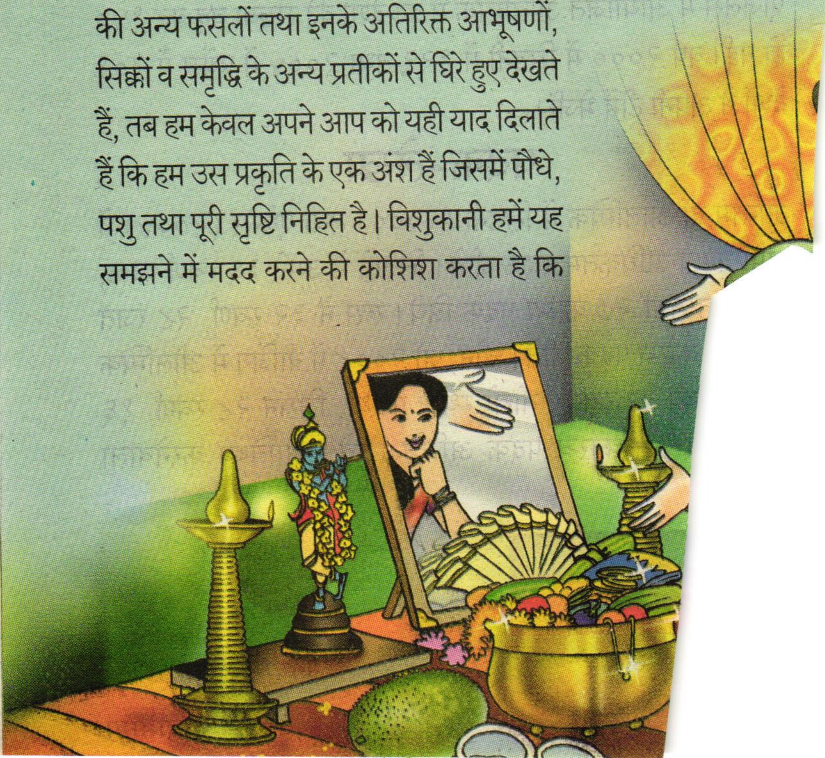

ओलम्पिक आँकड़े

आस्ट्रेलिया

अमेरिका

जर्मनी

सहभागिता

ओलम्पिक खेलों की लोकप्रियता इनमें भाग लेनेवाले देशों की संख्या से देखी जा सकती है। जब आधुनिक खेलों का प्रथम ओलम्पिक एथेन्स में १८९६ में आयोजित किया गया तब भाग लेने के लिए केवल १४ देशों ने अपने कसरतियों को भेजा। सन् १९६८ में मेक्सिको में आयोजित ओलम्पिक में भाग लेनेवाले देशों की संख्या ११२ हो गई। म्यूनिक में आयोजित १९७२ के खेलों में १२१ देशों ने हिस्सा लिया। इजरायल की टीम के ११ सदस्यों को पैलिस्टिन आतंकवादियों द्वारा अपहरण कर उनकी हत्या कर देने के कारण खेलों को स्थगित करना पड़ा। कुछ देशों ने १९७६ और १९८० में खेलों का बहिष्कार किया और भाग लेने वाले देशों की संख्या १०० से भी कम हो गई। जो भी हो, १९८४ में लॉस ऐंजिलेस में आयोजित ओलम्पिक में इन देशों की संख्या बढ़ कर १४० हो गई। वर्ष २००० में सिडनी में १९९ तथा २००४ में एथेंस में २०१ देशों ने अपनी टीमें भेजीं।

पदक-लेखा

अन्तिम दो ओलम्पिक में सिडनी (२०००) तथा एथेन्स (२००४) में
मेरिका ने अधिकतम पदक जीते। सिडनी में उसने ३६ स्वर्ण पदक,
न तथा २७ कांस्य पदक लिये। रूस ने ३२ स्वर्ण, २८ रजत
कांस्य पदक जीते। चीन, जो २००८ में बीजिंग में ओलम्पिक
थ्य कर रहा है, तीसरे स्थान पर था, जिसने २८ स्वर्ण, १६
। १५ कांस्य पदक अर्जित किये। आतिथ्य करनेवाला

रूस

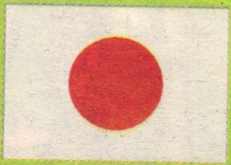

जापान

आस्ट्रेलिया १६ स्वर्ण, २५ रजत तथा १७ कांस्य लेकर चौथा स्थान प्राप्त कर सका। जर्मनी, फ्रांस, इटली ने प्रत्येक १३ स्वर्ण लेकर पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया।

वर्ष २००४ में (एथेन्स) अमेरिका ने पुनः सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया और ३६ स्वर्ण, ३९ रजत तथा २७ कांस्य पदक जीते। इस बार द्वितीय स्थान चीन ने हड़प लिया और ३२ स्वर्ण, १७ रजत तथा १४ कांस्य पदक जीते। रूस खिसक कर तीसरे स्थान पर आ गया और २७ स्वर्ण, २७ रजत तथा ३८ कांस्य पदक ले सका। आस्ट्रेलिया १७ स्वर्ण, १६ रजत तथा १६ कांस्य लेकर पुनः चौथे स्थान पर बना रहा। जापान ने १६, जर्मनी ने १३, फ्रांस ने ११ तथा इटली ने १० स्वर्ण पदक जीते। मेजबान देश ग्रीस ने ६ स्वर्ण, ६ रजत तथा ४ कांस्य लेकर १५ वाँ स्थान प्राप्त कर सका।

यह देखना बड़ा रोचक रहेगा कि २००८ का मेजबान चीन अगस्त में कैसा प्रदर्शन करता है।

प्रतियोगी

सन् १८९६ में केवल २४१ खिलाड़ी ४३ खेलों में भाग लेने आये। अगले खेल में पेरिस (१९००) में १२२५ प्रतियोगी थे। रोम ओलम्पिक (१९६०) में यह संख्या ५३४८ हो गई। सन् १९९६ में अटलाण्टा में १०,००० से अधिक प्रतियोगी थे। एथेन्स के अन्तिम खेलों में (२००४) १०,५०० से भी अधिक खिलाड़ियों ने ३०१ खेलों में भाग लिया।

कुछ विजेता

मार्जोरी गेस्ट्रिंग ने केवल १३ वर्ष ९ महीनों की आयु में महिला स्प्रिंग बोर्ड (बर्लिन १९३६) में स्वर्ण पदक जीता। वह आधुनिक खेलों के इतिहास में सबसे छोटी आयु की स्वर्ण पदक विजेता अब भी बनी हुई है।

महिलाओं के लिए मैरथन पहली बार १९८४ में लॉस ऐंजिलिस में आरम्भ किया गया। अमेरिका की जोन बेनॉइट ने स्वर्ण जीता। सन् १९७९ तथा १९८३ में वह प्रतिष्ठित बोस्टन मैरथन में चैम्पियन थी।

(क्रमशः)

सन् २००४ के एथेन्स खेलों में जारी किया गया पदक

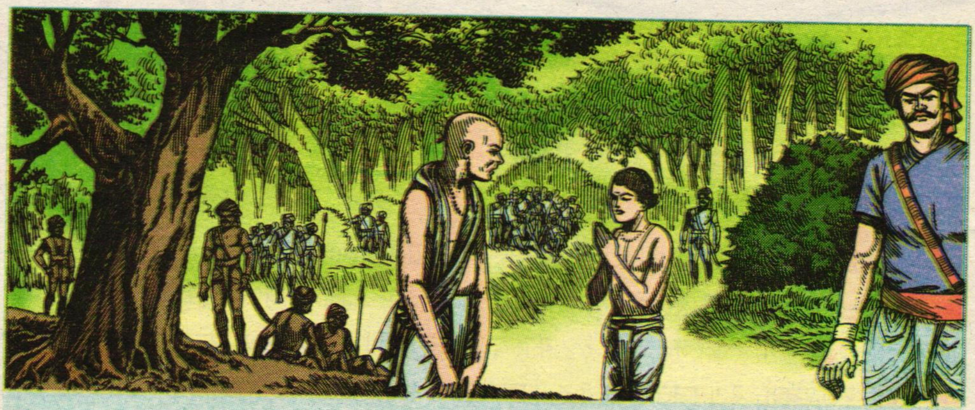

वक्र बुद्धि

एक बार ब्रह्मदत्त जब काशी नगर पर राज्य कर रहे थे, तब एक गाँव में एक ब्राह्मण ने वेदभं नामक महामंत्र की सिद्धि प्राप्त की थी।

सभी ग्रहों के कूट के समय आकाश की ओर देखकर इस मंत्र का आवाहन करने पर आसमान से सीधे सोना, चांदी, मोती, प्रवाल, रत्न, माणिक और नील-इन सात वस्तुओं की वर्षा होती थी।

उस ब्राह्मण के आश्रय में जाकर बोधिसत्व उसका शिष्य बन गया। एक दिन अपने शिष्य के साथ गुरु जंगल की ओर चल पड़ा।

उस जंगल में पाँच सौ डाकू थे। उन डाकुओं ने गुरु और शिष्य को रोका। उन डाकुओं का एक विचित्र नियम था। यदि दो यात्री एक साथ उस रास्ते से गुजरते तो उनमें से एक को यह मौक़ा दिया जाता कि वह घर जाकर दण्ड-शुल्क ला करके अपने सह-यात्री को छुड़ा ले जाये।

अगर वे यात्री पिता और पुत्र हों तो पिता को मौक़ा दिया जाता कि वह दण्ड-शुल्क लाकर अपने पुत्र को छुड़ा ले जाये। अगर माँ-बेटी हों तो माँ को, भाई-भाई हों तो उनमें से एक को और यदि गुरु-शिष्य हों तो शिष्य को छोड़ने की उनकी परिपाटी थी।

उस दिन उन विचित्र डाकुओं ने ब्राह्मण को अपने यहाँ रोक कर शिष्य को घर से शुल्क लाने के लिए भेज दिया। वहाँ से निकलते वक्त बोधिसत्व ने अपने गुरु से मिलकर उनको समझाया, ''गुरु जी! आप चिन्ता न कीजिये। मैं एक-दो दिन में लौट आऊँगा। पर आपसे निवेदन है, आज सभी ग्रहों के कूट योग का दिन है। आप कृपया मंत्र जाप कर रत्नों की वर्षा भूल कर भी न कराइएगा। इससे आपकी और डाकुओं की भी हानि होगी।''

जातक कथा

इस प्रकार कई बार अपने गुरु को सचेत कर बोधिसत्व वहाँ से चल पड़ा।

सूर्यास्त हो गया था। पूर्णिमा का चाँद आसमान में दमक रहा था। ब्राह्मण ने आसमान की ओर देख कर भाँप लिया कि ग्रहों के कूट का समय निकट आ गया है।

वह सोचने लगा, ''मैं डाकुओं के हाथों पड़ कर एक असमर्थ व्यक्ति की भांति क्यों यातनाएँ झेलूं? स्वयं अपने मंत्र का पठन करके कनक-वर्षा करवाकर डाकुओं का शुल्क अदा कर मुक्त हो सकता हूँ। आख़िर प्राण-संकट के समय अपनी विद्या का उपयोग न करूँ तो उस विद्या का प्रयोजन ही क्या है? क्या मालूम मेरे शिष्य को धन प्राप्त हो या न हो।''

यह सोचकर ब्राह्मण ने डाकुओं को अपने समीप बुलवाया और उनसे पूछा, ''तुम लोगों ने मुझ को क्यों बन्दी बनाया है?''

''महानुभाव! और किसलिए? सिर्फ़ धन पाने के लिए ही!'' डाकुओं ने एक स्वर में उत्तर दिया।

''बस! यही बात है न! तब तो मेरे कहे अनुसार करो! तुम लोग जितना धन चाहते हो, मैं दे दूँगा। पहले मेरे बन्धन खोल दो। फिर मुझको स्नान करा दो। नये वस्त्र धारण करवा दो। सभी प्रकार के फूल लाकर यहाँ पर ढेर लगा दो। मेरे चारों तरफ़ सुगंधित द्रव्य, धूप, दीप आदि रख दो। तब तमाशा देखो! क्या होने वाला है?'' ब्राह्मण ने डाकुओं को समझाते हुए बताया।

डाकुओं ने ब्राह्मण के आदेश का पालन

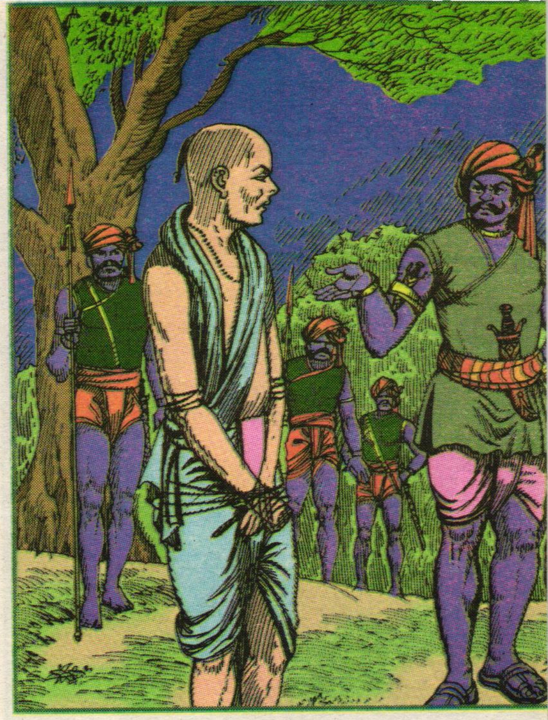

किया। इसके बाद ब्राह्मण ने समय का अनुमान लगा कर आसमान की ओर दृष्टि केन्द्रित की और वेदभं मंत्र का पाठ करना प्रारम्भ किया। थोड़ी ही देर में मूल्यवान रत्न और सोने व चांदी आदि की वर्षा होने लगी। डाकुओं ने उन रत्नों को इकट्ठा करके गठरी बांध ली और अपने रास्ते चल दिये। उनके पीछे-पीछे ब्राह्मण भी चलने लगा। बीच मार्ग में ही डाकुओं के एक दूसरे दल ने प्रथम दल पर हमला बोल दिया।

प्रथम दल के डाकुओं ने पूछा, ''तुम लोग हमें क्यों पकड़ना चाहते हो?'' दूसरे दल ने कहा, '' और किसलिए? धन के वास्ते ही!''

''बस! तब तो तुम लोग इस ब्राह्मण के आश्रय में जाओ! ये आसमान की तरफ़ देख लें, तो बस क़ीमती मणि-मानिकों की वर्षा हो जाएगी। इसी

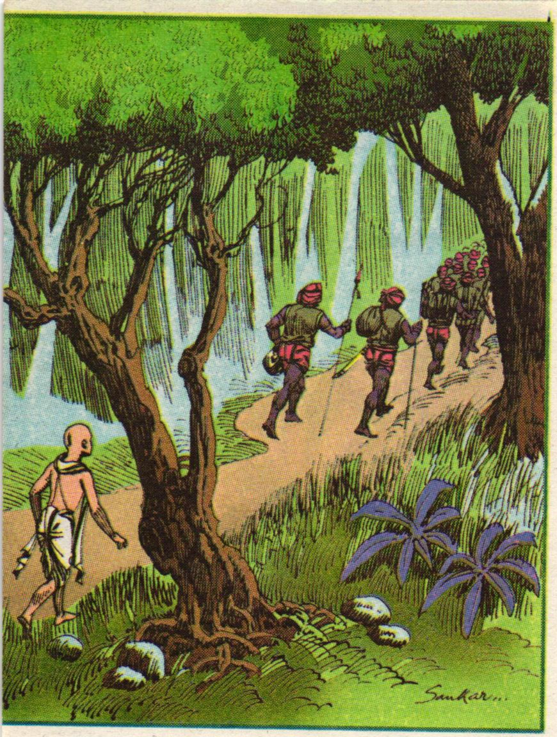

प्रकार से ही उन्होंने हमें यह सारा धन दिया है!'' यों कहकर वे लोग खिसक गये।

डाकुओं के दूसरे दल ने ब्राह्मण को पकड़ लिया और उसे सताते हुए पूछा, ''हमें भी धन दे दो, ब्राह्मण! वरना तुम्हारे प्राणों की खैर नहीं है! तुम बचने के लिए बहाना करोगे, तो भी हम तुम को छोड़ने वाले नहीं हैं! इसीलिए तुम समय का दुरुपयोग न करके हम को मालामाल बनाकर तुम भी जीवित बच जाओ।''

इस पर ब्राह्मण ने कहा, ''भाइयो! इसके पहले मैंने उन डाकुओं को जो धन दिया था, वह मंत्र की महिमा से प्राप्त धन था। वह मंत्र ठीक अब से एक साल बाद ही काम दे सकता है! इसके लिए कूट का योग परम आवश्यक है। एक वर्ष बाद फिर ग्रहों का कूट होगा। उसी समय मेरा मंत्र काम देगा। मैं अवश्य ही जाप करके उस समय तुम लोगों के वास्ते कनक-वर्षा करवा दूँगा!''

पर डाकुओं ने ब्राह्मण की बातों पर विश्वास नहीं किया। बल्कि वे धमकी देते हुए बोले, ''तुमने हमसे पहले आये हुए लोगों को धन कुबेर बनाकर भेज दिया है! हमारे मांगने पर तुम हमको एक साल तक इन्तज़ार करने को कहते हो?'' यों कहकर उन लोगों ने तेज धारवाली छुरी लेकर ब्राह्मण को दो टुकड़ों में चीर डाला और उसकी लाश को उलटा करके मार्ग-मध्य में लटका दिया।

इसके बाद वे लोग दौड़ कर डाकुओं के प्रथम दल से मिले और उन सबको मार कर सारी सम्पत्ति हड़प ली। पर सम्पत्ति के बंटवारे में उनके बीच मतभेद हो गया। उनके बीच दो दल बन गये और दोनों दल परस्पर झगड़ पड़े।

उस युद्ध में सौ लोग आपस में लड़ मरे और अन्त में केवल दो ही आदमी बचे रहे। उन दोनों ने सारी सम्पत्ति समीप के जंगल में छिपा दी।

उनमें से एक आदमी तलवार लेकर उस सम्पत्ति पर पहरा देने लगा और दूसरा खाने-पीने की सामग्री के लिए पास के गाँव में गया।

अपार धन संपत्ति के अनायास ही हाथ लगते ही उन दोनों के दिल बदल गये। उनके भीतर जो स्वार्थ छिपा हुआ था, वह उभर आया। धन को देखते ही बड़े से बड़े लोग भी अपने विवेक को खो बैठते हैं। डाकुओं की बात का क्या कहना है!

धन पर पहरा देनेवाला डाकू अपने मन में

सोचने लगा, 'मेरा साथी आ जाएगा तो व्यर्थ ही इस सम्पत्ति में से आधा धन बाँटकर ले जाएगा!'

यह विचार कर वह मन ही मन दुखी हो गया।

उधर जो डाकू खाने की सामग्री लाने गया था, वह भी अपने मन में यों सोचने लगा, 'यदि मेरा साथी मर जाए तो यह सारी सम्पत्ति मेरी हो जाएगी और मैं धन-कुबेर बन सकता हूँ!'

यों विचारकर उसके हिस्से के भोजन में उसने जहर मिला दिया।

वह डाकू अपने साथी के लिए भोजन सामग्री लेकर जैसे ही वहाँ पहुँचा, पहरा देने वाले डाकू ने झट से तलवार खींचकर उसका सर काट डाला और उसके कलेवर को दूर फेंक दिया।

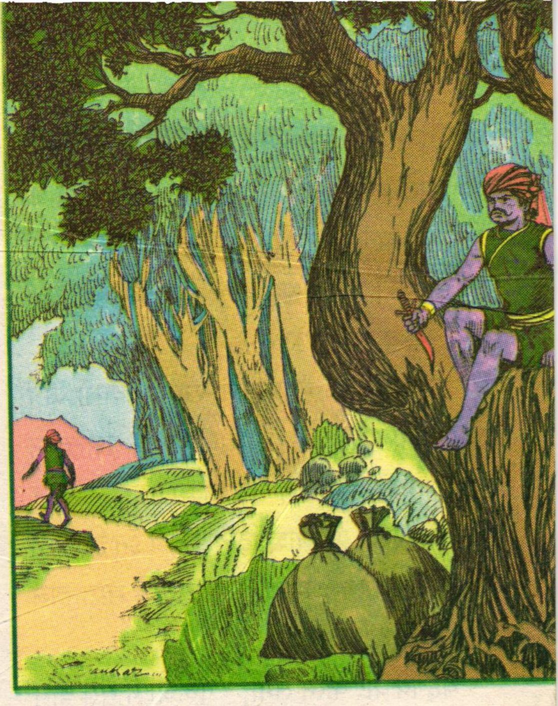

लेकिन थोड़ी देर बाद जहर मिला हुआ खाना खाकर उसने भी अपना दम तोड़ दिया।

इस प्रकार ब्राह्मण और उसके धन को प्राप्त करने वाले सभी डाकू अपनी जान गंवा बैठे।

एक-दो दिन बाद बोधिसत्व डाकुओं के लिए दण्ड-शुल्क लेकर आ पहुँचा।

उसने अपने गुरु की खोज की; पर उनका कहीं पता न चला। सब ओर धन और सड़ी हुई लाशें ही इधर-उधर फैली हुई थीं। उन्हें देखकर बोधिसत्व ने अपने मन में सोचा, 'इस ब्राह्मण ने मेरी सलाह की उपेक्षा की और अपने मन की कर ही डाली। परसों इस ब्राह्मण ने मंत्र-जाप कर रत्नों की वर्षा करवा दी होगी। उसी के फलस्वरूप ये लोग अपने प्राणों से हाथ धो बैठे होंगे!'

पर थोड़ी दूर उसे अपने गुरु का कलेवर दिखाई दिया। वह व्याकुल होकर मन ही मन कहने लगा, "उफ़! मेरे गुरु जी! आपने मेरी बात नहीं मानी। आपकी यह कैसी दुर्गति हो गई है।"

इसके बाद घास-फूस लाकर उसने अपने गुरु का दाह-संस्कार सम्पन्न किया तथा जंगल से फूल ला उस स्थान पर रखकर उनकी भस्मी को भक्तिपूर्वक प्रणाम किया!

वहाँ से थोड़ी दूर और जाने पर उसे प्रथम दल के डाकुओं के शव दिखाई पड़े।

थोड़ी दूर और आगे बढ़ा तो दूसरे दल के डाकुओं की लाशें भी बिखरी पड़ी थीं।

दो शवों को छोड़कर बोधिसत्व को शेष सारे लोगों के कलेवर दिखाई दिये। वह सोचने लगा, 'वे दोनों बचकर कहाँ गये?'

धन लूटने के बाद वे जिस रास्ते से निकल

गये थे, उसका पता लगाकर बोधिसत्व उसी मार्ग पर आगे बढ़ा! आख़िर वह एक घने जंगल के बीच पहुँचा। एक स्थान पर उसे धन की गठरियाँ दिखाई दीं। उनके समीप ही, बचकर भागे एक डाकू का कलेवर पड़ा था।

उसके समीप ही भोजन-सामग्री वाला पात्र रखा हुआ था। इस आधार पर बोधिसत्व ने असली बात भांप ली। चार क़दम आगे बढ़ने पर एक और डाकू की लाश दिखाई दी। इन निशानों के आधार पर बोधिसत्व ने स्वतः ही सारा हाल जान लिया।

वह विचार करने लगा, ''गुरु जी ने मेरी बात नहीं मानी। मैंने उनको अनेक प्रकार से समझाया। फिर भी मेरी सलाह पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने अहं-बुद्धि को सुखकर माना! बड़ों को अपने से छोटों की सलाह पर भी विचार कर लेना चाहिये। उन्होंने मुझे छोटा समझकर मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। इसके परिणाम-स्वरूप वे तो मृत्यु को प्राप्त हुए ही, साथ ही अनेक लोगों की मृत्यु के कारण भी बन गए। जो लोग अन्य लोगों की सलाह पर विचार किये बिना स्वयं गलत निर्णय कर डालते हैं, उनकी ऐसी ही दुर्गति हो जाती है!

''मेरे गुरु जी ने अपने मंत्र की महिमा के द्वारा जिस सम्पत्ति को पृथ्वी लोक में पहुँचा दिया, वह मानव-कल्याण के काम न आ सकी, उल्टे भीषण-कांड एवं विनाश का कारण ही बन गई। इसलिए जब बुद्धि वक्र गति से चलने लगती है, तब उत्तम वस्तुओं के द्वारा भी हानि हो जाती है। इसका दोष उन वस्तुओं में नहीं है, बल्कि मानव-स्वभाव के अन्दर है। सच्ची बात तो यह है कि वक्र-बुद्धि अग्नि-ज्वाला जैसी है। वह एक का विनाश करके ही नहीं छोड़ती, अनेक लोगों का सर्वनाश करके ही शीतल होती है!''

इस सत्य का प्रबोध बोधिसत्व ने उच्च स्वर में किया। उसकी ध्वनि सारे जंगल में गूंज उठी। बोधिसत्व के प्रबोध को सुनकर वन-देवियों ने प्रसन्न होकर उसका जय-जयकार किया!

इसके बाद बोधिसत्व उस सारी सम्पत्ति को अपने आश्रम में ले गया और उसे लोक कल्याणकारी कार्यों में लगा दिया!

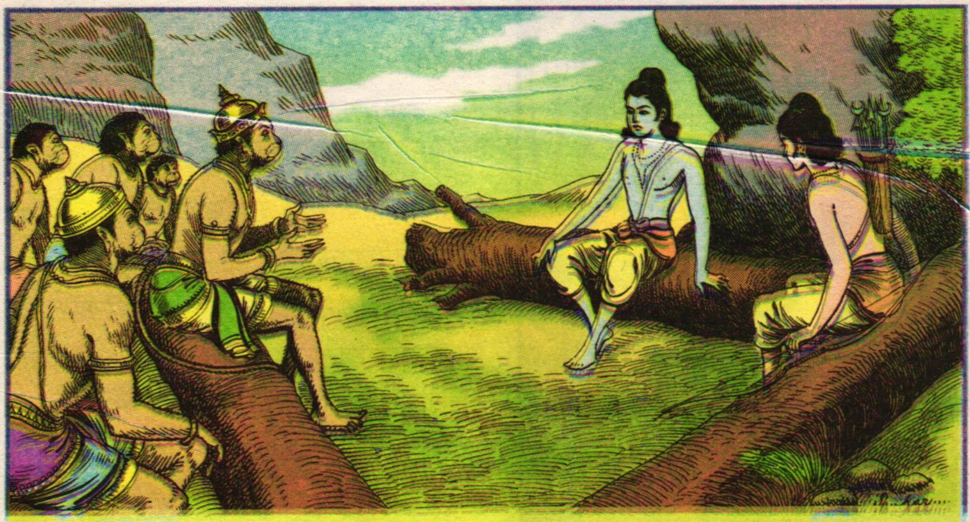

रामायण

वानर थके माँदे, भूखे प्यासे, मय के बनाये ऋक्षविले के पास आये। उसमें से सुगन्धि आ रही थी, पक्षी उड़ रहे थे। पर चूँकि बिल के मुँह पर बेलें थीं, इसलिए अन्दर जाना मुश्किल था।

''उसके अन्दर से पक्षियों को आता और हरी भरी बेलों को देखकर, तो ऐसा मालूम होता है, जैसे इसके अन्दर कोई कुआँ है, नहीं तो तालाब है।'' हनुमान ने सोचते हुए कहा।

तुरंत वानरों ने उस बिल के अन्दर प्रवेश किया। अन्दर घना अन्धकार था। उस अन्धेरे में जब वे एक दूसरे का हाथ पकड़े-पकड़े आगे बढ़े, तो उनको एक अद्‌भुत प्रदेश दिखाई दिया। वह प्रदेश प्रकाशमान था, बड़े-बड़े पेड़ थे। सोने चाँदी और रत्नों से सजाये हुए घर थे। सोना, चाँदी और पीतल के पात्र इधर-उधर बिखरे पड़े थे। अगर, चन्दन, फल और रेशमी वस्त्र, सोने आदि के भी ढेर पड़े थे।

पास ही एक स्त्री, वल्कल वस्त्र पहने, तपस्या कर रही थी। तेज से उसका चेहरा प्रदीप्त-सा था।

हनुमान ने उसके पास आकर नमस्कार करके पूछा, ''तुम कौन हो? यह बिल क्या है? हम बहुत दूर से आ रहे हैं। सब बहुत थक गये हैं और प्यासे भी हैं। यह सोच कि हमें यहाँ पानी मिल सकेगा, हम जल्दी में यहाँ आ गये हैं। परन्तु यहाँ का हाल देखकर ऐसा मालूम होता है, जैसे यह किसी राक्षस की माया हो। ये घर, ये फल किसके हैं? यहाँ के पानी में सोने के कछवे, सोने की मछलियाँ, सोने

किष्किन्धा काण्ड - ६

के मच्छ, किसकी महिमा से पाये जाते हैं? बताओ।''

तब तपिस्विनी ने यों कहा, ''दानवों का विश्वकर्मा, मय यहाँ रहा करता था। उसने तपस्या करके ब्रह्मा से कई वर पाये थे। उसने अपनी शक्ति से यह प्रदेश बनाया और हेमा नामक अप्सरा के साथ सुख से रहा करता था। यह देख इन्द्र को ईर्ष्या हुई और उसने मय पर वज्र का उपयोग किया। फिर ब्रह्मा ने यह प्रदेश हेमा को दे दिया। हेमा मेरी अच्छी सहेली है। मैं ससावर्णी की लड़की हूँ। मेरा नाम स्वयंप्रभा है। मैं इस प्रदेश की रक्षा करती यहाँ रहती हूँ। तुम यहाँ किस काम पर आये हो? यहाँ के फल आदि खाकर, पानी पीकर, अपना वृत्तान्त बताओ।''

जब वानर फल और पानी पीकर सन्तुष्ट हुए तो हनुमान ने स्वयंप्रभा को अपना वृत्तान्त यों बताया:-

''दशरथ का लड़का राम, त्रिलोकाधिपति इन्द्र के समान है। वह अपने भाई लक्ष्मण और अपनी पत्नी सीता के साथ दण्डकारण्य आये हुए हैं। जब वे जनस्थान पर थे, तो सीतादेवी को रावण उठा ले गया। राम का मित्र सुग्रीव वानरों का राजा है। उन्होंने सीतादेवी को खोजने के लिए हमें दक्षिण की ओर भेजा है। हमने सारा दक्षिण छान डाला। जब हम भूखे प्यासे एक पेड़ के नीचे बैठे थे तो बेलों से ढका यह बिल दिखाई दिया, फिर हमने गीले पंखों को फड़फड़ाते पक्षियों को यहाँ से आते देखा। तब मैंने ही वानरों को साहस करके, बिल के अन्दर जाने के लिए प्रोत्साहित किया। हम इस तरह यहाँ पहुँचे। सौभाग्यवश तुम हमें यहाँ मिले और हमारी धधकती भूख मिटा सके। हम सब इसके लिए तुम्हारे कृतज्ञ हैं।''

हनुमान ने स्वयंप्रभा को अपना वृत्तान्त सुनाकर कहा, ''तुमने हमें प्राणदान दिया है। इसके बदले जो हमें करने के लिए कहोगे, हम करने को तैयार हैं। हमारे वानर दल में एक से एक वीर हैं जो कठिन से कठिन कार्य कर सकते हैं। यद्यपि हम सीता को नहीं खोज पाये क्योंकि हमें रावण का निवास मालूम नहीं है, अन्यथा हमारे वीर वानर रावण को मार सीता को कब को ले आते। हम इस बिल में घुसने को तो घुस गये हैं, पर कैसे इस बिल में से निकला जाये, हम नहीं जानते।''

स्वयंप्रभा ने कहा कि उसे किसी प्रत्युपकार की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह प्रदेश स्वर्ग से कम नहीं है, जहाँ सभी कामनाएँ अपने आप पूरी हो जाती हैं। फिर, मैं तो तपस्विनी हूँ। यदि वानरों ने आँखें मूँद लीं, तो मैं अपनी तपःशक्ति से उनको बिल के बाहर भेज दूँगी। जब वानरों ने आँखें बन्द करके खोलीं, तो वे सब बिल से बाहर थे। स्वयंप्रभा उनको कुछ पहाड़ों के चिह्न बताकर, बिल में चली गई।

विन्ध्या पर्वत के पश्चिम की छोर पर बैठकर पश्चिम समुद्र को देखते हुए वानर यह सोच चिन्तित हुए कि उनकी अवधि समाप्त हो गई है, शिशिर चला गया है और वसन्त आ रहा है। पर अभी तक उनका उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। वे किंकर्त्तव्यविमूढ़ थे।

तब अंगद ने शेष वानरों से कहा, "हम सब सुग्रीव की आज्ञा के आधीन हैं। उनकी निश्चित अवधि में हम सीता को नहीं खोज सके । हम सब उनकी आज्ञा का अतिक्रमण कर रहे हैं। सुग्रीव बड़ा क्रूर है। निर्दय राजा है। हमें नहीं छोड़ेगा। उनके पास जाने से तो यही अच्छा है कि अन्न जल छोड़कर यहीं मर मरा जायें। मैं होने को तो युवराज हूँ, पर मुझे सुग्रीव ने युवराज नहीं बनाया है। परन्तु राम ने बनाया है। सुग्रीव को तो मुझसे चिढ़ है। यदि मैं उसको अब मिला तो वह मुझे जीवित नहीं छोड़ेगा।"

बाकी वानरों ने भी यही सोचा। यदि कम से

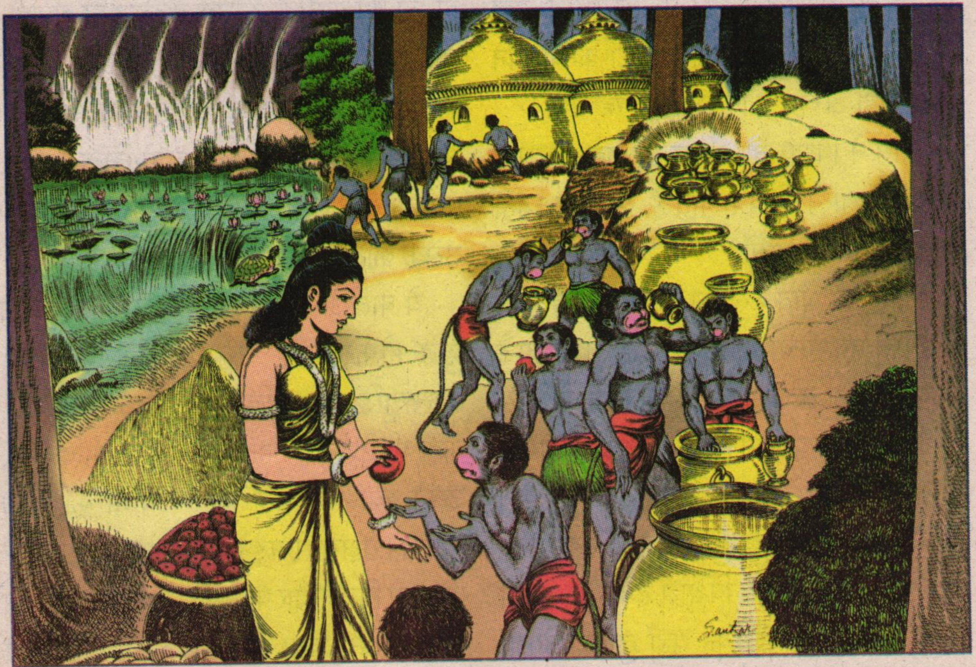

कम सीता मिलती तो, राम अवधि के खत्म होने पर भी हमें माफ़ कर देते। पर अवधि के बाद सीता का पता मालूम किये बिना किष्किन्धा जाने से तो यही अच्छा है कि हम यहीं रह जायें।''

तारा ने विशेष तौर पर उनसे कहा, ''इतना सोचने विचारने की क्या बात है, यदि तुम चाहो तो हम यहीं रह जायेंगे?''

अंगद का, बात करने का लहजा देख, हनुमान ने मन ही मन सोचा, 'अरे भाई, यह तो लगता है कि सुग्रीव का राज्य हथियाने की फिक्र में है।'

यह सोचकर उसने वानरों और अंगद में भेद करने के उद्देश्य से कहा, ''अंगद, वानरों के मन में जो अब विचार हैं, ये कुछ देर बाद नहीं रहेंगे। क्या तुम्हें सचमुच यह विश्वास है कि ये अपनी पत्नी, परिवार को छोड़कर यहाँ तुम्हारी आज्ञा पालन करते रहेंगे? तुम तो मृत्यु भय के कारण वापस जाना नहीं चाहते। तुम सोचते हो कि सुग्रीव के काम में असफल हो गये तो वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा। और राम-लक्ष्मण भी हम सब को नहीं छोड़ेंगे। पर ऐसी बात नहीं है। सुग्रीव और राम-लक्ष्मण भी हमारी लाचारी समझेंगे और फिर सीता को खोजने के लिए कोई दूसरी योजना बनायेंगे। यह काम हमलोग पूरा अवश्य करेंगे लेकिन कायरों की तरह यहाँ छिपे नहीं रहेंगे। सच कहता हूँ, सुनो। मैं या जाम्बवन्त या नील या सुहोत्र स्वप्न में भी सुग्रीव को छोड़कर यहाँ नहीं रहेंगे। यही नहीं, बलवान से शत्रुता मोल लेना ठीक नहीं है। यह बिल लक्ष्मण के बाणों से भी तुम्हारी रक्षा न कर सकेगा। अगर लड़ना ही चाहते हो, तो तुम बाली से अधिक बलवान तो हो नहीं। यदि तुम्हें यह भ्रम हो कि ये सब वानर तुम्हारी बात सुनेंगे, तो तुम जल्दी ही अकेले रह जाओगे। यह सच नहीं है कि सुग्रीव तुम से चिढ़ा हुआ है, क्योंकि तुम्हारी माँ पर वह आसक्त है, इसलिए उसके कारण उसे तुम पर भी प्रेम है।''

ये बातें अंगद को बिलकुल न जंचीं। उसने क्रुद्ध होकर कहा, ''सुग्रीव में स्थिर बुद्धि, आत्मशुद्धि, चित्तशुद्धि, दया, पराक्रम, गाम्भीर्य, कहीं भी लेशमात्र नहीं है। जब भाई जीवित था, उसने क्या-क्या नहीं किया। भाभी को पत्नी बनाया। राक्षस से लड़ने जब उसका भाई बिल में गया, तो बिल के द्वार पर उसने पत्थर रखा। जिसने उसको राज्य दिया, ऐसे राम के प्रति ही उसने

कृतघ्नता दिखाई। लक्ष्मण के भय के कारण उसने हमें सीता की खोज के लिए भेजा है। और उसे अधर्म का भय कहाँ है? ऐसा आदमी अपने लड़के को राज्य देगा या मुझे देगा? इस बहाने कि मैंने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है, वह अवश्य मुझे मरणदण्ड देगा। मैं वापस नहीं जाऊँगा। यहीं उपवास करूँगा। मुझे छोड़कर तुम चले जाओ। राम, लक्ष्मण को, हमारे चाचा, चाची और सब को मेरा नमस्कार कहना। मेरी माँ को, जो मुझे प्राणों से भी अधिक चाहती है, आश्वासन देना। वह जो भी हो, मेरे लिए प्राणों का परित्याग कर देगी।'' यों कहकर, वानरों को नमस्कार करके, भूमि पर दूब बिछाकर, रोता, वह वहीं लेट गया।

अंगद को देख, सब वानरों को दुख हुआ। उन्होंने बाली की प्रशंसा की और सुग्रीव को कोसा और स्वयं उपवास करने की ठानी। समुद्र में स्नान करके, तट पर दूब बिछाकर उस पर रोते वे लेट गये। वे लेटे लेटे, राम जब से वनवास के लिए निकले थे, तब से जो जो घटनाएँ हुई थीं, उसके बारे में बातें कर रहे थे, तो उनको यकायक भयंकर गिद्ध दिखाई दिया। भय के कारण जो वे चिल्लाये, तो आसपास की गुफ़ाएं गूँज उठीं।

यूँ आनेवाला जटायु का भाई सम्पाति था। वह विंध्यापर्वत की एक गुफ़ा में रह रहा था। उसने गुफ़ा के बाहर आकर कहा, ''भगवान की कृपा से आज मेरे लिए पेट-भर खाना मिला है। मैं इन बन्दरों को मारकर अपना पेट भरूँगा।''

यह सुन अंगद ने हनुमान से कहा, ''हमारी भी क्या हालत है? मय गिद्ध के रूप में, हमें इस संसार से ले जाने आया है। हम न राम का काम

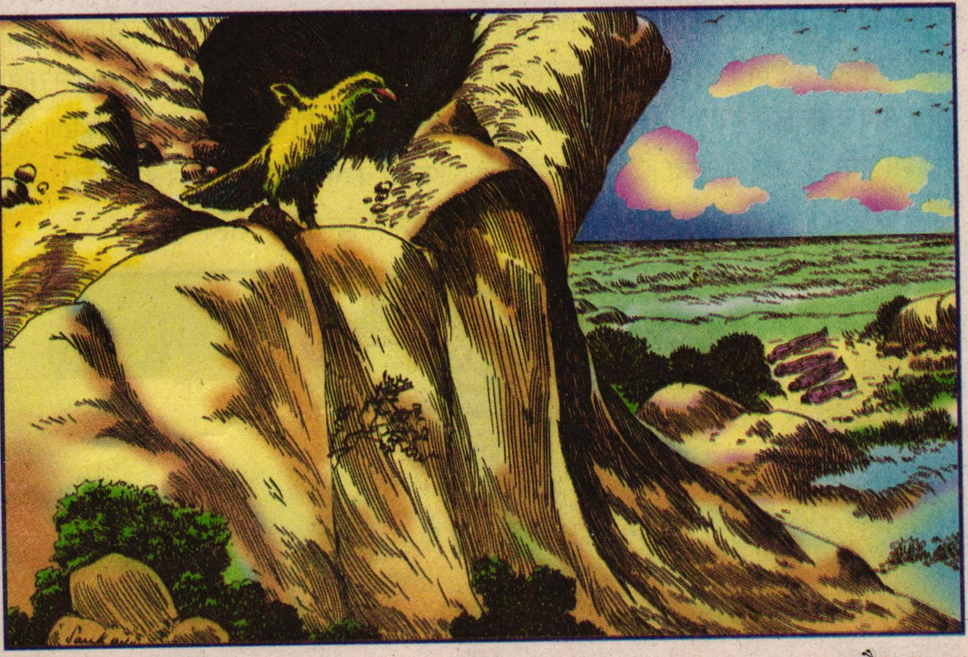

कर सके न सुग्रीव की आज्ञा का ही पालन कर सके। हमसे अच्छा तो यह जटायु ही है, इसने राम के लिए अपने प्राण छोड़ दिये। उसने प्राण रहते रावण से युद्ध किया, उसका रथ तोड़ दिया और यथाशक्ति सीता को रावण से छुड़ाने की कोशिश की। और रावण से लड़ते-लड़ते अपना जीवन दे दिया।

''हम कहने को तो राम के काम पर निकले हैं परन्तु हम इस गिद्ध के मुँह में जानेवाले हैं। यदि जटायु प्राण न छोड़ता, तो हमें यों सीता को खोजने की नौबत ही न आती। रावण की बात वही बता देता। रावण यदि सीता को न उठा ले जाता, तो यह काम हमारे सिर पर पड़ता ही न। दशरथ यदि न मरते, तो कभी के वे राम को बुला लेते। यदि दशरथ कैकेयी को वर न देता, तो यह बात इतनी दूर जाती ही नहीं। ये सब जाल हमारे प्राण लेने के लिए ही विधाता ने बुने हैं। हमारी मृत्यु अब देवनिर्दिष्ट है।''

सम्पाति ने जोर से कहा, ''कौन है वहाँ? कौन कह रहा है कि मेरा भाई मर गया है? कितने ही दिनों बाद भाई का नाम सुनकर मैं सन्तुष्ट हुआ। बेटा, मेरे पंख सूर्य की किरणों के कारण जल गये। मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकता। मुझे कृपा करके अपने यहाँ ले जाओ।'' वानरों ने इस सबको उसकी चाल समझी। चूँकि वे मरने को तैयार थे, इसलिए मृत्यु का इस रूप में आना ही अच्छा है, यह सोचकर अंगद उठा और पहाड़ पर चढ़कर सम्पाति को पहाड़ पर से उतारकर ले आया।

उसने सम्पाति को राम का वनवास पर आना, जनस्थान से रावण का सीता को उठाकर ले जाना, यह देख जटायु का रावण से युद्ध करना, उसका मारा जाना, राम और लक्ष्मण का सीता को खोजते खोजते ऋष्यमूक पर्वत पर आना, सुग्रीव से मैत्री करना, बाली को मारना, वानर राज्य का सुग्रीव को देना, सुग्रीव का सीता की खोज के लिए उसको भेजना, उनका इस काम में असफल रहना, वापिस जाने की इच्छा न होने के कारण वहीं उपवास करके मर जाने का निश्चय करना, आदि के बारे में विस्तार के साथ बताया।

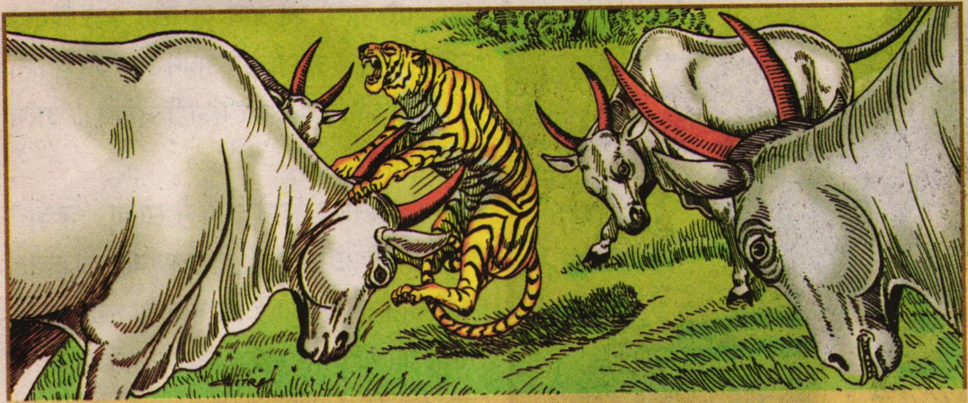

धोखे की सज़ा

एक गाँव में शरभ नामक एक चरवाहा था। उसके पास जायदाद के नाम पर सिर्फ़ चार गायें थीं। वह रोज़ उन गायों को चराने के लिए पास के जंगल में ले जाता था। गायें अपने आप घास चरती रहतीं और शरभ किसी पेड़ या टीले पर बैठकर बंसी बजाते अपना वक़्त बिता देता था।

एक दिन वह एक पेड़ पर बैठे बंसी बजा रहा था, तब समीप में ही उसे बाघ के गरजने की आवाज़ सुनाई दी। उसने चौंककर अपनी गायों की ओर देखा, मगर वहाँ पर एक अनोखे दृश्य को देख वह चकित रह गया। शरभ की चारों गायें एक बाघ को घेरकर उस पर अपने सींग मार रही हैं। बाघ गायों से बचकर भागने की कोशिश कर रहा है। मगर गायों ने उसे भागने का मौक़ा न दिया, अंत में उसे मार डाला। इस दृश्य को देख शरभ विस्मय में आ गया।

शरभ अपनी गायों की हिम्मत देख उन पर गर्व करने लगा। गायें फिर यथावत घास चरने लगीं, मानो उन पर कुछ बीता ही न हो!

इसके थोड़े दिन बाद शरभ के गाँव में बरसात न होने से चारे के मैदान सूख गये। मवेशियों को चारा मिलना मुश्किल हो गया। चारे के अभाव में गायें दिन ब दिन सूखने लगीं।

शरभ से यह देखा न गया। वह अपनी गायों को हांककर दूर के एक पहाड़ी प्रदेश में ले गया। वहाँ के मैदान में चारों ओर हरियाली थी और घास ऊँची उगी हुई थी। उसे इस बात का आश्चर्य हुआ कि इस घास को चरने के लिए क्या इस प्रदेश में गायें नहीं हैं? यही सोचते शरभ एक कोस की दूरी पर स्थित एक गाँव में पहुँचा और उसने उस गाँव में अपना स्थिर निवास बना लिया।

२५-वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

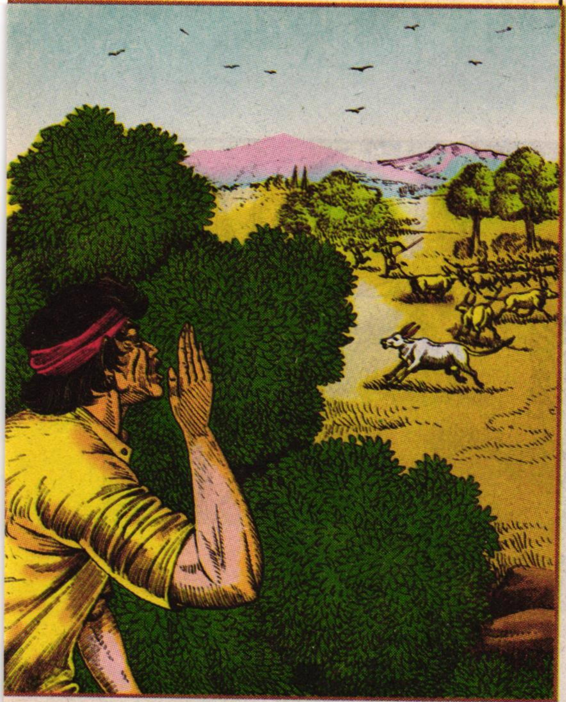

उस गाँव में मवेशियों की कोई कमी न थी, पर सारे जानवर सूखकर कांटा हो गये थे। शरभ की समझ में न आया कि आख़िर बात क्या है?

शरभ ने गाँववालों से पूछा, ''पहाड़ पर घास की भरमार है। लेकिन तुम्हारे गाँव के जानवर इस तरह सूखकर कांटा हो गये हैं जैसे नदी में यात्रा करनेवाला प्यास के मारे मर गया हो। आख़िर इसकी वज़ह क्या है?''

''भाई, हम लोग क्या बतावें? पहाड़ के चारों तरफ़ के घास के मैदान में बाघ और सिंह पहुँच गये हैं। वहाँ पर जो भी जानवर घास चरने जाता है, वह फिर से दिखाई नहीं देता। धीरे-धीरे हमारे मवेशियों की संख्या बहुत कम हो गई। इसलिए हम अपने पशुओं को उधर जाने नहीं देते। तुम्हें भी अपनी गायों को नज़दीक में ही चराना उचित होगा।'' गाँववालों ने शरभ को समझाया।

''मेरी गायों को बाघ या सिंह कुछ बिगाड़ नहीं सकते। वे अपनी रक्षा अपने आप कर सकती हैं। आप लोग उनके बारे में नहीं जानते।'' शरभ ने समझाया।

गाँववालों ने अपने आप में सोचा, ''बेचारा यह आदमी अभी नया है, इसलिए यहाँ की हालत नहीं जानता। कहता है कि बाघ या सिंह इसकी गायों को नहीं मार सकते। यह अपनी गायों से हाथ धो बैठेगा। यह कोई मूर्ख मालूम होता है।''

बात यह थी कि पहाड़ के पीछे गजसिंह नामक एक डाकू था जो बाघ और सिंह जैसे चिल्ला सकता था। गाँव के पशु जब चरने के लिए पहाड़ के पास आ जाते, तब वह घास में छिपे रहकर बाघ जैसे गरज उठता और उन्हें गाँव से दूर भगा ले जाता। जब गायें भागते-भागते पहाड़ के उस पार चली जातीं तो वहाँ के गाँवों में उन्हें बेच देता। इस तरह वह धन जोड़ने लगा। जब वह बाघ या सिंह के जैसे गरज उठता, तब डर के मारे चरवाहे गाँव में भाग जाते। इस तरह गाँव के कई पशु खो गये। तब से गाँववाले उस ओर मवेशियों को चराने के लिए ले जाने की हिम्मत न कर पाये।

यह बात शरभ नहीं जानता था। वह सिर्फ़ यही जानता था कि उसकी गायें बाघ और सिंह से नहीं डरतीं।

डाकू गजसिंह को इधर कई दिनों से चुराने के लिए जानवर न मिले तो वह परेशान था। इस हालत में उसने एक दिन शरभ की गायों को देखा।

वे गायें ख़ूब मोटी-ताजी थीं। उनका मालिक शरभ एक पेड़ के तने पर बैठकर वेफ़िक्र बंसी बजाते उसे दिखाई दिया।

डाकू गजसिंह ने उन गायों को हड़पने का निश्चय कर लिया। उसने अपनी योजना बनाई कि किन झाड़ियों में छिपने से वह अपना काम आसानी से साध सकता है। दूसरे दिन गायों के आने के पहले ही वहाँ पहुँचकर डाकू गजसिंह एक झाड़ी में बैठ गया।

शरभ की गायें उस प्रदेश में आकर चरने लगीं। शरभ ने बंसी बजाना शुरू किया। थोड़ी देर बाद उसे बाघ का गर्जन सुनाई दिया। लेकिन वह घबराया नहीं, उसने अपनी गायों की ओर देखा। उसकी कल्पना के अनुसार एक झाड़ी को घेरकर सर झुकाये झाड़ी में से बाघ के निकलते ही उसे सींगों से मारने के लिए तैयार खड़ी थीं। शरभ बंसी बजाना छोड़ उस विचित्र दृश्य को देखता रह गया।

इस बीच डाकू गजसिंह को एक विचित्र अनुभव होने लगा। उसका गर्जन सुनकर गायें भागीं नहीं, बल्कि इस तरह उसकी झाड़ी के निकट आ गई हैं, मानो उनका स्वागत किया जा रहा हो! डाकू यह सोचकर कि बाघ के गर्जन से गायें डरती नहीं, वह सिंह की तरह गर्जन करने लगा।

गायें उसे सुनकर भी डरीं नहीं, बल्कि अपने खुरों से धरती को खुरचकर इस तरह दिखाई दीं, मानो यह कह रही हो कि हिम्मत हो तो सामने आ जाओ; हम तुम्हारी जान लेकर ही छोड़ेंगी।

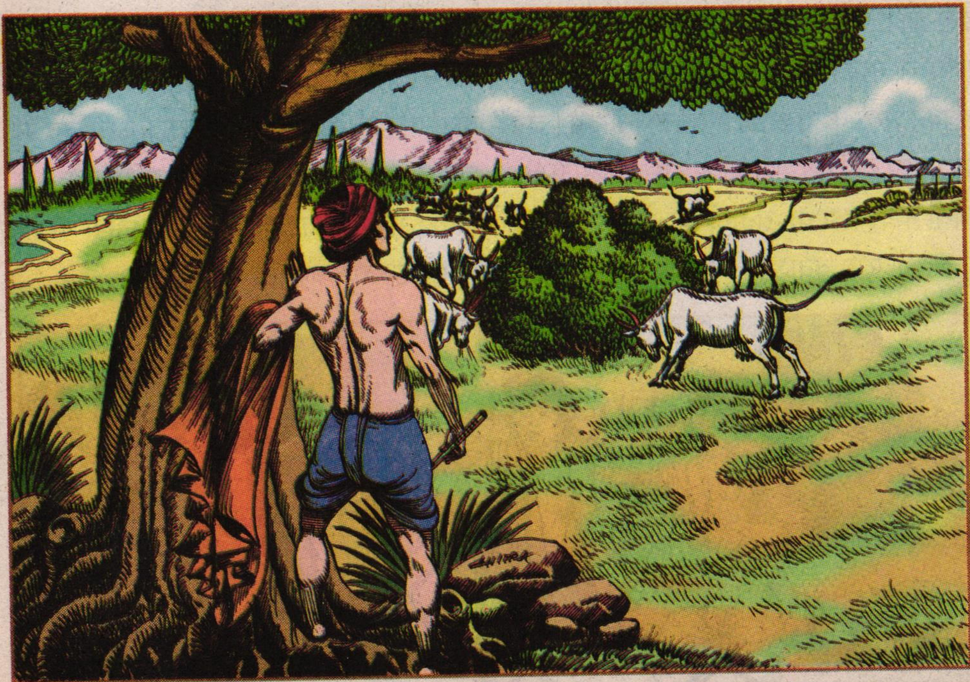

डाकू को यह समझने देर न लगी कि गायों को हाथ लगाना तो अपनी दूर रहा, बल्कि उसकी जान पर ही आ पड़ी है। फिर क्या था, उसका बदन पसीने से तर हो गया। वह थोड़ी देर बाघ जैसे, फिर सिंह जैसे बदल-बदलकर गरजने लगा। पर इससे भी कोई फ़ायदा न हुआ।

मगर वह गर्जन सुनकर गाँव में घास चरनेवाले जानवर भड़ककर चारों ओर भागने लगे। जो जानवर बंधे थे, वे अपने पगहों को तोड़कर भाग गये।

गाँव के लोग उनकी खोज में इधर-उधर भागने लगे। इस बीच शरभ गाँव की ओर दौड़कर आ पहुँचा। गाँववालों को समझाया, "मेरी गायों ने बाघ और सिंह को पकड़ लिया है, तुम लोग आकर देख लो।" यों समझाकर कुछ लोगों को अपने साथ ले गया। वे लोग अपनी जान हथेली पर रखकर शरभ के पीछे डरते-डरते चल दिये। जब शरभ उस झाड़ी के पास जाकर रुका, जिसे उसकी गायों ने घेर रखा था, तब गाँववालों ने अचरज में पूछा, "शरभ, बताओ तो बाघ कहाँ पर है?"

"वह इतनी जल्दी थोड़े ही बाहर निकलेगा? क्या मेरी गायें उसे चीर न डालेंगी? तुम लोग उस झाड़ी पर पत्थर फेंक दो! बाघ और सिंह जैसे गरजनेवाला जानवर झाड़ी में से बाहर निकलेगा।" शरभ ने समझाया।

जब कई लोग झाड़ी पर पत्थर बरसाने लगे, तब शरभ की गायें झाड़ी में से बाहर आ गईं। सिर व बदन से खून बहते डाकू गजसिंह झाड़ी में से बाहर निकला, और गाँववालों के पास पहुँचकर उनके पैरों पर गिर पड़ा।

उसने कबूल किया कि वही बाघ और सिंह का गर्जन करके गायों को डरा पहाड़ी के उस पार भगा देता था और उन्हें उधर के गाँवों में बेच देता था।

जब गाँवालों को यह पता चला कि इसी डाकू ने उनके मवेशियों को चुराया है, तब सब ने उसे पीट-पीटकर अधमरा कर दिया। उस दिन से शरभ उस गाँव का सरदार बन गया। इसके बाद गाँव के मवेशी पहाड़ के नीचे के मैदानों में चरकर खूब मोटे-ताजे बन गये।

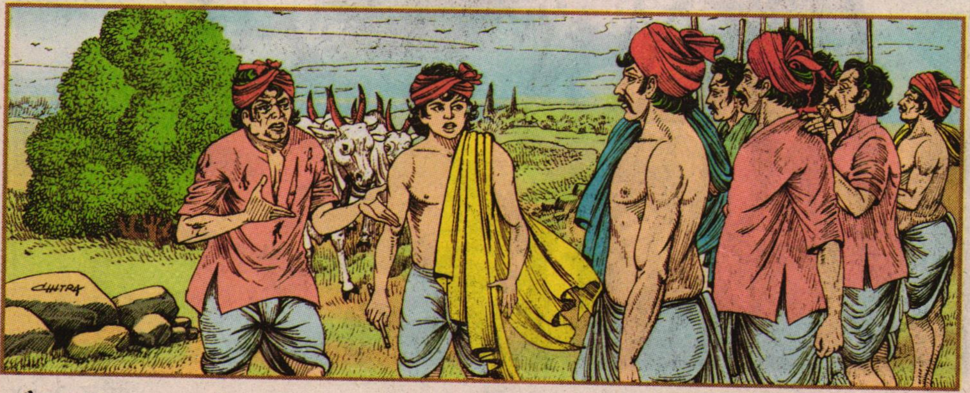

चित्रः गाँधी अय्या
27
अपराजेय गरुड़
पर्वत की गुफ़ाओं में राजा विक्रमसिंह नरेन्द्रदेव और रवीन्द्रदेव से विदा लेता है। जब वह मार्ग से जा रहा था तब बाणों की वर्षा से वह और उसका आदिवासी मार्ग रक्षक घायल हो गया। राजा को वापस गुफा में लागा गया। आदित्य को जो गुफ़ा के मन्दिर की ओर जा रहा था, इस घटना की जानकारी मिलती है।
आदित्य झोंपड़ी में प्रवेश करता है। आदिवासी वैद्य युवक की चिकित्सा कर रहा है।
वह कैसा है? क्या इसने कुछ कहा है?
इसे याद है कि वह वज्रपुरी के राजा का जो चन्द्रपुरी जा रहा था मार्ग रक्षक था।
यह अभी भी बेहोश है।
इसकी देखभाल कीजिये।
विक्रमसिंह चन्द्रपुरी की ओर? यह अवश्य ही रवीन्द्रदेव का रचा हुआ षड्यन्त्र होगा। मुझे कुछ और मालूम करना चाहिये।
आदित्य अपने मार्गरक्षक के पास जाता है।
पर्वत की गुफाओं में अकेले जाना सुरक्षित नहीं है। आप को नागबन्धु के शिष्यों से सावधान रहना होगा।
तुम मेरे बारे में न डरो।
मैं आप के लिए एक धनुर्धारी का प्रबन्ध कर दूँगा।
वह काफी रहेगा। तुम्हें धन्यवाद।

विक्रमसिंह को ले जानेवाला युवक पर्वत की गुफाओं के निकट आता है।
आप्तपुरुष को देखकर वह घोड़े से उतरता है।
राजा विक्रमसिंह घायल हो गये। मैं उन्हें लाया हूँ।
उन्हें यहाँ लाओ।
विक्रमसिंह घायल!
राजा को गुफा में लाया जाता है।
उन्हें जमीन पर लिटाया जाता है।
क्या इसके लिए कोई दवा है?
ये केवल बेहोश हैं!
जिस तीर से इन्हें चोट लगी है, अवश्य ही वह जहरीला होगा।
हाँ, एक जड़ी-बूटी है।
राजा को यहाँ विश्राम करने दो। मैं उम्मीद कर रहा था कि ये चन्द्रपुरी पर आक्रमण का नेतृत्व करेंगे।
रवीन्द्रदेव कुण्ठित और क्रोधित है।
मुझे गुफा के मन्दिर में ले चलो। किसी को नागबन्धु की शक्तियों का आवाहन करना होगा।
मैंने एक बड़े बलिदान के लिए तैयारियाँ आरम्भ कर दी हैं।
लेकिन आदित्य कहाँ है?
मेरी अन्तर्दृष्टि कहती है कि वह शीघ्र ही हमलोगों के पास आ जायेगा।

आदित्य और उसके आदिवासी मार्गरक्षक गुफा मन्दिर के मार्ग में हैं। मार्गरक्षक आदित्य के निकट पहुँचने के लिए गति तेज करता है।
सर, कृपया रुक जाइये।
आदित्य मार्गरक्षक की पुकार सुनकर सकता है।
यह क्या है?
सर, क्या आप ढोल की आवाज सुनते हैं?
मैं मंत्रोच्चारण भी सुन सकता हूँ।
तब हमलोग जल्दी करें!
हमें पैदल जाना चाहिये।
आदिवासी मार्गरक्षक आगे चलता है और आदित्य उसके पीछे।
सर, मार्ग में गिरिजा माँ का एक मन्दिर है। यह जीर्ण अवस्था में है। यह हमलोगों का मन्दिर है। हम उन्हें अपनी माता मानते हैं।
मुझे वहाँ ले चलो।
जब वे मन्दिर में पहुँचते हैं।
मैं यहाँ कुछ समय तक प्रार्थना करूँगा।
सर, आप पर सचमुच भगवान की कृपा है।
आदित्य आवाज सुनता है। वह गरुड़ की छवि देखता है।
मेरे वत्स! तुम शैतान के साथ संघर्ष के अन्तिम चरण में पहुँच रहे हो।

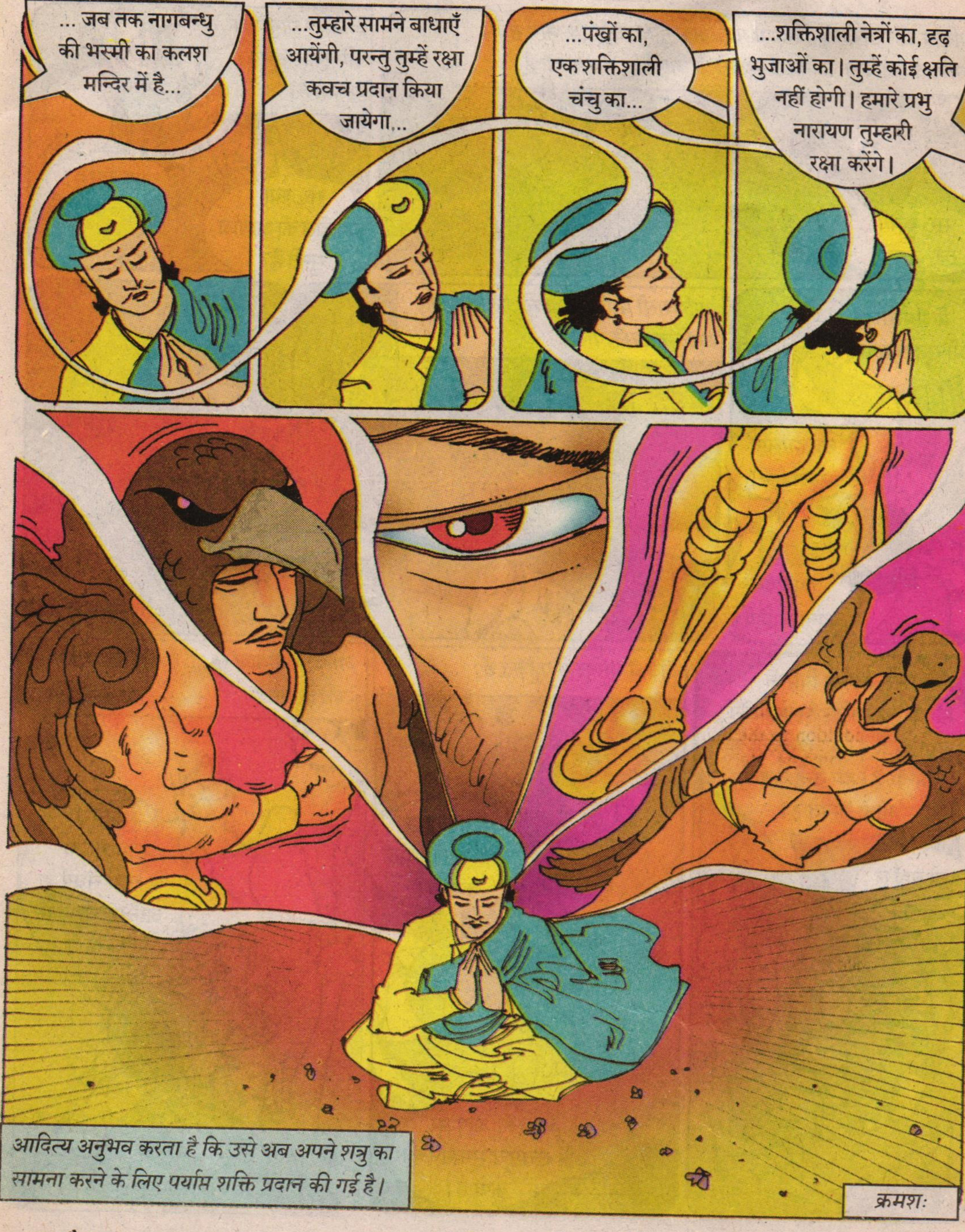
... जब तक नागबन्धु की भस्मी का कलश मन्दिर में है...
...तुम्हारे सामने बाधाएँ आयेंगी, परन्तु तुम्हें रक्षा कवच प्रदान किया जायेगा...
...पंखों का, एक शक्तिशाली चंचु का...
...शक्तिशाली नेत्रों का, दृढ भुजाओं का। तुम्हें कोई क्षति नहीं होगी। हमारे प्रभु नारायण तुम्हारी रक्षा करेंगे।
आदित्य अनुभव करता है कि उसे अब अपने शत्रु का सामना करने के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान की गई है।
क्रमशः

CALL IT A MAGAZINE PLUS!

Junior
CHANDAMAMA

MUCH MORE THAN A MAGAZINE FOR TINY-TOTS – TO KINDLE YOUR YOUNG ONE'S IMAGINATION

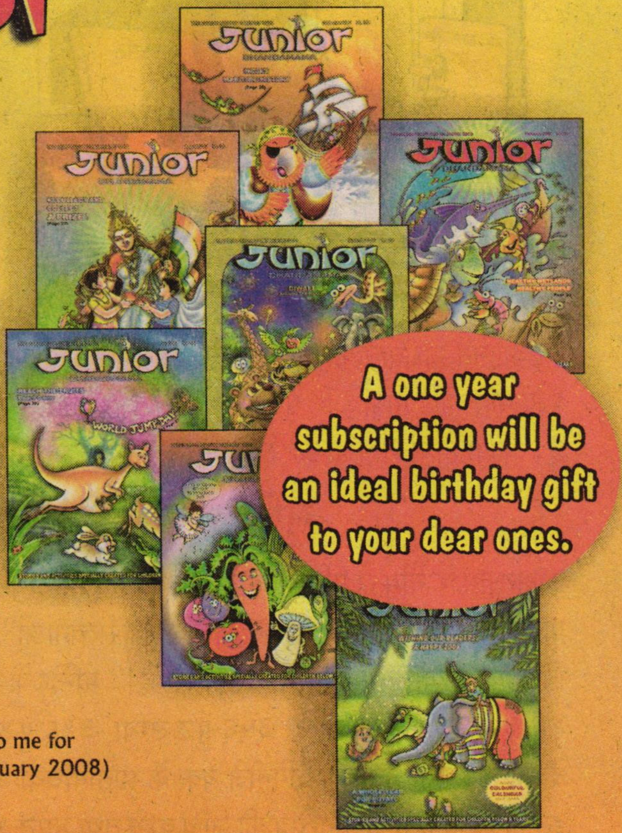

The young and the old react thus:

The info-park pages are very useful as they help us to know various facts about different topics. (January 2008)
- S. Athreya Uppili (8), Bangalore

The page for Parents and Teachers is a wonderful addition to the unique **Junior Chandamama.** Very often, I see my son poring over the pages when he runs to me for a meaning, explanation or clarification. (January 2008)
- Kamaljit Arora, Chandigarh

For your gift subscriptions, send the coupon below along with the remittances.

Name of child .... Age .... Class .... School ....

Home Address ....

.... Pin Code ....

Please enter 1 year subscription (12 issues delivered at door) for Rs. 170/-

DD / Cheque* No.......... on .... Bank for Rs. .... enclosed.

* Add Rs. 90/- on outstation cheques.

M.O. for Rs. 170 sent from .... Post Office Receipt No. .... Date ....

Cheque / DD / MO in favour of **Chandamama India Ltd.**
Mail to : **Chandamama India Ltd.**, JVL Plaza, 6th Floor, 626, Anna Salai, Teynampet
Chennai - 600 018. Note : Allow 4 weeks for the first copy to arrive by post.

Date **Signature**

समाचार झलक

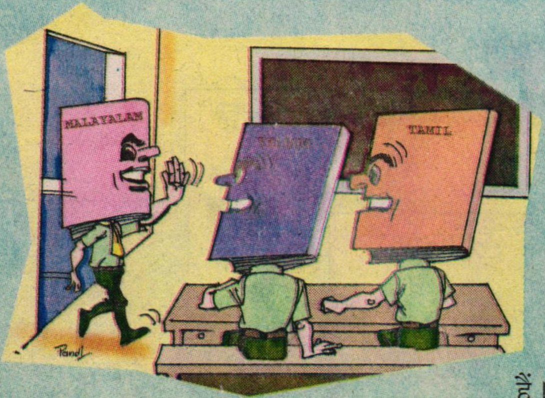

मलयालम भी

ज़ेरुसलम के हिब्रू विश्वविद्यालय ने, जो तमिल और तेलुगु की शिक्षा दे रहा था, अब भाषा पाठ्यक्रम में मलयालम की शिक्षा आरम्भ कर दी है। ऐसा इसलिए किया गया है कि पिछले कुछ वर्षों में कोचीन से लगभग २० हजार यहूदी इजरायल में जाकर बस गये हैं। भारतीय अध्ययन विभाग के अध्यक्ष मि.योहनन ग्रीशपोन का कहना है कि ''मलयालम दक्षिण भारत की महान संस्कृति को समझने के लिए महत्वपूर्ण भाषा है।'' मलयालम की शिक्षा लेनेवाले एक छात्र ने कहा कि यह ''एक मधुर भाषा है। आशा है, मैं शीघ्र ही इसे निर्बाध-रूप से बोल सकूँगा।''

मन्दिर का गिनीज में प्रवेश

अक्षरधाम के नाम से प्रसिद्ध नई दिल्ली का हिन्दू मन्दिर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में प्रविष्टि पानेवाला प्रथम हिन्दू धार्मिक स्थल है। ''धार्मिक संरचनाओं'' के अन्तर्गत प्रविष्टि के अनुसार ''अक्षरधाम विश्व का विशालतम हिन्दू मन्दिर परिसर है।'' मन्दिर के चारों ओर फैली शाद्वल भूमि का क्षेत्रफल ८६,३४२ वर्गफुट है। मन्दिर ३५६ फुट लम्बा, ३१६ फुट चौड़ा तथा १४१ फुट ऊँचा है। अभीष्ट देवता हैं स्वामी नारायण। गिनीज बुक के प्रतिनिधियों ने प्रविष्टि के लिए अनुशंसा करने के पूर्व इसकी वास्तुकला के मानचित्र की जाँच करने तथा भारत और विदेश में बने अन्य विशाल मन्दिरों के मानचित्रों के साथ इसकी तुलना करने में तीन महीने बिताये। प्रमाण पत्र १७ दिसम्बर को स्वामी नारायण संस्थान के अध्यक्ष परम पूजनीय प्रमुख स्वामी महाराज को प्रदान किया गया। स्वयं उन्हें भी ''अधिकतम मन्दिरों के प्रतिष्ठापक एक अकेले व्यक्ति'' के रूप में प्रविष्टि दी गई। उन्हें १९७१ और २००७ के मध्य पाँच महादेशों में ७१३ मन्दिरों के निर्माण का श्रेय प्राप्त है।

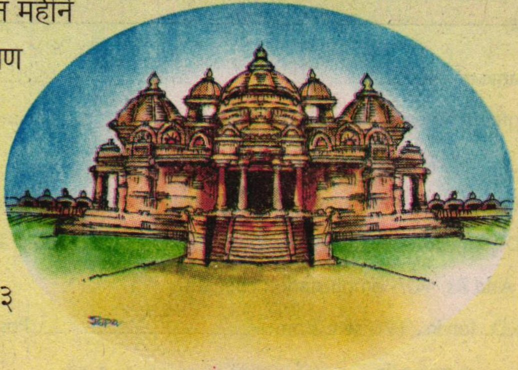

भारत के धरोहर-स्थल

छत्रपति शिवाजी टर्मिनस

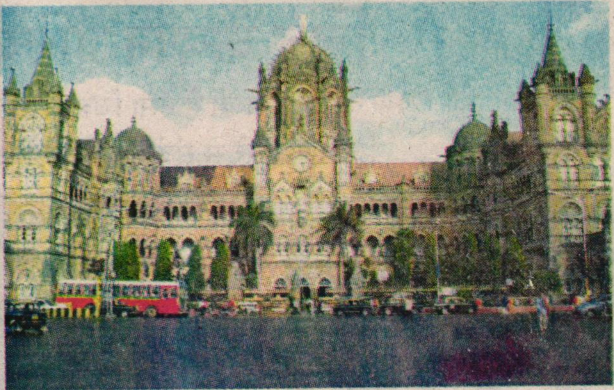

सम्भवतः दुनिया में कहीं भी अन्य स्थान में रेलवे स्टेशन को विश्व के धरोहर-स्थल के रूप में मान्यता नहीं मिली होगी, जैसा कि मुम्बई में छत्रपति शिवाजी टर्मिनस को मिली है। पहले जिसे विक्टोरिया टर्मिनस या इससे भी अधिक लोकप्रिय नाम वी.टी. अथवा सी.एस.टी से जानते थे, अब उसे पुरातनता के सिंहासन पर आरुढ़ कर दिया गया है। इसका निर्माण १८८८ में आरम्भ हुआ और इसे पूरा होने में दस साल लगे। स्टेशन की रूप रेखा एक वास्तुकार फ्रेडरिक विलियम स्टिवेन्स ने बनाई थी। इसके लिए कोई नमूना नहीं बनाया गया, जैसा कि आजकल प्रचलन है, किन्तु एलेक्स हरमन नाम के एक नक्शानवीस ने वाटर कलर में एक खांका बनाया। अनुबन्ध मिलने के बाद स्टिवेन्स ने दस महीनों तक यूरोप में यात्रा करके रेलवे स्टेशनों का विस्तार से अध्ययन किया। कहा जाता है कि वी.टी. लन्दन के सेंट पैंक्राज स्टेशन से कुछ मिलता-जुलता है। इसका नाम भारत की सम्राज्ञी रानी विक्टोरिया के ऊपर पड़ा। सन् १९९६ में महाराष्ट्र की सरकार द्वारा प्रसिद्ध मराठा शासक छत्रपति शिवाजी के नाम पर स्टेशन का नाम बदल दिया गया।

भवन के निर्माण में इटैलियन गोथिक तथा पारम्परिक भारतीय वास्तु का विलयन किया गया है। कुछ उत्कृष्ट विशेषताएं हैं काष्ठ उत्कीर्णन, टाइल्स, अलंकारपूर्ण लोहे तथा पीतल के रेलिंग्स तथा भव्य सीढ़ियों के कठघरे। कहते हैं कि इनके अधिकांश काम बम्बई स्कूल ऑफ आर्ट के छात्रों द्वारा किये गये हैं।

भारत के सबसे व्यस्त रेलवे स्टेशनों में से एक, सी.एस.टी. को २ जुलाई २००४ को विश्व धरोहर-स्थल का सम्मान प्रदान किया गया। यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति के कथनानुसार स्टेशन ''प्रभावों का एक महत्वपूर्ण विनिमय प्रदर्शित करता है।''

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी-१ (फरवरी २००८)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की कोई प्रविष्टि सर्वशुद्ध नहीं पाई गई। इसलिए कोई पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। पाठकों के हित में प्रश्नोत्तरी के उत्तर पृष्ठ ३१ में दिये जाते हैं। चन्दामामा की सभी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहिये।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

KALANIKETAN BALU

KALANIKETAN BALU

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
जे वि एल प्लाज़ा, छठी मंजिल, नं. ६२६(पु.नं.५०१), अण्णा सालई, तेनाम्पेट, चेन्नई - ६०० ०१८.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

श्वेता यादव
श्री विजय यादव,
४२८, फेथफुल गंज, कैण्ट,
कानपुर-२०८००४.

विजयी प्रविष्टि

बच्चे, ज़्यादा न खाओ।
बस, एक लड्डू और ले आओ॥

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तर:

१. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य; २. काँचीपुरम; ३. उपगुप्त;
४. विलियम जोन्स; ५. कुशान वंश।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501), Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

VALOUR & ADVENTURE
HUMOUR & MYSTERY
MORALS & HEROES

Enthralling stories of six decades come together in one incomparable collection

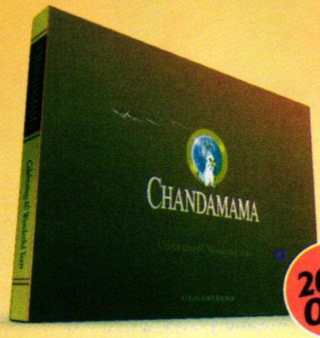

20% OFF!

The Chandamama
60th Anniversary Collectors Edition

Limited Copies!
HARDCOVER
MRP: Rs 449
You pay: Rs 360 only!
Includes shipping and handling

CHANDAMAMA
COLLECTORS EDITION

Take a trip down memory lane with the magazine's oldest editors, discover the beginnings of Chandamama and view some of the most memorable cover art across the decades.

Just fill in and mail the order form below to avail of a **20% DISCOUNT** on the 60th Anniversary Collectors Edition

I want a copy of the Chandamama Collectors Edition.

Name ....

Address ....

....

City .... State .... Pin ....

Telephone .... Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD for Rupees ....

Cheque/DD no .... Favouring **Chandamama India Ltd**

on .... bank. *(Send At-Par cheques or add Rs 60 for non-Chennai cheques)*

Please mail the order form to :

Chandamama India Limited, JVL Plaza, 6th Floor, 626 (Old 501) Anna Salai Teynampet, Chennai – 600 018.
Tel: (044) 24334455 Telefax: 24322103 Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

*This offer is valid until 31st May '08 only. Allow 3 weeks for delivery.

Chandamama (Hindi) April 2008 RNI No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08